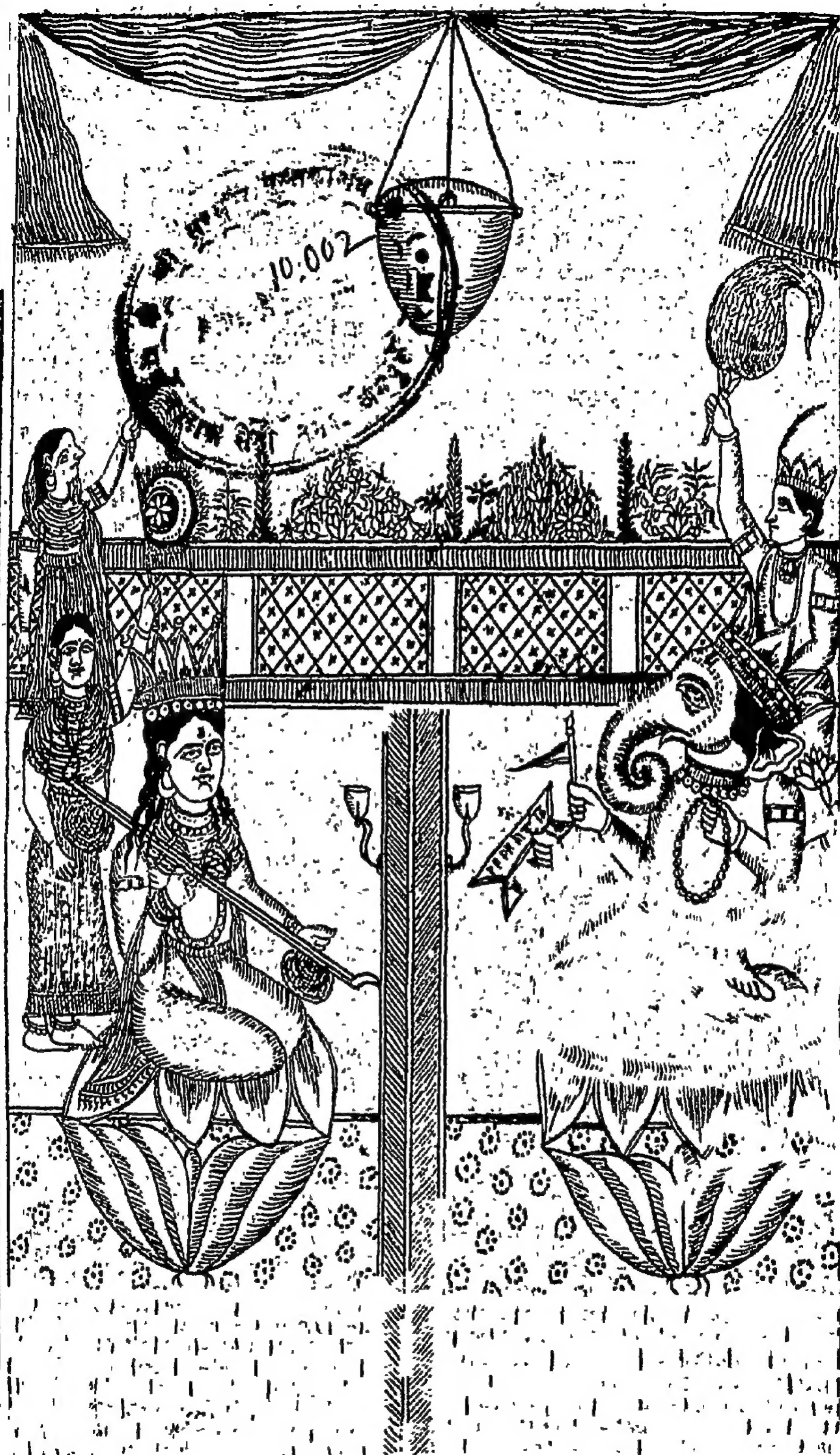
बाल कांड



बालकांड



श्लोक

वर्णाना मर्थ सङ्घ नां रसानां छन्द सामपि मङ्गला
नाञ्च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ॥ १॥ भवानी शङ्करौ
वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ । याभ्यां विना न पश्यन्ति सि
द्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरं ॥ २॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं
शङ्कर रूपिणं । यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्य
ते ॥ ३॥ सीता राम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ
वन्दे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ ॥४॥ उद्भव
स्थिति संहार कारिणीं क्लेशहारिणीं सर्व श्रेयस्करीं सीतां
नतोहं रामवल्लभां ॥ ५॥ यन्माया वशवर्त्ति विश्वमखिलं
ब्रह्मादि देवासुरा यत्सत्वाद मृषैव भाति सकलं रज्जौ य
थाहेर्भ्रमः । यत्पाद प्लव मेव भातिहि भवाम्भोधेस्ति तीर्षा
वतां वन्देहं तमशेष कारण परं रामाख्य मीशं हरिं ॥ ६॥
नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद्रामायणे निगदितं ।
क्वचिदन्यतोपि स्वान्तस्सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथाभाषा
निबन्ध मति मञ्जुल मातनोति ॥ ७॥

सोरठा

जेहि सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिवरवदन
करो अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि शुभ गुण सदन ॥
मूक होइ वाचाल पंगु चढहिं गिरिवर गहन
जासु कृपा सुदयाल द्रवौ सकल कलिमलदहन
नीलसरोरुह श्याम तरुण अरुण वारिज नयन
करहु सुमम उरधाम सदा क्षीर सागर शयन
कुन्द इन्दु सम देह उमा रमण करुणा अयन
जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मर्दन मयन ॥
वन्दौं गुरु पद कंज कृपासिंधु नररूप हरि ॥
महा मोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकर

चौपाई

वन्दौं गुरु पद पद्म परागा । सुरुचि सुवास सरस अनुरागा
अमिय मूरि मय चूरण चारू । समन सकल भव रुज परिवारू
सुकृत शंभु तन विमल विभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किये तिलक गुण गण वस करनी
श्री गुरु पद नख मणि गण ज्योती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती
दलन मोह तम हंस प्रकासू । बड़े भाग्य उर आवहिं जासू ॥
उघरहिं विमल विलोचन हिय के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के
सूझहिं राम चरित मणि माणिक । गुप्त प्रगट जहं जो जेहि खानिक

दोहा। यथा सुअंजन आंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ॥
कौतुक देखहिं शैल वन भूतल भूरि निधान ॥१॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिय दृग दोष विभंजन
तेहि करि विमल विवेक विलोचन । वरणौं राम चरित भव मोचन
वन्दौं प्रथम महीसुर चरणा । मोह जनित संशय सब हरणा

सभा मण्डली के सहित गुसाईं तुलसीदासजी, को श्रीरामचरित का वर्णन करना।



सुजन समाज सकल गुण खानी। करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी

साधु चरित शुभ सरस कपासू॥ निरस बिशद गुणमय फल जासू

जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बन्दनीय जेहि जग यश पावा

मुद मंगलमै संत समाजू॥ जो जग जंगम तीरथ राजू॥

राम भक्ति जहं सुरसरि धारा। सरस्वति ब्रह्म विचार प्रचारा॥

विधिनिषेधमय कलिमलहरणी । कर्मकथा रविनन्दन वरणी
हरिहर कथा विराजत वेनी ॥ सुनत सकल मुद मंगल देनी
वटविश्वास अचल निज धर्मा ॥ तीरथराज समाज सुकर्मा ॥
सवहिं सुलभ सब दिन सब देशा । सेवत सादर समन कलेशा
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दोहा । सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग २

मज्जन फल देखिय ततकाला । काक होहिं पिक वकउ मराला
सुनि आचर्य्य करै जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई
वाल्मीक नारद घटयोनी ॥ निज निज मुखन कही निज होनी
जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना
मति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहि जतन जहां जेहि पाई
सो जानव सतसंग प्रभाऊ ॥ सो कछु वेद न आन उपाऊ
विन सतसंग विवेक न होई । राम कृपा विन सुलभ न सोई
सतसंगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ॥ पारस परसि कुधातु सुहाई ।
विधिवस सुजन कुसंगति परहीं । फणि मणि सम निज गुण अनुसरहीं
विधि हरिहर कवि कोविद वानी । कहत साधु महिमा सकुचानी
सो मोहिं सन कहि जात न कैसे । शाक वनिक मणि गण गुण जैसे

दोहा । वन्दौं संत समान चित हित अनहित नहिं कोउ ॥
अंजलिगत शुभ सुमन जिमि सम सुगन्ध कर दोउ
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाव सनेहु ॥ ॥
बाल विनय सुनि करि कृपा रामचरण रति देहु ॥ ३॥

बहुरि वंदि खलगण सतभाये । जे विनु काज दाहिने वायें ।
परहित हानि लाभ जिन्ह केरे । उजरे हरष विषाद वसेरे

हरिहर यश राकेश राहु से॥ पर अकाज भट सहस बाहु से॥
जे पर दोष लखहिं सहसाखी। परहित घृत जिनके मन माखी॥
तेज कृशानु रोष महिषेशा॥ अघ अवगुण धन धनिक धनेशा॥
उदय केतु सम हित सबही के। कुम्भकरण सम सोवत नीके॥
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलगरहीं॥
वन्दौं खल जस शेष सरोषा। सहसवदन वरने पर दोषा॥
पुनि प्रणवौं पृथराज समाना। पर अघ सुनहिं सहस दस काना॥
बहुरि शक्र सम विनवौं तेही॥ संतत सुरानीक हित जेही॥
वचन वज्र जेहि सदा पियारे॥ सहस नयन पर दोष निहारे॥

दोहा॥ उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।
जानि पानि जुग जोरि करि विनय करौं सप्रीति॥

मैं आपन दिशि कीन्ह निहोरा। तिन निज ओर न लाउब भोरा॥
वायस पालिय अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ क कागा॥
वन्दौं संत असज्जन चरणा॥ दुखप्रद उभय बीच कछु वरणा॥
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं। मिलत एक दारुण दुख देहीं॥
उपजहिं एक संग जल माहीं। जलज जोंक जिमि गुण विलगाहीं॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू॥ जनक एक जग जलधि अगाधू॥
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुयश अपलोक विभूती॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू॥ गरल अनल कलिमल सरि व्याधू॥
गुण अवगुण जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥

दोहा॥ भले भलाई पै लहहिं लहहिं निचाई नीच॥ ॥
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच ६

खल अघ अगुण साधु गुण गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा॥
तेहि तें कछु गुण दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने॥
भलेउ पोच सब विधि उपजाये। गणि गुण दोष वेद विलगाये॥

कहहिं वेद इतिहास पुराणा। विधि प्रपञ्च गुण अवगुण साना॥
दुखसुख पापपुण्य दिनराती। साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊंच अरु नीचू। अमिय सजीवन माहुर मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जगदीशा। लच्छ अलच्छ रंक अवनीशा॥
काशी मगह सुरसरि कर्मनासा। मरु मालव महिदेव गवासा॥
स्वर्ग नर्क अनुराग विरागा। निगमागम गुण दोष विभागा॥

दोहा॥ जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व कीन्ह करतार॥
संत हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार ७

अस विवेक जब देइ विधाता। तब तजि दोष गुणहिं मन राता॥
काल स्वभाव कर्म बरिआई। भलेउ प्रकृति वस चुकइ भलाई॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष विमल यश देहीं॥
खलउ करइ भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाव अभंगू॥
लखि सुवेष जग वंचक जेऊ। वेष प्रताप पूजियत तेऊ॥
उघरहिं अन्त न होइ निवाहू। कालनेमि जिमि रावण राहू॥
किये कुवेष साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु वेद विदित सब काहू॥
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलै नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन शुक सारी। सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिय पुराण मंजु मसि सोई॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जगजीवन दाता॥

दोहा॥ ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सुयोग॥
होइ कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षण लोग ८
सम प्रकाश तम पाख दुहुं नाम भेद विधि कीन्ह॥
शशि पोषक सोषक समुझि जग यश अपयश दीन्ह ९
जड़ चेतन जग जीव जे सकल राममय जानि॥

वन्दौं सबके पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥ १०

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गन्धर्व ॥

वन्दौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ११

आकर चार लाख चौरासी ॥ जाति जीव नभ जल थल बासी

सियाराममय सब जग जानी करौं प्रणाम जोरि जुग पानी

जानि कृपा करि किंकर मोहू ॥ सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू

निज बल बुद्धि भरोस मोहिं नाहीं तातें विनय करौं सब पाहीं ॥

करन चहौं रघुपति गुण गाहा ॥ लघु मति मोरि चरित अवगाहा

सूझ न एको अंग उपाऊ ॥ मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥

मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी चहिय अमिय जग जुरै न छाछी

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ॥ सुनिहहिं बाल वचन मन लाई

ज्यों बालक कहि तोतरि बाता सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता

हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी जे परदूषण भूषण धारी ॥

निज कवित्त केहि लाग न नीका सरस होउ अथवा अति फीका

जे पर भणित सुनत हरषाहीं ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं

जग बहु नर सरिता सम भाई ॥ जे निज बाढ़ बढ़हिं जल पाई ॥

सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई देखि पूर विधु बाढ़हिं जोई ॥

दोहा भाग छोट अभिलाष बड़ करौं एक विश्वास ॥

पैहहिं सुख सुनि सुजन जन खल करिहैं उपहास १२

खल परिहास होइ हित मोरा काक कहहिं कल कंठ कठोरा

हंसहिं बक दादुर चातकही ॥ हँसहिं मलिन खल विमल बतकही

कवित रसिक न राम पद नेहू ॥ तिन्ह कहं सुखद हास रस एहू ॥

भाषा भणित मोरि मति भोरी ॥ हँसबे योग हँसे नहिं खोरी ॥

प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी तिनहिं कथा सुनि लागिहि फीकी

हरि हर पद रति मति न कुतरकी तिन्ह कहं मधुर कथा रघुवर की

रामभक्तिभूषित जिय जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कबि न होउं नहिं चतुर प्रवीना। सकल कला सब विद्या हीना
आखर अर्थ अलंकृत नाना। छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना
भावभेद रस भेद अपारा॥ कवित दोष गुण विविध प्रकारा
कवित विवेक एक नहिं मोरे॥ सत्य कहौं लिखि कागद कोरे

दोहा। भणित मोर सब गुण रहित विश्व विदित गुण एक
सो विचारि सुनिहहिं सुमति जिनके विमल विवेक १३

इहि महं रघुपति नाम उदारा॥ अति पावन पुराण श्रुति सारा
मंगल भवन अमंगल हारी॥ उमा सहित जेहि जपत पुरारी
भणित विचित्र सुकवि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ॥
विधुबदनी सब भांति संवारी॥ सोह न वसन बिना वर नारी॥
सब गुण रहित कुकवि कृत वानी। राम नाम यश अंकित जानी॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुणग्राही॥
यदपि कवित गुण एकौ नाहीं। राम प्रताप प्रगट इहि माहीं॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा॥ केहि न सुसंग बडप्पन पावा
धूमउ तजै सहज करुआई॥ अगर प्रसंग सुगन्ध बसाई
भणित भदेस वस्तु भल बरनी। राम कथा जग मंगल करनी

छन्द। मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की
गति कूर कविता सरित की ज्यों परम पावन पाथ की
प्रभु सुयश संगत भणित भल होइहै सुजन मन भावनी
भव अंग भूत मसान की सुमिरत सुहावन पावनी

दोहा। प्रिय लागहि अति सबहिं मम भणित राम यश संग
दारु विचार कि करइ कोउ वन्दिय मलय प्रसंग॥
श्याम सुरभि पय विशद अति गुणद करहिं पय पान
गिरा ग्राम सिय राम यश गावहिं सुनहिं सुजान १४

मणि माणिक मुक्ता छबि जैसी । अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी
नृप किरीट तरुणी तनु पाई । लहहिं सकल शोभा अधिकाई
तैसहि सुकवि कवित बुध कहहीं । उपजहिं अनत २ छवि लहहीं॥
भक्ति हेतु विधि भवन बिहाई । सुमिरत शारद आवति धाई॥
राम चरित सर विनु अन्हवाये॥ । सो श्रम जाइ न कोटि उपाये॥
कवि कोविद अस हृदय विचारी । गावहिं हरि गुण कलि मल हारी
कीन्हे प्राकृत जन गुण गाना॥ । शिर धुनि गिरा लागि पछिताना
हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाती शारद कहहिं सुजाना
जो वरषै वर वारि विचारू॥ । होहिं कवित मुक्ता मणि चारू

दोहा युक्ति वेधि पुनि पोहिये राम चरित वर ताग॥
पहिरै सज्जन विमल उर शोभा अति अनुराग ११

जे जनमे कलि काल कराला । करतब वायस वेष मराला
चलत कुपंथ वेद मग छांडे । कपट कलेवर कलि मल भांडे
वंचक भक्ति कहाय राम के । किङ्कर कंचन कोह काम के
तिन महँ प्रथम रेख जग मोरी । धिग धरम ध्वज धंधक धोरी
जो अपने अवगुण सब कहऊं । बाढे कथा पार नहिं लहहूं॥
ताते मैं अति अल्प बखाने॥ । थोरे महँ जानिहहिं सयाने॥
समुझि विविधि विधि विनती मोरी । कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी
एतेहु पर करिहहिं जे शंका । मोहिं ते अधिक ते जड़ मति रंका
कवि न होउं नहिं चतुर कहाऊं । मति अनुरूप राम गुण गाऊं
कहँ रघुपति के चरित अपारा॥ । कहँ मति मोरि निरत संसारा
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं॥ । कहहु तूल केहि लेखे माहीं॥
समुझत अमित राम प्रभुताई । करत कथा मन अति कदराई

दोहा शारद शेष महेश विधि आगम निगम पुराण
नेति नेति कहि जासु गुण करहिं निरंतर गान॥ १२

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई॥ तदपि कहे बिन रहा न कोई॥
तहां बेद अस कारण राखा। भजन प्रभाव भांति बहु भाषा॥
एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानन्द पर धामा॥
व्यापक विश्व रूप भगवाना। तेइ धरि देह चरित कृत नाना॥
सो केवल भक्तन हित लागी। परम कृपाल प्रणत अनुरागी॥
जेहि जन पर ममता अरु छोहू। तेहि करुणा कर कीन्ह न कोहू॥
गए बहोरि गरीब निवाजू॥ सरल सबल साहिब रघुराजू॥
बुध बरणहिं हरियश असजानी। करहिं पुनीत सुफल निज बानी॥
तेहि बल मैं रघुपति गुण गाथा। कहिहौं नाइ राम पद माथा॥
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई॥

दोहा॰ अति अपार जे सरित बर जो नृप सेतु कराहिं॥
चढि पिपीलिका परम लघु बिनु श्रम पारहिं जाहिं १९

एहि प्रकार बल मनहि दृढाई॥ करिहौं रघुपति कथा सुहाई॥
व्यास आदि कवि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि चरित बखाना॥
चरण कमल बन्दौं सब केरे। पुरवहु सकल मनोरथ मेरे॥
कलि के कविन करौं परणामा। जिन बरने रघुपति गुण ग्रामा॥
जे प्राकृत कवि परम सयाने॥ भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने॥
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे॥ प्रणवौं सबहि कपट छल त्यागे॥
होहु प्रसन्न देहु बरदानू॥ साधु समाज भणित सनमानू॥
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं॥ सो श्रम बादि बाल कवि करहीं॥
कीरति भणित भूति भल सोई॥ सुरसरि सम सब कहं हित होई॥
राम सुकीरति भणित भदेसा। असमंजस अस मोहि अंदेसा॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे॥ सियनि सुहावनि टाट पटोरे॥
करहु अनुग्रह अस जिय जानी। बिमल यशहि अनुहरहु सुबानी॥

दोहा॰ सरल कवित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान

सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ।।
सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर
करहु कृपा हरि यश कहों पुनि पुनि करउं निहोर ।।
कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ।।
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल १९

सोरठा
बन्दौं मुनि पद कंज रामायण जिन्ह निरमयो ।।
सखरस कोमल मंजु दोष रहित दूषण सहित
बन्दौं चारउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस ।।
जिन्हहिं न सपनेहु खेद बरनत रघुपति बिशद यश
बन्दौं बिधि पद रेनु भव सागर जिन कीन्ह यह ।।
संत सुधा शशि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी २

दोहा
बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरण बन्दि कहों कर जोरि
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि १०

पुनि बन्दौं शारद सुरसरिता
जुगल पुनीत मनोहर चरिता
मज्जन पान पाप हर एका ।।
कहत सुनत इक हर अबिबेका
गुरु पितु मातु महेश भवानी ।।
प्रणवों दीनबन्धु दिन दानी
सेवक स्वामि सखा सियपी के
हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के
कलि बिलोकि जगहित हर गिरिजा
साबर मंत्र जाल जिन सिरजा
अनमिल आखर अर्थ न जापू ।।
प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू ।।
सो उमेश मोपर अनुकूला
करी कथा मुद मंगल मूला
सुमिरि शिवा शिव पाय पसाऊ
बरणौं राम चरित चित चाऊ ।।
भणित मोरि शिव कृपा बिभाती
शशि समाज मिलि मनहु सुराती
जे यह कथा सनेह समेता ।।
कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं राम चरण अनुरागी
कलिमल रहित सुमंगल भागी

दोहा सपनेहु साचेहु मोहि पर जौं हरि गौरि पसाउ ।।

तौ फुर होउ जो कहहुं [illegible] ॥ २१ ॥

बन्दौं अवधिपुरी अति पावन	सरजू सरि कलि कलुषनसावन
प्रणावौं पुरनर नारि बहोरी ॥	ममताजिन पर प्रभुहिं न थोरी
सियनिन्दक अघ ओघ नसाये	लोकविशोक बनाय बसाये ॥
बन्दौं कौशल्या दिशि प्राची ॥	कीरतिजासु सकलदिशि मांची
प्रगटेउ जहं रघुपति शशि चारु	विश्व सुखद खलकमल तुसारु
दशरथ राउ सहित सब रानी ॥	सुकृत सुमंगल मूरति खानी
करौं प्रणाम कर्म मन बानी ॥	करहु कृपासुत सेवक जानी
जिनहिं विरंचि बड़ भयो विधाता	महिमा अवधि राम पितु माता

सोरठा बन्दौं अवधिभुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ॥
विछुरत दीनदयाल प्रिय तन त्रण इव परिहरेउ ॥

प्रणावौं परिजन सहित विदेहू ॥	जाहि राम पद गूढ़ सनेहू ॥
योग भोग महं राखेउ गोई ॥	राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥
प्रणावौं प्रथम भरत के चरना	जासु नियम व्रत जाइ न बरना
राम चरण पंकज मन जासू ॥	लुब्ध मधुप इव तजै न पासू ॥
बन्दौं लक्ष्मण पद जल जाता	सीतल सुभग भक्त सुखदाता
रघुपति कीरति विमल पताका	दंड समान भयो यश जाका
शेष सहस्र शीश जग कारन	जो अवतरेउ भूमि भय टारन
सदा सो सानुकूल रहु मोपर ॥	कृपासिंधु सौमित्र गुणाकर
रिपुसूदन पद कमल नमामी	शूर सुशील भरत अनुगामी
महावीर विनवौं हनुमाना	राम जासु यश आप बखाना

सोरठा बन्दौं पवनकुमार खल बन पावक ज्ञान घन ॥
जासु हृदय आगार बसहिं राम शर चाप धरि ४

कपि पति ऋच्छ निशाचर राजा	अंगदादि जे कीश समाजा
बन्दौं सब के चरण सुहाये ॥	अधम शरीर राम जिन पाये

रघुपति चरण उपासक जेते ॥ खग मृग सुर नर असुर समेते
वन्दौं पद सरोज सब केरे ॥ जे बिन काम राम के चेरे ॥
शुक सनकादि आदि मुनि नारद जे मुनिवर विज्ञान विशारद ॥
प्रणवौं सबहिं धरणि धरि शीशा करहु कृपा जन जानि मुनीशा ॥
जनकसुता जग जननि जानकी अति शय प्रिय करुणा निधान की
ताके जुग पद कमल मनाऊं जासु कृपा निर्मल मति पाऊं ॥
पुनि मन वचन कर्म रघुनायक चरण कमल वन्दौं सब लायक
राजिवनयन धरे धनु शायक ॥ भक्त विपति भंजन सुख दायक

दोहा गिरा अर्थ जल वीचि सम कहियें भिन्न न भिन्न ॥
वन्दौं सीता राम पद जिनहिं परम प्रिय खिन्न २२

वन्दौं राम नाम रघुवर को ॥ हेतु कृशानु भानु हिमकर को
विधि हरि हरमय वेद प्राण से अगुण अनूपम गुण निधान से
महामंत्र जो जपत महेशू ॥ काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ॥
महिमा जासु जानि गण राऊ ॥ प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जानि आदि कवि नाम प्रतापू ॥ भयेउ सिद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि शिव वानी जपि जे पीजे शिव संग भवानी
हरषे हेतु हेरि हर ही को किय भूषण तिय भूषण ती को
नाम प्रभाव जानि शिव नीके कालकूट फल दीन्ह अमी के ॥

सोरठा वरषा ऋतु रघुपति भगति तुलसी शालि सुदास
राम नाम वर वरण जुग सावन भादौं मास ॥ २३ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ वरण विलोचन जन जिय जोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू लोक लाहु पर लोक निवाहू
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके राम लषण सम प्रिय तुलसी के
वरणत वरण प्रीति विलगाती ब्रह्म जीव सम सहज संघाती
नर नारायण सरिस सुभ्राता जग पालक विशेष जन त्राता

भक्ति सुतिय कल करन विभूषण। जग हित हेतु विमल विधु पूषण॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ शेष सम धर वसुधा के॥
जन मन मंजु कंज मधुकर से॥ जीह यशोमति हरि हलधर से॥

दोहा एक छत्र इक मुकुटमणि सब वर्णन पर जोउ।
तुलसी रघुवर नाम के वर्ण विराजत दोउ २४

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दोउ ईश उपाधी॥ अकथ अनादि सुसामुझि साधी
को बड़ छोट कहत अपराधू॥ सुनि गुण भेद समुझि हैं साधू
देखिय रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना
रूप विशेष नाम विनु जाने। करतल गति न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप विनु देखे। आवत हृदय सनेह विशेषे॥
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परत बखानी
अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी

दोहा राम नाम मणि दीप धरि जीह देहरी द्वार॥
तुलसी भीतर बाहिरो जो चाहसि उजियार २५

नाम जीह जपि जागहिं योगी। विरति विरंचि प्रपंच वियोगी॥
ब्रह्म सुखहिं अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा॥
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ॥ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लय लाये। होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये
जपहिं नाम जन आरत भारी॥ मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी
राम भक्त जग चारि प्रकारा॥ सुकृती चारिउ अनघ उदारा॥
चहुँ चतुर नकहुँ नाम अधारा। ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा॥
चहुँ युग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहिं आन उपाऊ

दोहा सकल कामना हीन जे राम भक्ति रस लीन॥
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिनहिं किये मन मीन २६

अगुण सगुण दोउ ब्रह्म स्वरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा॥
मोरे मत बड़ नाम दुहू ते॥ किये जेहि युग निज वस निज बूते॥
प्रौढ़ सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की॥
एक दारुगत देखिय एकू॥ पावक युग सम ब्रह्म विवेकू॥
उभय अगम युग सुगम नाम ते। कहउँ नाम बड़ ब्रह्म राम ते॥
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। सत चेतन घन आनन्द राशी॥
अस प्रभु हृदय अछत अविकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी॥
नाम निरूपण नाम जतन ते। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन ते॥

दोहा। निर्गुण ते इहि भांति बड़ नाम प्रभाव अपार॥
कहउँ नाम बड़ राम ते निज विचार अनुसार॥२७

रामभक्त हित नर तनु धारी। सहि सकट किय साधु सुखारी॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा। भक्त होहिं मुद मंगल वासा॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
ऋषि हित राम सुकेतसुता की। सहित सेन सुत कीन्ह विवाकी॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नाम जिमि रवि निशि नासा॥
भंजेउ राम आपु भव चापू। भवभय भंजन नाम प्रतापू॥
दंडक वन प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किय पावन॥
निशिचर निकर दलेउ रघुनन्दन। नाम सकल कलि कलुष निकंदन॥

दोहा। शबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ॥
नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुण गाथ॥२८

राम सुकंठ विभीषण दोऊ। राखे शरण जान सब कोऊ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे। लोक वेद वर विरद विराजे॥
राम भालु कपि कटक बटोरा। सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु विचार सुजन मन माहीं॥
राम सकुल रण रावण मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा॥

राजाराम अवध रजधानी ॥ गावत गुन सुर मुनिवर वानी
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती विनु श्रम प्रवल मोह दल जीती
फिरत सनेह मगन मन अपने नाम प्रसाद सोच नहिं सपने

दोहा ब्रह्म राम तें नाम वड वरदायक वरदानि ॥ ॥
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जिय जानि २९

नाम प्रसाद सम्भु अविनासी साज अमंगल मंगल रासी
सुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी
नारद जानेउ नाम प्रतापू ॥ जग प्रिय हरि हर हरि प्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ॥ भक्त सिरोमनि भे प्रहलादू
ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नामू पायेउ अचल अनूपम ठामू ॥
सुमिरि पवन सुत पावन नामू अपने वस करि राखेउ रामू
अपत अजामिल गज गनिकाऊ भये मुक्त हरि नाम प्रभाऊ ॥
कहउँ कहाँ लगि नाम बडाई राम न सकहिं नाम गुन गाई

दोहा राम नाम को कल्प तरु कलि कल्यान निवास
जो सुमिरत भये भाग तें तुलसी तुलसी दास ३०

चहुँ युग तीनि काल तिहुँ लोका भये नाम जपि जीव विसोका
वेद पुरान सन्त मत एहू ॥ सकल सुकृत फल राम सनेहू
ध्यान प्रथम युग मख युग दूजे द्वापर परितोषत प्रभु पूजे
कलि केवल मल मूल मलीना पाप पयोनिधि जन मन मीना
नाम काम तरु काल कराला सुमिरत समन सकल जंजाला
राम नाम कलि अभिमत दाता हित परलोक लोक पितु माता
नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू राम नाम अवलंवन एकू ॥
कालनेमि कलि कपट निधानू नाम सुमति समरथ हनुमानू

दोहा राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल
जापक जन प्रहलाद जिमि पालहि दलि सुर साल ३१

भाय कुभाय अनख आलसहू । नाम जपत मंगल दिसि दसहू ॥
सुमिरि सुनाम राम गुण गाथा । करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारहि सो सब भाँती । जासु कृपा नहिं कृपा अघाती ॥
राम सु स्वामि कुसेवक मोसे । निज दिसि देखि दयानिधि पोसे ॥
लोकहु वेद सुसाहेब रीती ॥ विनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर । पंडित मूढ मलीन उजागर ॥
सुकवि कुकवि निज मति अनुहारी । न्टपहि सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुशील न्टपाला । ईश अंश भव परम कृपाला ॥
सुनि सनमानहि सबहि सुबानी । भनित भक्ति मति गति पहिचानी ॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जानि शिरोमनि कोशलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोते ॥ को जग मंद मलिन मति मोते ॥

दोहा सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहि राम कृपाल ।
उपल किए जलजान जेहि सचिव सुमति कपि भाल ॥ २२
होहु कहावत सब कहत राम सहत उपहास ॥
साहेब सीतानाथ से सेवक तुलसीदास ॥ ॥ २३

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी । सुनि अघ नरकहु नाक सकोरी ॥
समुझि सहमि मोहि अपडर अपने । सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने ॥
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही । भक्ति मोरि मति स्वामि सराही ॥
कहत नसाइ होइ अति नीकी । रीझत राम जानि जन जी की ॥
रहत न प्रभु चित चूक किये की । करत सुरति सौ बार हिये की ॥
जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली । फिर सुकंठ सोई कीन्ह कुचाली ॥
सोइ करतूति बिभीषण केरी । सपनेहु सो न राम हिय हेरी ॥
ते भरतहि भेटत सनमाने । राजसभा रघुबीर बखाने ॥

दोहा प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किय आपु समान ॥
तुलसी कहूं न राम से साहेब शील निधान ॥ ॥ २४

रामानकाइ रावरहे सब ही को नीक ॥
जौ यह सांचो है सदा तौ नी को तुलसीक ३५
एहि विधि निज गुण दोष कहि सबहि बहुरि शिर नाइ
बरणौं रघुबर विशद यश सुनि कलि कलुष नसाइ ३६

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनि बरहि सुनाई
कहिहौं सोइ संवाद बखानी। सुनहु सकल सज्जन सुखमानी
शम्भु कीन्ह यहि चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा
सोइ शिव काकभुसुण्डहिं दीन्हा। रामभक्ति अधिकारी चीन्हा
तेहि सन याज्ञवल्क्य पुनि पावा। तिन पुनि भरद्वाज प्रति गावा
ते श्रोता वक्ता सम शीला ॥ समदरशी जानहिं हरिलीला
जानहिं तीन काल निज ज्ञाना। करतल गत आमलक समाना
औरो जे हरि भक्त सुजाना ॥ कहहिं सुनहिं समुझहिं विधि नाना

दो० मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सु सूकर खेत ॥
समुझि परी नहिं बालपन तब अति रहेउँ अचेत ३७

श्रोता वक्ता ज्ञाननिधि कथा राम की गूढ ॥
किमि समुझै यहि जीव जड कलिमल ग्रसित विमूढ ३८

तदपि कही गुरु बारहिं बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा
भाषाबन्ध करब मैं सोई ॥ मेरे मन प्रबोध जेहि होई
जस कछु बुधि विवेक बल मोरे। तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे ॥
निज संदेह मोह भ्रम हरणी। करौं कथा भवसरिता तरणी
बुध विश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलि कलुष विभंजनि
रामकथा कलि पन्नग भरणी। पुनि विवेक पावक कहँ अरणी
राम कथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवन मूर सुहाई
सोइ वसुधातल सुधा तरंगिनि। भवभंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि
असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु विबुध कुल हित गिरिनंदिनि
संत समाज पयोधि रमा सी। विश्वभार धर अचल क्षमा सी
यमगण मुख मसि जग यमुना सी। जीवन मुक्ति हेतु जनु काशी

रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसिदास हित हिय हुलसी सी॥
सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी॥
सदगुण सुरगण अम्ब अदिति सी। रघुवर भक्ति प्रेम परिमिति सी॥

दोहा— राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह वन सिय रघुवीर विहारु॥ ३९॥

राम चरित चिन्तामणि चारू। सन्त सुमति तिय सुभग सिंगारू॥
जग मंगल गुण ग्राम राम के। दानि मुक्ति धन धर्म्म धाम के॥
सदगुरु ज्ञान विराग योग के। विबुध वैद्य भव भीम रोग के॥
जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल व्रत धर्म नेम के॥
शमन पाप संताप शोक के। प्रिय पालक परलोक लोक के॥
सचिव सुभट भूपति विचार के। कुंभज लोभ उदधि अपार के॥
काम कोह कलि मल करिगण के। केहरि सावक जन मन वन के॥
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद्द दवारि के॥
मन्त्र महा मणि विषय व्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के॥
हरन मोह तम दिनकर कर से। सेवक शालि पाल जलधर से॥
अभिमत दानि देव तरु वर से। सेवत सुलभ सुखद हरि हर से॥
सुकवि शरद नभ मन उडगण से। रामभक्त जन जीवन धन से॥
सकल सुकृत फल भूरि भोग से। जग हित निरुपधि साधु लोग से॥
सेवक मन मानस मराल से। पावन गंग तरंग माल से॥

दोहा— कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दंभ पाषण्ड।
दहन राम गुण ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचण्ड॥ ४०॥
राम चरित राकेश कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित विशेष बड़ लाहु॥ ४१॥

कीन्ह प्रश्न जेहि भांति भवानी। जेहि विधि शंकर कहा बखानी॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई। कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई॥

जिन यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आश्चर्य करै सुनि सोई
कथा अलौकिक सुनहिं जो ज्ञानी । नहिं आश्चर्य्य करहिं अस जानी
रामकथा की मिति जग नाहीं । अस प्रतीति तिन के मन माहीं
नाना भांति राम अवतारा । रामायण शत कोटि अपारा
कल्पभेद हरि चरित सुहाये । भांति अनेक मुनीशन गाये
करिय न संशय अस उर आनी । सुनिय कथा सादर रति मानी

दोहा राम अनन्त अनन्त गुण अमित कथा विस्तार
सुनि आश्चर्य न मानिहहिं जिनके विमल विचार ४२

एहि विधि सब संशय करि दूरी । सिर धरि गुरु पद पंकज धूरी
पुनि सबही विनवौं कर जोरी । करत कथा जेहि लागु न खोरी
सादर शिवहिं नाइ अब माथा । वरनौं विशद राम गुण गाथा
सम्वत सोरह सै इकतीसा । करौं कथा हरि पद धरि सीसा
नौमी भौमवार मधु मासा । अवध पुरी यहि चरित प्रकासा
जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावहिं । तीरथ सकल तहां चलि आवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा । आय करहिं रघुनायक सेवा
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं राम कल कीरति गाना

दोहा मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु पावन सरयू नीर ।।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुन्दर श्याम शरीर ४३

दरश परश मज्जन अरु पाना । हरै पाप कहि वेद पुराना ।।
नदी पुनीत अमित महिमा अति । कहि न सकै शारदा विमल मति
रामधाम दा पुरी सुहावनि ।। लोक समस्त विदित जग पावनि
चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजे तन नहिं संसारा
सब विधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धि प्रद मंगल खानी
विमल कथा कर कीन्ह अरम्भा । सुनत नसाहिं काम मद दम्भा
राम चरित मानस यह नामा । सुनत श्रवन पाइय विश्रामा

मन करि विषय अनल वन जरही। होइ सुखी जो इहि सर परही॥
राम चरित मानस मन भावन। विरचेउ शंभु सुहावन पावन॥
त्रिविधि दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कलि कलुष नसावन॥
रचि महेश निज मानस राखा। पाइ सुसमय शिवा सन भाषा॥
ताते राम चरित मानस वर। धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुजन सुनहु मन लाई॥

दोहा। जस मानस जेहि विधि भयो जग प्रचार जेहि हेतु।
अब सोइ कहौं प्रसंग अब सुमिरि उमा वृष केतु ३४

शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी। राम चरित मानस कवि तुलसी॥
करइ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचेत सुनि लेहु सुधारी॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। वेद पुराण उदधि घन साधू॥
वरषहिं राम सुयश वर वारी॥ मधुर मनोहर मंगल कारी॥
लीला सगुण जो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करै मल हानी॥
प्रेम भक्ति जो वरणि न जाई। सोइ मधुरता सुशीतलताई॥
सो जल सुकृत शालि हित होई। राम भक्त जन जीवन सोई॥
मेधा महि गत सो जल पावन। सिमिटि श्रवण मग चलेउ सुहावन॥
भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद शीत रुचि चारु चिराना॥

दोहा। सुठि सुंदर संवाद वर विरचे बुद्धि विचारि।
तेइ यहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ३५

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना। ज्ञान नयन निरखत मन माना॥
रघुपति महिमा अगुण अबाधा। वरनब सोइ वर वारि अगाधा॥
राम सीय यश सलिल सुधासम। उपमा वीचि विलास मनोरम॥
पुरइन सघन चारु चौपाई। युक्ति मंजु मणि सीप सोहाई॥
छन्द सोरठा सुंदर दोहा॥ सोइ बहु रंग कमल कुल सोहा॥
अर्थ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा॥

सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला । ज्ञानविराग विचारमराला ॥
धुनि अवरेव कवित गुणजाती । मीन मनोहर ते बहु भांती
अर्थ धर्म कामादिक चारी । कहव ज्ञान विज्ञान विचारी
नवरस जप तप योग विरागा । ते सब जलचर चारु तडागा
सुकृती साधु नाम गुण गाना । ते विचित्र जलविहंग समाना
संतसभा चहुंदिशि अंवराई । श्रद्धा ऋतु वसंत सम गाई
भक्ति निरूपण विविध विधाना । क्षमा दया द्रुम लता विताना
संयम नियम फूल फल ज्ञाना । हरिपद रति रस वेद वखाना
औरो कथा अनेक प्रसंगा । तेइ शुक पिक बहु वरण विहंगा ॥

दोहा पुलक वाटिका वाग वन सुख सुविहंग विहार
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ४६

जे गावहिं यह चरित संभारे । तेइ एहि ताल चतुर रखवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी । तेइ सुरवर मानस अधिकारी
अति खल जे विषयी वक कागा । एहि सरनि कट न जाहिं अभागा
संवुक भेक सिवार समाना । इहां न विषय कथा रस नाना
तेहि कारण आवत हिय हारे । कामी काक वलाक विचारे
आवत एहि सर अति कठिनाई । रामकृपा विनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन के वचन व्याघ्र हरि व्याला
गृह कारज नाना जंजाला । तेइ अति दुर्गम शैल विशाला
वन बहु विषम मोह मद माना । नदी कुतर्क भयंकर नाना

दोहा जे श्रद्धा संवल रहित नहिं संतन कर साथ ॥ ४७
तिन कहँ मानस अगम अति जिनहिं न प्रिय रघुनाथ

जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई । जातहिं नींद जुडाई होई
जडता जाड विषम उर लागा । गयहु न मज्जन पाव अभागा
करि न जाइ सर मज्जन पाना । फिरि आवै समेत अभिमाना

जो वहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा॥
सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही। राम कृपा करि चितवहिं जेही॥
सोइ सादर सर मज्जन करही। महा घोर त्रय ताप न जरही॥
ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन के राम चरन भल भाऊ॥
जो नहाइ चह एहि सर भाई। सो सतसंग करौ मन लाई॥
अस मानस मानस चख चाही। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही॥
बढ्यो हृदय आनन्द उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू॥
चली सुभग कविता सरिता सो। राम विमल यश जल भरिता सो॥
सरयू नाम सुमंगल मूला। लोक वेद मत मंजुल कूला॥
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि॥

दोहा— श्रोता त्रिविधि समाज पुर ग्राम नगर दुहु कूल।
संत सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल॥ ४०॥

राम भक्ति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरयु सुहाई॥
सानुज राम समर यश पावन। मिलेउ महानद सोन सुहावन॥
युग विच भक्ति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुविरति विचारा॥
त्रिविधि ताप त्रासक त्रिमुहानी। राम स्वरूप सिंधु समुहानी॥
मानस मूल मिली सुरसरिही। सुनत सुजन मन पावन करिही॥
विच विच कथा विचित्र विभागा। जनु सरि तीर तीर वन बागा॥
उमा महेश विवाह बराती। ते जलचर अगणित बहु भांती॥
रघुवर जन्म अनन्द बधाई। भँवर तरंग मनोहरताई॥

दोहा— बाल चरित चहु बंधु के बनज विपुल बहु रंग।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि विहंग॥ ४१॥

सीय स्वयम्बर कथा सुहाई। सरित सुहावनि सो छवि छाई॥
नदी नाव पटु प्रश्न अनेका। केवट कुशल उतर सविवेका॥
सुनि अनुकथन परस्पर होई। पथिक समाज सोह सरि सोई॥

घोरधार भृगुनाथ रिसानी ॥ घाटसुबन्ध राम बर बानी ॥
सानुज रामबिबाह उछाहू ॥ सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ॥ ते सुकृती जन मुदित नहाहीं ॥
राम तिलक हित मंगल साजा ॥ पर्व योग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति केकई केरी ॥ परी जासु फल बिपति घनेरी ॥

दोहा ॥ समन अमित उत्पात सब भरत चरित जपयाग ।
कलि अघ खल अवगुण कथन ते जलमल बक काग ॥ ४० ॥

कीरति सरित छहूं ऋतु रूरी ॥ समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम हिमशैल सुता शिवब्याहू ॥ शिशिर सुखद प्रभु जन्म उछाहू ॥
बरनब रामबिबाह समाजू ॥ सो मुद मंगलमय ऋतुराजू ॥
ग्रीषम दुसह राम बनगवनू ॥ पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
वर्षा घोर निशाचर रारी ॥ सुरकुल शालि सुमंगलकारी ॥
राम राज सुख बिनय बड़ाई ॥ बिशद सुखद सोइ शरद सुहाई ॥
सती शिरोमणि सिय गुणगाथा ॥ सोइ गुण अमल अनूपम पाथा ॥
भरत सुभाव सुशीतलताई ॥ सदा एकरस बरणि न जाई ॥

दोहा ॥ अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास ।
भायप भलि चहुं बन्धु की जल माधुरी सुबास ॥ ४१ ॥

आरति बिनय दीनता मोरी ॥ लघुता ललित सुबारि न थोरी ॥
अद्भुत सलिल सुनत गुणकारी ॥ आस पियास मनोमल हारी ॥
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी ॥ हरत सकल कलि कलुष गलानी ॥
भव श्रम शोषक तोषक तोषा ॥ शमन दुरित दुख दारिद दोषा ॥
काम क्रोध मद मोह नसावन ॥ बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन ॥
सादर मज्जन पान किये तें ॥ मिटहिं पाप परिताप हिये तें ॥
जिन यह बारि न मानस धोये ॥ ते कायर कलिकाल बिगोये ॥
तृषित निरखि रबिकर भवबारी ॥ फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी ॥

दोहा मति अनुहारि सुवारिवर गुणगणगनिमन अन्हवाइ
सुमिरि भवानी शंकरहि कहि कवि कथा सुहाइ ५२
भरद्वाज जिमि प्रश्न किय याज्ञवल्क्य मुनि पाये
प्रथम मुख्य संवाद सोइ कहिहों हेतु बुझाय॥ ५३
अव रघुपति पद पंकरुह हिय धरि पाय प्रसाद।।
कहौं युगल मुनि वर्य कर मिलन सुभग संवाद।। ५४

भरद्वाज मुनि वसहिं प्रयागा	तिनहिं राम पद अति अनुरागा
तापस सम दम दया निधाना	परमारथ पथ परम सुजाना
माघ मकरगत रवि जव होई	तीरथ पतिहि आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी	सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी
पूजहिं माधव पद जलजाता	परसि अक्षयवट हर्षित गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन	परम रम्य मुनि वर मन भावन
तहां होय मुनि ऋषय समाजा	जाहिं जे मज्जन तीरथ राजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा	कहहिं परस्पर हरि गुण गाहा

दोहा ब्रह्म निरूपण धर्म विधि वरनहिं तत्त्व विभाग
कहहिं भक्ति भगवन्त की संयुत ज्ञान विराग ५५

एहि प्रकार भरि मकर नहाहीं	पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं
प्रति संवत अस होइ अनन्दा	मकर मज्जि गवनहिं मुनि वृन्दा
एक वार भरि मकर नहाये॥	सव मुनीश आश्रमनि सिधाये
याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी	भरद्वाज राखेउ पद टेकी ।।
सादर चरण सरोज पखारे	अति पुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुयश वखानी	वोले अति पुनीत मृदु वानी
नाथ एक संशय वड़ मोरे॥	करतल वेद तत्त्व सव तोरे
कहत सो मोहि लागत भय लाजा	जो न कहौं वड़ होइ अकाजा

दोहा सन्त कहहिं अस नीति प्रभु श्रुति पुराण मुनि गाव

होइ न विमल विवेक उर गुरु सों किये दुराव

अस विचार प्रगटेउ निज मोहू	हरहु नाथ करि जन पर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा	संत पुराण उपनिषद गावा
सतत जपत शंभु अविनासी	शिव भगवान ज्ञान गुण रासी
आकर चारि जीव जग अहहीं	काशी मरत परम पद लहहीं
सोपि राम महिमा मुनि राया	शिव उपदेश करत करि दाया
राम कौन प्रभु पूछौं तोही	कहो बुझाइ कृपानिधि मोही
एक राम अवधेश कुमारा	तिन कर चरित विदित संसारा
नारि विरह दुख लहेउ अपारा	भयउ रोष रण रावण मारा

दोहा प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि
सत्य धाम सर्वज्ञ तुम कहहु विवेक विचारि ॥ ५७

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी	कहहु सो कथा नाथ विस्तारी
याज्ञवल्क्य बोले मुसकाई	तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई
राम भक्त तुम मन क्रम वानी	चतुराई तुम्हार मैं जानी ॥
चाहहु सुनै राम गुण गूढा	कीन्हेउ प्रश्न मनहु अति मूढा
तात सुनहु सादर मन लाई ॥	कहउं राम की कथा सुहाई
महा मोह महिषेश विशाला	राम कथा कालिका कराला
राम कथा शशि किरण समाना	संत चकोर करहिं तेहि पाना
ऐसेइ संशय कीन्ह भवानी	महादेव तब कहा बखानी

दोहा कहौं सो मति अनुहार अब उमा शंभु संवाद ॥
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनि मुनि मिटहि विषाद ५८

एक बार त्रेता युग माहीं ॥	शंभु गये कुंभज ऋषि पाहीं
संग सती जगजननि भवानी	पूज ऋषि अखिलेश्वर जानी
राम कथा मुनि वर्य बखानी	सुनी महेश परम सुख मानी
ऋषि पूछी हरि भक्ति सुहाई	कही शंभु अधिकारी पाई ॥

कहत सुनत रघुपति गुणगाथा। कछु दिन तहां रहे गिरिनाथा।
मुनि सन विदा मांगि त्रिपुरारी। चले भवन संग दक्ष कुमारी।
तेहि अवसर भंजन महिभारा। हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा।
पिता वचन तजि राज उदासी। दंडक वन विचरत अविनाशी।

दोहा। हृदय विचारत जात हर केहि विधि दरशन होइ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गये जान सब कोइ ५८

सोरठा। शंकर उर अति क्षोभ सती न जानहिं मर्म सोइ।
तुलसी दरशन लोभ मन डर लोचन लालची ५

रावण मरण मनुज कर याचा। प्रभु विधि वचन कीन्ह चह साचा।
जो नहिं जाउं रहै पछितावा। करत विचार न बनत बनावा।
इहि विधि भये सोचवस ईशा। ताही समय जाइ दशशीशा।
लीन्ह नीच मारीचहि संगा। भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा।
करि छल मूढ़ हरी वैदेही। प्रभु प्रताप तस विदित न तेही।
मृग वधि बंधु सहित हरि आये। आश्रम देखि नयन जल छाये।
विरह विकल नर इव रघुराई। खोजत विपिन फिरत दोउ भाई।
कबहुं योग वियोग न जाके। देखा प्रगट विरह दुख ताके॥

दोहा। अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान।
जे मतिमन्द विमोह वश हृदय धरहिं कछु आन ६०

शंभु समय तेहि रामहिं देखा। उपजा हिय अति हर्ष विशेषा।
भरि लोचन छविसिंधु निहारी। कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी।
जय सच्चिदानन्द जग पावन॥ अस कहि चलेउ मनोज नसावन।
चले जात शिव सती समेता। पुनि पुनि पुलकित कृपानिकेता।
सती सो दशा शंभु की देखी॥ उर उपजा सन्देह विशेषी॥
शंकर जगत वंद्य जगदीशा। सुर नर मुनि सब नावहिं शीशा।
तिन नृपसुतहिं कीन्ह परणामा। कहि सच्चिदानन्द परधामा॥

भये मगन छवि तासु विलोकी। अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी॥

दोहा। ब्रह्म जो व्यापक विरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेद॥ ५०

विस्नु जो सुर हित नर तनु धारी। सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी॥
खोजत सो कि अज्ञ इव नारी। ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी॥
शंभुगिरा पुनि मृषा न होई। शिव सर्वज्ञ जान सब कोई॥
अस संशय मन भयउ अपारा। होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा॥
यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरयामी सब जानी॥
सुनहु सती तव नारि सुभाऊ। संशय अस न धरिय उर काऊ॥
जासु कथा कुंभज ऋषि गाई। भक्ति जासु मैं मुनिहि सुनाई॥
सोइ मम इष्टदेव रघुवीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा॥

छंद। मुनि धीर योगी सिद्ध संतत विमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुराण आगम जासु कीरति गावहीं॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवननिकाय पति मायाधनी।
अवतरेउ अपने भक्त हित निज तंत्र नित रघुकुलमनी॥

सोरठा। लाग न उर उपदेश यदपि कहेउ शिव वार बहु।
बोले विहँसि महेश हरि माया बल जानि जिय॥ ५१

जो तुम्हरे मन अति संदेहू। तो किन जाइ परीक्षा लेहू॥
तब लगि बैठ रहौं वटछाहीं। जब लगि तुम ऐहहु मोहि पाहीं॥
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी। करहु सो यतन विवेक विचारी॥
चली सती शिव आयसु पाई। करहिं विचार करौं का भाई॥
इहाँ शंभु अस मन अनुमाना। दक्षसुता कहँ नहिं कल्याना॥
मोरेहु कहे न संशय जाई। विधि विपरीत भलाई नाहीं॥
होइहि सो जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावहि साखा॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा। गई सती जहँ प्रभु सुखधामा॥

दोहा। पुनि पुनि हृदय विचार करि धरि सीता कर रूप
आगे होइ चलपंथ तेहि जाहि आवत नरभूप ५२

लछिमन दीख उमाकृत बेषा। चकित भए भ्रम हृदय विशेषा॥
कहि न सकत कछु अति गम्भीरा। प्रभु प्रभाव जानत मति धीरा॥
सती कपट जानेउ सुरस्वामी। सबदरसी सब अंतरजामी॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना॥ सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना॥
सती कीन्ह चह तहहुं दुराऊ। देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ॥
निज माया बल हृदय बखानी। बोले बिहँसि राम मृदु बानी॥
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रणामू। पिता समेत लीन्ह निज नामू॥
कहेउ बहोरि कहां वृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू॥

दोहा। राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच
सती सभीत महेश पहं चलीं हृदय बड़ सोच ५३

मैं शंकर का कहा न माना॥ निज अज्ञान राम पर आना॥
जाइ उतर अब देहौं काहा॥ उर उपजा अति दारुण दाहा॥
जाना राम सती दुख पावा। निज प्रभाव कछु प्रगटि जनावा॥
सती दीख कौतुक मग जाता। आगे राम सहित श्री भ्राता॥
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा। सहित बन्धु सिय सुन्दर बेषा॥
जहं चितवहिं तहं प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रबीना॥
देखे शिव विधि विष्णु अनेका। अमित प्रभाव एक ते एका॥
बन्दत चरण करत प्रभु सेवा। विविध वेष देखे सब देवा॥

दोहा। सती विधात्री इन्दिरा देखी अमित अनूप॥
जेहि जेहि बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप ५४

देखे जहं तहं रघुपति जेते। शक्तिन सहित सकल सुर तेते॥
जीव चराचर जे संसारा॥ देखे सकल अनेक प्रकारा॥
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा॥ राम रूप दूसर नहिं देखा॥

अवलोके रघुपति बहुतेरे ॥ सीता सहित न वेष घनेरे

सोइ रघुवर सोइ लछिमन सीता देखि सती अति भई सभीता

हृदय कंप तनु सुधि कछु नाहीं नयन मूंदि बैठी मग माहीं ॥

बहुरि विलोकेउ नयन उघारी कछु न दीख तहं दक्ष कुमारी

पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा चलीं तहां जहं रहे गिरीसा

दोहा ॥ गई समीप महेस तव हंसि पूछी कुशलात
लीन्ह परीक्षा कवन विधि कहहु सत्य सव वात ॥ ६५

सतीं समुझि रघुवीर प्रभाऊ भय वस शिव सन कीन्ह दुराऊ

कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं

जो तुम कहा सो मृषा न होई मोरे मन प्रतीति अस सोई

तव शंकर देखेउ धरि ध्याना सती जो कीन्ह चरित सव जाना

वहुरि राममायहिं सिर नावा प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा

हरि इच्छा भावी वलवाना ॥ हृदय विचारत शंभु सुजाना

सती कीन्ह सीता कर वेषा शिव उर भयो विषाद विशेषा

जो अव करौं सती सन प्रीती मिटै भक्ति पथ होइ अनीती ॥

दोहा ॥ परम प्रेम नहिं जाइ तजि किये प्रेम वड पाप ॥
प्रगट न कहत महेश कछु हृदय अधिक संताप ॥ ६६

तव शंकर प्रभु पद सिर नावा सुमिरत राम हृदय अस आवा

एहि तनु सतिहि भेट मोहि नाहीं शिव संकल्प कीन्ह मन माहीं

अस विचारि शंकर मति धीरा चले भवन सुमिरत रघुवीरा

चलत गगन भइ गिरा सुहाई जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई

अस पन तुम विनु करै को आना राम भक्त समरथ भगवाना ॥

सुनि नभ गिरा सती उर सोचू ॥ पूछा शिवहि समेत सकोचू ॥

कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला सत्य धाम प्रभु दीन दयाला ॥

यदपि सती पूछा वहु भांती ॥ तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥

दोहा सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्वज्ञ ॥
कीन्ह कपट मैं शम्भु सन नारि सहज जड़ अज्ञ ॥ ६०

सोरठा जल पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि ।
बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई परत ही ॥

हृदय सोच समुझत निज करनी	चिन्ता अमित जाइ नहि बरनी
कृपासिंधु शिव परम अगाधा	प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
शंकर रुख अवलोकि भवानी	प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई	तपै अवाँ इव उर अधिकाई ॥
सतिहि ससोच जानि वृषकेतू	कहेउ कथा सुन्दर सुख हेतू ॥
बरनत पंथ विविधि इतिहासा	विश्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥
तहँ पुनि समुझि शम्भु प्रण आपन	बैठे बट तर करि कमलासन ॥
शंकर सहज स्वरूप सँभारा ॥	लागि समाधि अखण्ड अपारा

दोहा सती बसहि कैलास तब अधिक सोच मन माहिं ॥
मर्म न कोऊ जान कछु युग सम दिवस सिराहिं ॥

नित नव सोच सती उर भारा ॥	कब जैहौं दुख सागर पारा ॥
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना ॥	पुनि पति वचन मृषा करि जाना
सो फल मोहिं विधाता दीन्हा ॥	जो कछु उचित रहा सो कीन्हा
अब विधि अस बूझिय नहिं तोही	शंकर विमुख जियावहु मोही ॥
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी	मन महँ रामहि सुमिर सयानी
जो प्रभु दीन दयालु कहावा	आरत हरन वेद यश गावा ॥
तौ मैं विनय करौं कर जोरी	छूटै वेगि देह अब मोरी ॥
जो मोरे शिव चरण सनेहू ॥	मन क्रम वचन सत्य व्रत एहू

दोहा तौ सबदर्शी सुनिय प्रभु करौ सु वेगि उपाइ ।
होइ मरन जो बिनहिं श्रम दुसह विपत्ति बिहाइ ६८

इहि विधि दुखित प्रजेस कुमारी	अकथनीय दारुण दुख भारी

सब लोके रघुपति बहु तेरे ॥ सीता सहित सुवेष घनेरे ॥
सोइ रघुवर सोइ लक्षिमण सीता । देखि सती अति भई सभीता ॥
हृदय कंप तनु सुधि कछु नाहीं । नयन मूंदि बैठी मग माहीं ॥
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । कछु न दीख तहं दक्ष कुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ राम पद शीशा । चलीं तहां जहं रहे गिरीसा ॥

दोहा । गई समीप महेश तब हंसि पूछी कुशलात ।
लीन्ह परीक्षा कवन विधि कहहु सत्य सब बात ॥ ६५ ॥

सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ । भय बस शिव सन कीन्ह दुराऊ ॥
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं । कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं ॥
जो तुम कहा सो मृषा न होई । मोरे मन प्रतीति अस सोई ॥
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना । सती जो कीन्ह चरित सब जाना ॥
बहुरि राममायहि शिर नावा । प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना ॥ हृदय विचारत शम्भु सुजाना ॥
सती कीन्ह सीता कर वेषा । शिव उर भयो विषाद विशेषा ॥
जो अब करौं सती सन प्रीती । मिटै भक्ति पथ होइ अनीती ॥

दोहा । परम प्रेम नहिं जाइ तजि किये प्रेम बड़ पाप ॥
प्रगट न कहत महेश कछु हृदय अधिक संताप ॥ ६६ ॥

तबहिं शम्भु प्रभु पद शिर नावा । सुमिरत राम हृदय अस आवा ॥
एहि तनु सतिहि भेट मोहिं नाहीं । शिव संकल्प कीन्ह मन माहीं ॥
अस विचारि शंकर मति धीरा । चले भवन सुमिरत रघुवीरा ॥
चलत गगन भइ गिरा सुहाई । जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई ॥
अस प्रण तुम बिनु करै को आना । राम भक्त समरथ भगवाना ॥
सुनि नभगिरा सती उर सोचा ॥ पूछा शिवहि समेत सकोचा ॥
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला । सत्य धाम प्रभु दीन दयाला ॥
यदपि सती पूछा बहु भांती । तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥

दोहा। सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्वज्ञ ।।
कीन्ह कपट मैं शम्भु सन नारि सहज जड़ अज्ञ ।। ६०

सोरठा। जल पय सरिस विकाइ देखु प्रीति कि रीति भलि ।
विलग होइ रस जाइ कपट खटाई परत ही ।। ७ ।।

हृदय सोच समुझत निज करनी । चिंता अमित जाइ नहि बरनी ।।
कृपासिंधु शिव परम अगाधा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ।।
शंकर रुख अवलोकि भवानी । प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी ।।
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । तपै अवाँ इव उर अधिकाई ।।
सतिहि ससोच जानि वृषकेतू । कहेउ कथा सुन्दर सुखहेतू ।।
वरनत पंथ विविधि इतिहासा । विश्वनाथ पहुँचे कैलासा ।।
तहँ पुनि शम्भु समुझि पन आपन । बैठे बट तर करि कमलासन ।।
शंकर सहज स्वरूप सँभारा । लागि समाधि अखंड अपारा ।।

दोहा। सती बसहिं कैलास तब अधिक सोच मन माहिं ।।
मरम न कोऊ जान कछु युग सम दिवस सिराहिं ।।

नित नव सोच सती उर भारा ।। कब जैहौं दुख सागर पारा ।।
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना ।। पुनि पति वचन मृषा करि जाना ।।
सो फल मोहिं विधाता दीन्हा ।। जो कछु उचित रहा सो कीन्हा ।।
अब विधि अस बूझिय नहिं तोही । शंकर विमुख जियावहु मोही ।।
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी । मन महँ रामहिं सुमिर सयानी ।।
जो प्रभु दीनदयालु कहावा । आरत हरन वेद यश गावा ।।
तो मैं विनय करौं कर जोरी । छूटै वेगि देह यह मोरी ।।
जो मोरे शिव चरण सनेहू ।। मन क्रम वचन सत्य व्रत एहू ।।

दोहा। तौ सबदर्शी सुनिय प्रभु करौ सु वेगि उपाइ ।।
होइ मरन जेहि विनहिं श्रम दुसह विपत्ति विहाइ ६८

इहि विधि दुखित प्रजेस कुमारी । अकथनीय दारुण दुख भारी ।

बीते संवत सहस्र सतासी। तजी समाधि शम्भु अविनासी॥
राम नाम शिव सुमिरण लागे। जानेउ सती जगतपति जागे॥
जाइ शंभुपद वन्दन कीन्हा। सन्मुख शंकर आसन दीन्हा॥
लगे कहन हरि कथा रसाला। दक्ष प्रजेस भये तेहि काला॥
देखा विधि विचार सब लायक। दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक॥
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा। अति अभिमान हृदय तेहि आवा॥
नहिं कोउ अस जन्मेउ जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥

दोहा। दक्ष लिये मुनि बोलि सब करन लगे बड़ याग।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग॥७१॥

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा। वधुन समेत चले सुर सर्वा॥
विष्णु विरंचि महेश विहाई। चले सकल सुर यान बनाई॥
सती विलोकेउ गगन विमाना। जात चले सुन्दर विधि नाना॥
सुरसुन्दरी करहिं कलिगाना। सुनत श्रवण छूटहिं मुनिध्याना॥
पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी। पिता यज्ञ सुनि कछु हरषानी॥
जो महेश मोहिं आयसु देहीं। कछु दिन जाइ रहौं मिस एहीं॥
पति परित्याग हृदय दुख भारी। कहै न निज अपराध विचारी॥
बोली सती मनोहर वानी। भय संकोच प्रेम रस सानी॥

दोहा। पिता भवन उत्सव परम जो प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ॥७२॥

कहेउ नीक मोरेउ मन भावा। यहि अनुचित नहिं नेवत पठावा॥
दक्ष सकल निज सुता बुलाई। हमरे बैर तुमहिं बिसराई॥
ब्रह्म सभा हम सन दुख माना। तेहि ते अजहुँ करहिं अपमाना॥
जो बिनु बोले जाहु भवानी। रहै न शील सनेह न कानी॥
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा। जाइय बिन बोले न संदेहा॥
तदपि विरोध मानि जहँ कोई। तहाँ गये कल्यान न होई॥

भाति अनेक शंभु समुझावा। भावी वस न ज्ञान उर आवा
कह प्रभु जाहु जो विनहिं बुलाये। नहिं भल बात हमारे भाये

दोहा। कहि देखा हर यतन बहु रहइ न दक्षकुमारि॥
दिये मुख्य गण संग तब विदा कीन्ह त्रिपुरारि ७२

पिता भवन जब गई भवानी॥ दक्ष त्रास काहु न सनमानी
सादर भलेहि मिली एक माता। भगिनी मिली बहुत मुसकाता।
दक्ष न कछु पूछी कुसलाता। सतिहि विलोकि जरे सब गाता।
सती जाइ देखेउ तब यागा। कतहु न देखि शंभु कर भागा।
तब चित चढेउ जो शंकर कहेऊ। प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ
पाछिल दुख न हृदय अस व्यापा। जस यहि भयो महा परितापा
यद्यपि जग दारुण दुख नाना। सब ते कठिन जाति अपमाना
समुझि सो सतिहि भयो अतिक्रोधा। बहुविधि जननी कीन्ह प्रबोधा

दोहा। शिव अपमान न जाइ सहि हृदय न होइ प्रबोध।
सकल सभहि हठि हटकि तब बोली वचन सक्रोध

सुनहु सभासद सकल मुनिन्दा। कही सुनी जिन्ह शंकर निन्दा
सो फल तुरत लहब सब काहू। भलीभांति पछिताब पिताहू॥
संत शंभु श्रीपति अपवादा। सुनी जहां तहं असि मर्य्यादा
काटिय तासु जीभ जो बसाई। श्रवण मूदि नहिं चलिय पराई
जगदात्मा महेश पुरारी॥ जगतजनक सबके हितकारी
पिता मन्दमति निन्दत तेही॥ दक्ष शुक्र संभव यहि देही॥
तजिहौं देह तुरत यहि हेतू॥ उर धरि चन्द्रमौलि वृषकेतू
अस कहि योग अगिनि तन जारा। भयउ सकल मख हाहाकारा

दोहा। सती मरन सुनि शंभुगण लगे करन मख खीस।
यज्ञ विध्वंस विलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनीश ७४

समाचार जब शंकर पाये॥ वीरभद्र करि कोप पठाये॥

दक्षप्रजापतिकी यज्ञमें पारवतीका सती होना और श्री महादेव जीके कोपसे बीर भद्र प्रगट होकर दक्षका शिर काटकरि यज्ञको विध्वंस करना ॥



यज्ञ विध्वंस आइ तिन्ह कीन्हा । सकल सुरन्ह विधिवत फल दीन्हा ॥
भइ जग विदित दक्ष गति सोई । जस कछु शंभु विमुख की होई ॥
यह इतिहास सकल जग जाना । ताते मैं संक्षेप बखाना ॥ ७ ॥
सती मरत हरि सन वर मांगा ॥ जन्म जन्म शिव पद अनुरागा ॥
तेहि कारण हिमगिरि गृह जाई । जन्मी पार्वती तनु पाई ॥
जब ते उमा शैल गृह आई । सकल सिद्धि सम्पति तहं छाई ॥
जहं तहं मुनिनसु आश्रम कीन्हे । उचित वास हिम भूधर दीन्हे ॥

दोहा ॥ सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ॥
प्रगटी सुन्दर शैल पर मणि आकर बहु भांति ७५

सरिता सब पुनीत जल बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥
सहज बैर सब जीवन त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥
सोह शैल गिरिजा गृह आये ॥ जिमि नर राम भक्ति के पाये ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू ॥ ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू ॥
नारद समाचार जब पाये ॥ कौतुक हिमगिरि गेह सिधाये ॥
शैलराज बड़ आदर कीन्हा । पद पखारि वर आसन दीन्हा ॥
नारि सहित मुनि पद शिर नावा । चरण सलिल सब भवन सिंचावा ॥
निज सौभाग्य बहुल विधि बरणा । सुता बोलि मेली मुनि चरणा ॥

दोहा ॥ त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम गति सर्वत्र तुम्हारि ॥
कहहु सुता के दोष गुण मुनिवर हृदय विचारि ७६

कहि मुनि विहसि गूढ़ मृदु बानी । सुता तुम्हारि सकल गुण खानी ॥
सुन्दर सहज सुशील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ॥
सब लक्षण संपन्न कुमारी ॥ होइहि सन्तत पियहि पियारी ॥
सदा अचल एहि कर अहिवाता । एहि ते यश पैहहिं पितु माता ॥
होइहै पूज्य सकल जग माहीं ॥ एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
एहि करि नाम सुमिरि संसारा । तिय चढ़िहहिं पतिव्रत असिधारा ॥

शैलसु लक्षण सुता तुम्हारी । सुनहु जे अब अवगुण दुइ चारी
अगुण अमान मातु पित हीना । उदासीन सब संसय छीना ॥

दोहा योगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल भेष ॥
अस स्वामी इहि कहं मिलहि परी हस्त असि रेष

सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी । दुख दम्पतिहि उमा हरषानी
नारदहूं यहि भेद न जाना । दशा एक समुझत बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरि मयना । पुलक शरीर भरे जल नयना
होइ न मृषा देव ऋषि भाषा । उमा सो वचन हृदय धरि राखा
उपजेउ शिव पद कमल सनेहू । मिलन कठिन मन यह संदेहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई । सखी उछंग बैठि पुनि जाई
झूठि न होइ देव ऋषि बानी । सोचहिं दंपति सखी सयानी
उर धरि धीर कहेउ गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिय उपाऊ

दोहा कह मुनीश हिमवंत सुनि जो बिधि लिखा लिलार
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनहार ६८

तदपि एक मैं कहौं उपाई ॥ होइ करै जो दैव सहाई ॥
जस वर मैं बरनेउ तुम पाहीं ॥ मिलिहि उमहिं कछु संशय नाहीं
जे जे बर के दोष बखाने ॥ ते सब शिव पहं मैं अनुमाने
जो विवाह शंकर सम होई ॥ दोषहु गुण सम कह सब कोई
जो अहि सेज शयन हरि करहीं । बुध कछु तिन कहं दोष न धरहीं
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं ॥ तिन कहं मन्द कहत कोउ नाहीं
शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहही । सुरसरि कोउ न अपावन कहही
समरथ कहं नहिं दोष गुसाईं ॥ रवि पावक सुरसरि की नाईं

दोहा जो ऐसहि इर्षा करहिं जड़ विवेक अभिमान ॥
परहिं कल्प भरि नर्क महं जीव कि ईश समान ६९

सुरसरि जल कृत वारुन जाना । कबहु न सन्त करहिं तिहि पाना

सुरसरि मिले सु पावन कैसे ॥ ईश अनीशहि अन्तर जैसे ॥
शंभु सहज समरथ भगवाना । इहि विवाह सब विधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेशू ॥ आशुतोष पुनि किये कलेशू
जो तप करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटि सकहि त्रिपुरारी
यद्यपि वर अनेक जग माहीं । इहि कहं शिव तजि दूसर नाहीं
वरदायक प्रणतारति भंजन ॥ कृपासिन्धु सेवक मनरंजन
इच्छित फल विनु शिव आराधे । लहिय न कोटि योग जप साधे ॥

दोहा — अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहिं दीन्ह अशीश ।
होइहि यहि कल्याण अब संशय तजहु गिरीश ७०

कहि अस ब्रह्म भवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनहु जो भयऊ
पतिहिं इकान्त पाइ कहि मयना । नाथ न मैं समुझे मुनि वयना
जो घर वर कुल होइ अनूपा । करिय विवाह सुता अनुरूपा
न तो कन्या वरु रहौ कुमारी । कन्त उमा मम प्राण पियारी
जो न मिलहि वर गिरिजहिं योगू । गिरि जड़ सहज कहहिं सब लोगू
सो विचारि पति करहु विवाहू ॥ जेहि न बहोरि होइ उर दाहू ॥
अस कहि परी चरण धरि शीशा । वोले सहित सनेह गिरीशा
वरु पावक प्रगटै शशि माहीं । नारद वचन अन्यथा नाहीं

दोहा — प्रिया सोच परिहरहु सब सुमिरहु श्री भगवान ॥
पारवतीहि निरमयउ जो सोइ करिहि कल्यान ७१

अब जो तुमहिं सुता पर नेहू ॥ तो अस जाइ सिखावन देहू ॥
करै सु तप जेहि मिलैं महेशू । आन उपाइ न मिटहि कलेशू
नारद वचन सगर्भ सहेतू ॥ सुन्दर सब गुणनिधि वृषकेतू
अस विचार तुम तजि सब शंका । सबहि भांति शंकर अकलंका
सुनि पति वचन हर्ष मन माहीं । गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिं विलोकि नयन भरि वारी । सहित सनेह गोद बैठारी ॥

बारहिं बार लेति उर लाई ॥ गदगद कंठ न कछु कहि जाई
जगत मातु सरवज्ञ भवानी । मातु सुखद बोली मृदु बानी

दोहा सुनहु मातु मैं दीखि अस सपन सुनाऊं तोहि ॥
सुन्दर गौर सुविप्रवर अस उपदेशेउ मोहि ८२

करहु जाइ तप शैलकुमारी । नारद कहा सु सत्य विचारी
मातु पितहि पुनि इह मति भावा । तप सुखप्रद दुख दोष नसावा
तप बल रचै प्रपंच विधाता । तप बल विष्णु सकल जग त्राता
तप बल शंभु करहिं संहारा । तप बल शेष धरहि महि भारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी । करहु जाइ तप अस जिय जानी
सुनत वचन विस्मित महतारी । सपन सुनायेउ गिरिहिं हंकारी
मातु पितहि बहुविधि समुझाई । चली उमा तप हित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता । भये विकल मुख आव न बाता

दोहा वेदशिरा मुनि आय तब सबहि कहा समुझाइ
पार्वती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ८३

उर धरि उमा प्राणपति चरना । जाइ विपिन लागी तप करना
अति सुकुमार न तन तप योगो ॥ पति पद सुमिरि तजेहु सब भोगू
नित नव चरण उपजि अनुरागा । विसरी देह तपहिं मन लागा
संवत सहस मूल फल खाये । शाक खाइ शत वर्ष गंवाये
कछु दिन भोजन वारि बतासा । किये कठिन कछु दिन उपवासा
वेल पात महि परे सुखाई ॥ तीन सहस सम्वत सो खाई
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्ना । उमा नाम तब भयो अपर्ना
देखि उमहिं तप क्षीण शरीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गंभीरा

दोहा भयो मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि
परिहरि दुसह कलेस सब अब मिलिहहि त्रिपुरारि ८४

अस तप काहु न कीन्ह भवानी । भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी । सत्य सदा संतत शुचि जानी ॥

आवै पिता बुलावन जबहीं। हठ परिहरि घर जायहु तबहीं॥
मिलहिं तुमहिं जब सप्त ऋषीशा। जानेहु तब प्रमाण वागीशा॥
सुनत गिरा विधि गगन बखानी। पुलक गात गिरिजा हरषानी॥
उमा चरित मैं सुन्दर गावा। सुनहु शंभु कर चरित सुहावा॥
जब तें सती जाइ तनु त्यागा। तब तें शिव मन भयउ विरागा॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा। जहँ तहँ सुनहिं राम गुणग्रामा॥

दोहा। चिदानन्द सुखधाम शिव विगत मोह मद काम।
विचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोक अभिराम॥ ८५॥

कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना। कतहुँ राम गुण करहिं बखाना॥
यदपि अकाम तदपि भगवाना। भक्त विरह दुख दुखित सुजाना॥
इहि विधि गयउ काल बहु बीती। नित नव होइ राम पद प्रीती॥
नेम प्रेम शंकर कर देखा। अविचल हृदय भक्ति की रेखा॥
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला। रूप शील निधि तेज विशाला॥
बहु प्रकार शंकरहि सराहा। तुम बिन अस व्रत को निरबाहा॥
बहुविधि राम शिवहिं समुझावा। पारबती कर जन्म सुनावा॥
अति पुनीत गिरिजा की करनी। विस्तर सहित कृपानिधि वरनी॥

दोहा। अब बिनती मम सुनहु शिव जो मोपर निज नेहु।
जाइ विवाहहु शैलजहि यह मोहिं मांगे देहु॥ ८७॥

कहि शिव यदपि उचित अस नाहीं। नाथ वचन पुनि मेटि न जाहीं॥
सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धरम यह नाथ हमारा॥
मातु पिता गुरु प्रभु की बानी। बिनहिं विचार करिय शुभ जानी॥
तुम सब भांति परम हितकारी। आज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी॥
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना। भक्ति विवेक धर्म युत रचना॥
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ। अब उर राखहु जो हम कहेऊ॥
अन्तर्ध्यान भये अस भाषी। शंकर सोइ मूरति उर राखी॥

तबहिं सप्त ऋषि शिव पहं आये । बोले प्रभु अस वचन सुहाये ॥

दोहा — पार्वती पहं जाय तुम प्रेम परीक्षा लेहु ॥
गिरिहिं प्रेरि पठयेहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥ ८७

ऋषिन गौरि देखी तहं कैसी । मूरति वंत तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनि शैल कुमारी । करहु कवन कारण तप भारी ॥
केहि आराधहु का तुम चहहू । हम सन सत्य मर्म सब कहहू ॥
सुनत ऋषिन के वचन भवानी । बोली गूढ़ मनोहर बानी ॥
कहत मर्म मन अति सकुचाई । हंसिहहु सुनि हमारि जड़ताई ॥
मन हठ परा न सुनै सिखावा । चहत वारि पर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना । बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना ॥
देखिय मुनि अविवेक हमारा । चाहत पति शंकर अविकारा ॥

दोहा — सुनत वचन विहसे ऋषय गिरि सम्भव तव देह
नारद कर उपदेश सुनि कहहु बसे को गेह ॥ ८८

दक्ष सुतन्ह उपदेशिन जाई । तिन फिर भवन न देखा आई ॥
चित्रकेतु कर घर उन घाला । कनक कशिपु कर पुनि अस हाला ॥
नारद सिखजु सुनहिं नर नारी । अवशि भवन तजि होहिं भिखारी ॥
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा । आप सरिस सब हीं चहं कीन्हा ॥
तेहि के वचन मानि विश्वासा । तुम चाहहु पति सहज उदासा ॥
निर्गुण निलज कुवेष कपाली । अकुल अगेह दिगम्बर व्याली ॥
कहहु कवन सुख अस वर पाये । भल भूलेहु ठग के बौराये ॥
पंच कहे शिव सती विवाही ॥ पुनि अवडेर मराइन ताही ॥

दोहा — अब सुख सोवत सोच नहिं भीख मांगि भव खाहिं
सहज एकाकिन के भवन कबहुं कि नारि खटाहिं ॥ ८९

अजहूं मानहु कहा हमारा । हम तुम कहं वर नीक विचारा ॥
अति सुन्दर सुचि सुखद सुशीला । गावहिं वेद जासु यश लीला ॥

दूषन रहित सकल गुण राशी । श्रीपति पुर वैकुंठ निवासी ॥
अस वर तुमहिं मिलाउब आनी । सुनत बिहसि कह वचन भवानी ॥
सत्य कहहु गिरि भव तनु एहा । हठ न छूट छूटै वरु देहा ॥ ५ ॥
कनको पुनि पखान ते होई ॥ जारेहु सहज न परिहरि सोई ॥
नारद वचन न मैं परिहरऊं ॥ बसौ भवन उजरौ नहिं डरऊं ॥
गुरु के वचन प्रतीति न जेही । सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही ॥

दोहा । महादेव अवगुन भवन विष्णु सकल गुणधाम ॥
जेहि कर मन रम जाहि सन ताहि ताहि सन काम ॥ ८० ॥

जौं तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा । सुनतेउं सिख तुम्हारि धरि शीशा ॥
अब मैं जन्म शंभु हित हारा ॥ को गुण दोषहिं करै विचारा ॥
जौं तुम्हरे हठ हृदय विशेषी । रहि न जाइ विनु किये बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं । बर कन्या अनेक जग माहीं ॥
जन्म कोटि लगि रगर हमारी । बरौं शंभु न तु रहौं कुमारी ॥
तजौं न नारद कर उपदेशू ॥ आपु कहहिं शत बार महेशू ॥
मैं पा परौं कहै जगदम्बा ॥ तुम गृह गवनेउ भयेउ विलम्बा ॥
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥ जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥

दोहा । तुम माया भगवान शिव सकल जगत पितु मात ॥
नाय चरण सिर मुनि चले पुनि पुनि हर्षित गात ॥ ८१ ॥

जाय मुनिन्ह हिमवंत पठाये ॥ करि विनती गिरजहिं गृह लाये ॥
बहुरि सप्तऋषि शिव पहं जाई । कथा उमा की सकल सुनाई ॥
भये मगन शिव सुनत सनेहा । हर्षि सप्तऋषि गवने गेहा ॥
मन थिर करि तब शंभु सुजाना । लगे करन रघुनायक ध्याना ॥
तारक असुर भयेउ तेहि काला । भुज प्रताप बल तेज विशाला ॥
तेइ सब लोक लोकपति जीते । भये देव सुख संपति रीते ॥
अजर अमर सो जीति न जाई । हारे सुर करि विविध लराई ॥

तब बिरंच सन जाय पुकारे। देखे विधि सब देव दुखारे॥

दोहा। सब सन कहा बुझाय विधि दनुज निधन तब होय।
शंभु शुक्र संभूत सुत इहि जीतै रण सोय ८२

मोर कहा सुन करहु उपाई। होइहि ईश्वर करिय सहाई
सती जो तजी दक्ष मख देहा। जनमी जाइ हिमाचल गेहा॥
तेइ तप कीन्ह शंभु पति लागी। शिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमंजस भारी॥ तदपि बात इक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाइ शिव पाहीं। करै क्षोभ शंकर मन माहीं।
तब हम जाइ शिवहि सिर नाई। करवाउब विवाह बरियाई
इहि विधि भलहि देवहित होई। मत अति नीक कही सब कोई
अस्तुति सुरन कीन्ह अति हेतू। प्रगटेउ विषम बारिचरि केतू

दोहा। सुरन कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह विचार।
शंभु विरोध न कुशल मोहिं विहंसि कहेउ अस मार ८३

तदपि करब मैं काज तुम्हारा। श्रुति कहि परम धर्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही। सन्तत सन्त प्रशंसहिं तेही॥
असि कहि चलेउ सबहिं सिर नाई। सुमन धनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय बिचारा। शिव विरोध ध्रुव मरन हमारा
तब आपन प्रभाव विस्तारा। निज बस कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं बारि चर केतू। क्षण महं मिटे सकल श्रुति सेतू
ब्रह्मचर्य्य व्रत संयम नाना॥ धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना॥
सदाचार जप योग विरागा। सभय विवेक कटक सब भागा

छं० भागेउ विवेक सहाइ सहित सो सुभट संयुग महि मुरे
सद ग्रंथ पर्वत कन्दरन महं जाइ तेहि अवसर दुरे
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभर परा॥
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहं कोप धनुशर कर धरा २

दोहा॥ जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम
ते निज निज मर्याद तजि भये सकल बस काम

सबके हृदय मदन अभिलाषा । लता निहारि नवहिं तरु शाखा
नदी उमगि अम्बुधि कहं धाई॥ संगम करहिं तलाव तलाई
जहं अस दशा जडन की बरणी । को कहि सकै सचेतन करनी
पशु पक्षी नभ जल थल चारी । भये काम वस समय बिसारी॥
मदन अंध व्याकुल सब लोका । निशि दिन नहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किन्नर व्याला । प्रेत पिशाच भूत वैताला॥
इन की दशा नहिं कहउं बखानी । सदा काम के चेरे जानी॥
सिद्ध विरक्त महा मुनि योगी । तेपि काम वश भये वियोगी

छंद॥ भये काम वश योगीश तापस पांवरन की को कहै॥
देखहिं चराचर नारि मय जे ब्रह्म मय देखत रहे॥
अबला बिलोकहिं पुरुष मय जग पुरुष सब अबला मयं
दुइ दण्ड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं॥ ४

सोरठा॥ धरी न काहू धीर सब के मन मनसिज हरे॥
जेहि राखे रघुवीर ते उबरे तेहि काल महं॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ । जब लगि काम शंभु पहं गयऊ
शिवहिं बिलोकि शशंकेउ मारू । भयउ यथाथिति सब संसारू॥
भये तुरत जग जीव सुखारे॥ जिमि मद उतरि गये मतवारे॥
रुद्रहिं देखि मदन भय माना । दुराधर्ष दुर्गम भगवाना॥
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई । मरन ठानि मन रचेसि उपाई॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा । कुसुमित नव तरु राजि बिराजा॥
बन उपबन बापिका तडागा॥ परम सुभग सब दिशा बिभागा
जहं तहं जनु उमगत अनुरागा । देखि मुयेहु मन मनसिज जागा

छंद॥ जागेउ मनोभव मुयेहु मन बन सुभगता न परै कही॥

सीतल सुगन्ध सुमन्द मारुत मदन अनल सखा सही।
विकसे सरन्ह बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ॥४
कल हंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहि अपछरा

दोहा सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत॥
चली न अचल समाधि शिव कोपेउ हृदय निकेत। ८३

देखि रसाल विटप बर शाखा। तेहि पर चढ़ेउ मदन मनमाखा॥
सुमन चाप निज सर संधाने॥ अति रिस ताकि श्रवन लगताने॥
छाड़े विषम विशिख उर लागे॥ छूटि समाधि शंभु तब जागे॥
भयेउ ईश मन छोभ विशेखी॥ नयन उघारि सकल दिशि देखी॥
सौरभ पल्लव मदन बिलोका॥ भयेउ कोप कंपेउ त्रय लोका॥
तब शिव तीसर नयन उघारा॥ चितवत काम भयेउ जरि छारा॥
हाहाकार भयेउ जग भारी॥ डरपे सुर भये असुर सुखारी॥
समुझि काम सुख सोचहिं भोगी। भये अकंटक साधक योगी॥

छंद योगी अकंटक भयेउ पति गति सुनत रति मूर्छित भयी
रोदति बदति बहु भांति करुणा करत शंकर पहं गयी
अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सन्मुख रही
प्रभु आसु तोष कृपालु शिव अबला निरखि बोले सही ५

दोहा अब ते रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग ॥४
बिनु बपु व्यापहि सबहिं पुनि सुनि निज मिलन प्रसंग ८५

जब यदुबंश कृष्ण अवतारा॥ होइहि हरन महा महि भारा॥
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा बचन अन्यथा होइ न मोरा॥
रति गवनी सुनि शंकर बानी। कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन समाचार सब पाये॥ ५ ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाये॥
सब सुर विष्णु विरंचि समेता गये जहां शिव कृपा निकेता
पृथक पृथक तिन कीन्ह प्रशंसा भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा॥

देवता गणों की आज्ञा से काम करके कैलाश पर्वत पर श्री महादेव जी को समाधि से जगाना और श्री महादेव के कोप से काम का भस्म होना





बोले कृपासिंधु वृषकेतू ॥ कहहु अमर आयेहु केहि हेतू
कहि विधि तुम प्रभु अंतरयामी ॥ तदपि भक्ति वस विनवौं स्वामी

दोहा सकल सुरन के हृदय अस शंकर परम उछाह
निज नयनन देखा चहहिं नाथ तुम्हार विवाह

यह उत्सव देखिय भरि लोचन ॥ सो कछु करिय मदन मद मोचन
काम जारि रति कहं वर दीन्हा ॥ कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा
सांसति करि पुनि करहिं पसाऊ ॥ नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ
पारवती तप कीन्ह अपारा ॥ करहु तासु अब अंगीकारा
सुनि विधि वचन समुझि प्रभु वानी ॥ ऐसेइ होउ कहा सुख मानी
तब देवन दुंदुभी बजाईं ॥ बरषि सुमन जय जय सुरसाईं
अवसर जानि सप्त ऋषि आये ॥ तुरतहिं विधि गिरिभवन पठाये
प्रथम गये जहां रही भवानी ॥ बोले वचन मधुर छल सानी

दोहा कहा हमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेश ॥
अब भा झूठ तुम्हार प्रण जारेउ काम महेश ॥

सुनि बोली मुसकाय भवानी ॥ उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी
तुम्हरे जान काम अब जारा ॥ अब लगि शंभु रहे सविकारा
हमरे जान सदा शिव योगी ॥ अज अनवद्य अकाम अभोगी
जौं मैं शिव सेयउं अस जानी ॥ प्रीति समेत कर्म मन वानी
तो हमार प्रण सुनहु मुनीशा ॥ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा
तुम जो कहा हर जारेउ मारा ॥ सो अति बड़ अविवेक तुम्हारा
तात अनल कर सहज सुभाऊ ॥ हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ
गये समीप सो अवशि नसाई ॥ जिमि संपाति निज पच्छ गंवाई

दोहा हिय हरषे मुनि वचन सुनि देखि प्रीति विश्वास
चले भवानी नाइ शिर गये हिमाचल पास ९६

सब प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा ॥ मदन दहन सुनि अति दुख पावा

बहुरि कहेउ रति कर बरदाना । सुनि हिमवन बृंदन सुख माना ।
हृदय बिचारि शंभु प्रभुताई ॥ सादर मुनिवर लिये बुलाई ॥
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई ॥ बेगि वेद विधि लगन धराई ॥
पत्री सप्त ऋषिन सोइ दीन्हा ॥ गहि पद बिनय हिमाचल कीन्हा ॥
जाइ बिधिहि तिन दीन्ह सो पाती । बाचत प्रीति न हृदय समाती ॥
लगन बाचि अज सबहि सुनाई । हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे ॥ मंगल कलश दशहु दिशि साजे ॥

दोहा॰ लगे सम्हारन सकल सुर वाहन विविध विमान ।
होहिं सगुन मंगल सुभ करहिं अप्सरा गान ॥ १००

शिवहि शंभु गण करहिं सिंगारा । जटा मुकुट अहि मौर सँवारा ॥
कुंडल कंकण पहिरे ब्याला ॥ तन विभूति पट केहरि छाला ॥
शशि ललाट सुन्दर शिर गंगा । नयन तीनि उपबीत भुजंगा ॥
गरल कंठ उर नर शिर माला । असिव भेष शिव धाम कृपाला ॥
कर त्रिशूल अरु डमरू बिराजा ॥ चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा ॥
देखि शिवहि सुर त्रिय मुसकाहीं । वर लायक दुलहिनि जग नाहीं ॥
विष्णु विरंचि आदि सुर व्राता ॥ चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता ॥
सुर समाज सब भांति अनूपा ॥ नहिं बरात दुलह अनुरूपा ॥

दोहा॰ विष्णु कहा अस विहँसि तब बोलि सकल दिशिराज ।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज २ सहित समाज ॥ १०१

वर अनुहार बरात न भाई ॥ हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥
विष्णु वचन सुनि सुर मुसकाने । निज २ सेन सहित बिलगाने ॥
मन हीं मन महेश मुसकाहीं । हरि के व्यंग वचन नाहिं जाहीं ॥
अति प्रिय वचन सुनत हरि केरे । भृङ्गी प्रेरि सकल गण टेरे ॥
शिव अनुशासन सुनि सब आये । प्रभु पद जलज शीस तिन नाये ॥
नाना वाहन नाना वेषा ॥ विहँसे शिव समाज निज देखा ॥

कोउ मुखहीन विपुल मुखकाहू	बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू॥
विपुल नयन कोउ नयन विहीना	रिष्टपुष्ट कोउ अति तनुखीना॥

छन्द तनु खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन तनु धरे।
भूषण कराल कपाल कर सब सद्य शोणित तनु भरे॥
खर स्वान सुअर सृगाल मुख गण वेष अगणित को गने।
बहु जिनसि प्रेत पिशाच योगिनि भांति वरणत नहिं बने॥ ७

सोरठा नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब॥ ६॥
देखत अति विपरीत बोलहिं वचन विचित्र विधि॥ ९

जस दूलह तसि बनी बराता	कौतुक विविधि होहिं मगुजाता॥
इहां हिमाचल रचेउ विताना॥	अति विचित्र नहिं जाय बखाना॥
शैल सकल जहं लगि जगमाहीं	लघु विशाल नहिं बरनि सिराहीं॥
वन सागर नद नदी तलावा॥	हिमगिरि सब कहं नवत पठावा॥
कामरूप सुन्दर तनु धारी॥॥	सहित समाज सहित वर नारी॥
आये सकल हिमाचल गेहा॥	गावहिं मंगल सहित सनेहा॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृह संवराये	यथा योग जहं तहं सब छाये॥
पुर शोभा अवलोकि सुहाई॥	लागे लघु विरंचि निपुणाई॥

छन्द लघु लागि विधि की निपुणता अवलोकि पुर शोभा सही।
वन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग ता सक को कही॥
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
वनिता पुरुष सुन्दर चतुर छवि देखि मुनि मन मोहहीं॥ ८

दोहा जगदम्बा जहं अवतरी सो पुर वरणि न जाइ॥ ६॥
रिद्धि सिद्धि संपति सकल नित नूतन अधिकाइ॥ १०२

नगर निकट बरात सुनि आई	पुर खरभर शोभा अधिकाई॥
करि बनाव सजि वाहन नाना	चले लेन सादर अगवाना॥
हिय हरषे सुर सेन निहारी॥	हरिहि देखि अति भये सुखारी॥

शिव समाज जब देखन लागे ॥ बिडरी चले बाहन सब भागे ॥
धरि धीरज तहं रहे सयाने ॥ ५ बालक सब ले जीव पराने ॥
गये भवन पूछहि पितु माता ॥ कहहिं बचन भय कंपित गाता
कहिय कहा कहि जाइ न बाता ॥ यमकर धार किधौं बरियाता ॥
बर बौराह बरद असवारा ॥ ५ व्याल कपाल विभूषण छारा ॥

छन्द तनु छार व्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा
संग भूत प्रेत पिशाच योगिनि विकट मुख रजनीचरा
जो जियत रहिहि बरात देखत पुण्य बड़ तिहिंकर सही
देखहिं सो उमा विवाह घर घर बात अस लरिकन कही ८

दोहा समुझि महेश समाज सब जननि जनक मसकाहिं
बाल बुझाये विविध विधि निडर होउ डर नाहिं ॥ १०२

ले अगवान बरातहि आये ॥ ५ दिये सबहि जनवास सुहाये ॥
मैना शुभ आरती सवारी ॥ ५ ॥ संग सुमंगल गावहिं नारी ॥ ५
कंचन थार सोह बर पानी ॥ ५ परछन चली हरहिं हरषानी ॥
विकट भेष जब रुद्रहिं देखा ॥ अबलनि उर भय भयेउ बिसेखा
भागि भवन पैठी अति त्रासा ॥ गये महेश जहां जनि वासा ॥
मैना हृदय भयेउ दुखभारी ॥ लीन्हा बोलि गिरीश कुमारी ॥
अधिक सनेह गोद बैठारी ॥ श्याम सरोज नयन भरि वारी ॥
जेहि विधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा तेहि जड़ बर बाउर कस कीन्हा ॥

छन्द कस कीन्ह बर बौराह विधि जेइ तुमहि सुन्दरता दई
जो फल चहिय सुर तरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई
तुम सहित गिरते गिरौं पावक जरौं जल निधि महिं परौं
घर जाउ अपजस होउ जग जीवत विवाह नहीं करौं ॥ १०

दोहा भयीं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि
करि विलाप रोदति बदति सुता सनेह संभारि ॥ ५ ॥ १०३

नारद कर मैं कहा बिगारा ॥१ भवन मोर जिन बसत उजारा॥
अस उपदेश उमहि जिन दीन्हा बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा॥
सोचेहु उनके मोह न माया ॥२ उदासीन धन धाम न जाया॥
पर घर घालक लाज न भीरा॥ बांझ कि जान प्रसव की पीरा॥
जननहि बिकल बिलोकि भवानी बोली युत बिवेक मृदु बानी॥३
अस बिचार सोचहु मति माता॥ सो न टरै जो रचै बिधाता॥४
कर्म लिखा जो बावर नाह॥ तो कत दोष लगाइय काहु
तुम सन मिटहिं कि बिधि के अंका मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका

छंद जनि लेहु मात कलंक करुणा परिहरहु अवसर नहीं
दुख सुख लिखा जो लिलार हमरे जाब जहं पाउब तहीं
सुनि उमा वचन विनीत कोमल सकल अबला सोचहीं
बहु भांति विधिहिं लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं ११

दोहा तेहि अवसर नारद ऋषियों ऋषि सप्त समेत॥
समाचार सुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत॥ १०५

तब नारद सबही समुझावा॥ पूरब कथा प्रसंग सुनावा॥१
मयना सत्य सुनहु मम बानी॥ जगदम्बा तव सुता भवानी॥
अजा अनादि शक्ति अविनाशिनि सदा शम्भु अर्धंग निवासिनि॥
जग संभव पालन लय कारिणि निज इच्छा लीला वपु धारिणि॥
जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई॥ नाम सती सुन्दर तनु पाई॥२
तहंहु सती शंकरहि विवाहीं॥ कथा प्रसिद्ध सकल जग मांहीं
एक बार आवत शिव संगा॥ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भयेउ मोह शिव कहा न कीन्हा भ्रम बस भेष सीय कर लीन्हा॥

छन्द सिय वेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरी
हर विरह जाइ बहोरि पितु के यज्ञ योगानल जरी॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुण तप किया

अस जानि संशय तजहु गिरिजा सर्वदा शंकर प्रिया ॥ १२

दोहा — सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा विषाद ॥
छन महं व्यापेउ सकल पुर घर घर यह संवाद ॥ १०६

तब मयना हिमवंत अनंदे ॥ पुनि पुनि पारबती पद बंदे ॥
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने ॥ नगर लोक सब अति हरषाने ॥
लगे होन पुर मंगल गाना ॥ सजे सबहि हाटक घट नाना ॥
भांति अनेक भई जेवनारा ॥ सूप शास्त्र जस कछु व्यवहारा ॥
सो जेवनार कि जाइ बखानी ॥ बसहिं भवन जेहि मातु भवानी ॥
सादर बोले सकल बराती ॥ विष्णु विरंचि देव सब जाती ॥
विविध पांति बैठी जेवनारा ॥ लगे परोसन निपुण सुआरा ॥
नारि वृन्द सुर जेवत जानी ॥ लागीं देन गारि मृदु बानी ॥

छन्द — गारी मधुर सुर देहिं सुन्दरि व्यंग बचन सुनावहीं ।
भोजन करहिं सुर अति विलंब बिनोद सुनि सचु पावहीं ।
जेवत जो बढ्यो अनंद सो मुख कोटिहू न परै कह्यो ।
अंचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहं जाको रह्यो ॥ १३

दोहा — बहुरि मुनिन हिमवंत कहं लगन सुनाई आइ ॥
समय बिलोकि विवाह कर पठये देव बुलाइ ॥ १०७

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे ॥ सबहि यथोचित आसन दीन्हे ॥
बेदी बेद विधान संवारी ॥ सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंहासन अति दिव्य सुहावा ॥ जाइ न बरनि विरंचि बनावा ॥
बैठे शिव विप्रन्ह सिर नाई ॥ हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥
बहुरि मुनीसन उमा बुलाई ॥ करि शृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहे ॥ बरनै छवि अस जग कवि को है ॥
जगदम्बिका जानि भव भामा ॥ सुरन मनहिं मन कीन्ह प्रनामा ॥
सुन्दरता मर्याद भवानी ॥ जाइ न कोटिहु बदन बखानी ॥

छंद कोटिहुँ वदन नहिं बनै बरनत जगजननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति शेष शारद मंदमति तुलसी कहा॥
छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप शिव जहाँ।
अवलोकि सकहिं न सकुच पति पद कमल मन मधुकर तहाँ॥ १४

दोहा मुनि अनुशासन गणपतिहिं पूजउ शंभु भवानि॥
कोउ सुनि संशय करै जनि सुर अनादि जियजानि॥ १००

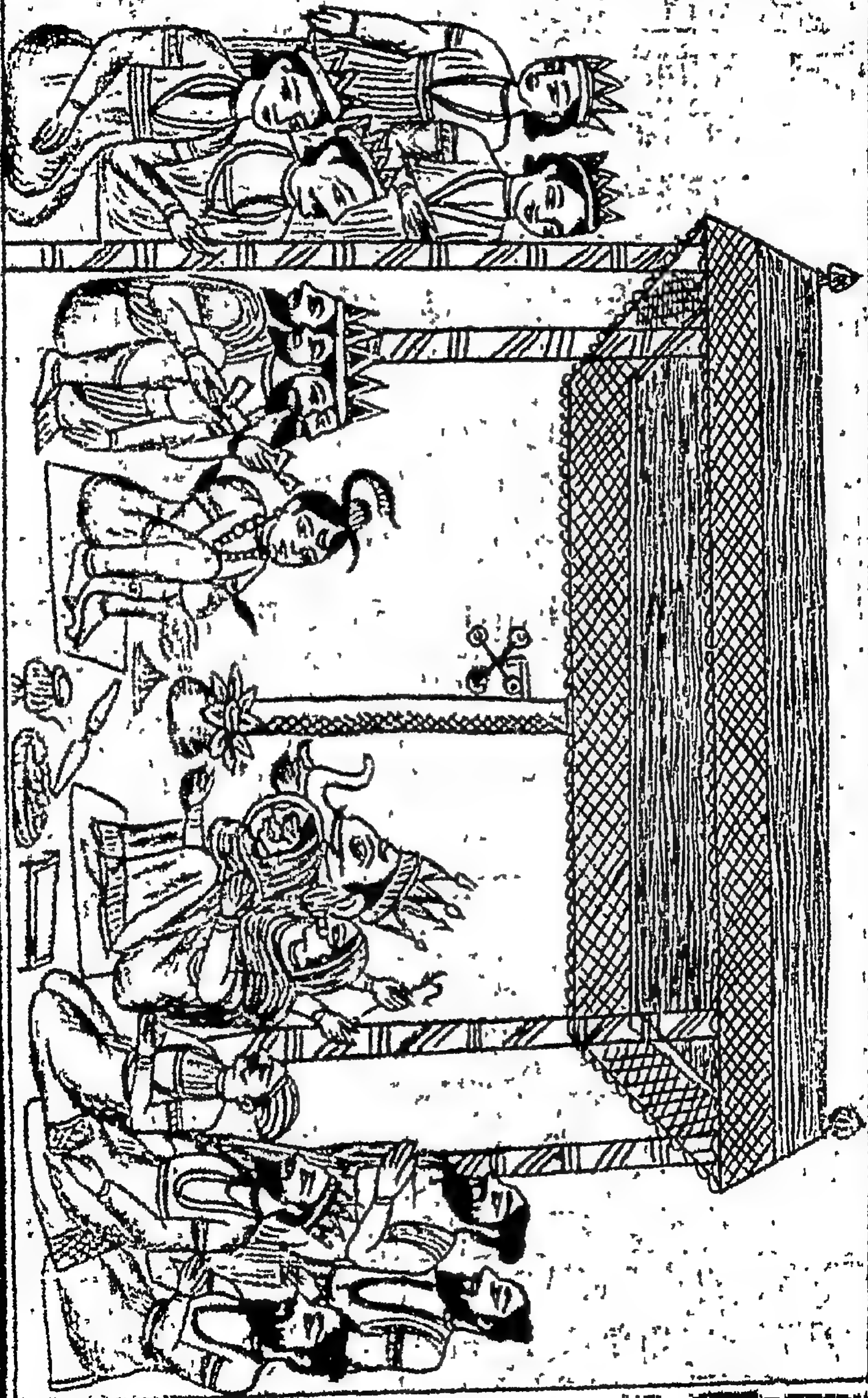
जस विवाह की विधि श्रुति गाई। महा मुनिन सो सब करवाई॥
गहि गिरीश कुस कन्या पानी। शिवहिं समर्पी जानि भवानी॥
पानि ग्रहन जब कीन्ह महेशा। हिय हर्षे तब सकल सुरेशा॥
वेद मंत्र मुनि वर उच्चरहीं। जयजयजय शंकर सुर करहीं॥
बाजहिं बाजन विविध विधाना। सुमन वृष्टि नभ भई विधि नाना॥
हर गिरिजा कर भयेउ विवाहू। सकल भुवन भरि रहा उछाहू॥
दासी दास तुरंग रथ नागा। धेनु बसन मनि बस्तु विभागा॥
अन्न कनक भाजन भरि जाना। दाइज दीन्ह न जाय बखाना॥

छन्द दाइज दियो बहु भांति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो।
का देउं पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो॥
शिव कृपा सागर ससुर कर परितोष सब भांतिन कियो।
पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरण हियो॥ १५

दोहा नाथ उमा मम प्राण सम गृहकिंकरी करेहु॥
क्षमेहु सकल अपराध सब होइ प्रसन्न वर देहु॥

बहु विधि शंभु सास समुझाई। गवनी भवन चरण सिर नाई॥
जननी उमा बोलि तब लीन्ही। ले उछंग सुन्दर सिख दीन्ही॥
करहु सदा शंकर पद पूजा। नारि धर्म पति देव न दूजा॥
वचन कहति भरि लोचन वारी। बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी॥
कत विधि सिरजी नारि जगमाहीं। पराधीन सपनेहु सुख नाहीं॥

हिमाचल के मन्दिर में शिवजीके व्याह के निमित्त ब्रह्मा विष्णु आदि सम्पू
र्णदेवतों कोबरात मेंजाना और शिवपार्वतीका व्याह होना।



भइ अति प्रेम विकल महतारी ॥ धीरज कीन्ह कुसमय विचारी ॥
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरणा ॥ प्रेम विवस कछु जाइ न वरणा ॥
सब नारिन मिलि भेंटि भवानी ॥ जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥

छन्द जननिहिं बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहू दई ॥
फिरि फिरि विलोकति मातु तन तब सखी ले शिव पहं गई ॥
याचक सकल संतोषि शंकर उमा सहित भवनहिं चले ॥
सब अमर हरषे सुमन वरषि निशाज नभ बाजहिं भले ॥ १६

दोहा चले संग हिमवंत तव पहुंचावन अति हेतु ॥
विविधि भांति परितोष करि विदा कीन्ह वृषकेतु ॥ ११०

तुरत भवन आये गिरि राई ॥ सकल शैल सर लिय बुलाई ॥
आदर दान विनय बहु माना ॥ सब कर विदा कीन्ह हिमवाना ॥
जबहिं शंभु कैलाशहिं आये ॥ सुर सब निज निज लोक सिधाये ॥
जगत मातु पितु शंभु भवानी ॥ तेहि शृंगार न कहौं बखानी ॥
करहिं विविधि विधि भोग विलासा ॥ गणन समेत बसहिं कैलाशा ॥
हर गिरिजा विहार नित नयऊ ॥ इहि विधि विपुल काल चलि गयऊ ॥
तब जनमें षट बदन कुमारा ॥ तारक असुर समर जिन मारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ॥ षटमुख जन्म कर्म जग जाना ॥

छन्द जग जानि षटमुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा ॥
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुत कर चरित संक्षेपहिं कहा ॥
यह उमा शंभु विवाह जे नर नारि कहहिं जे गावहीं ॥
कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥ १७

दोहा चरित सिंधु गिरिजा रमन वेद न पावहिं पार ॥
वरनै तुलसीदास किमि अति मति मंद गंवार ॥ १११

शंभु चरित सुनि सरस सुहावा ॥ भरद्वाज मुनि अति सुख पावा ॥
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी ॥ नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी ॥

प्रेम विवस मुख आव न बानी॥ दशा देखि हरषे मुनि ज्ञानी॥
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा॥ तुमहिं प्राण सम प्रिय गौरीशा॥
शिव पद कमल जिनहिं रति नाहीं॥ रामहिं ते सपनेहु न सुहाहीं॥
विनु छल विश्वनाथ पद नेहू॥ राम भक्त कर लक्षण एहू॥ ७
शिव सम को रघुपति व्रत धारी॥ विनु अघ तजी सती अस नारी॥
प्रण कर रघुपति भक्ति दृढ़ाई॥ को शिव सम रामहिं प्रिय भाई॥

दोहा॥ प्रथम कहे मैं शिव चरित बूझा मरम तुम्हार॥
सुचि सेवक तुम रामके रहित समस्त विकार॥ ११२

मैं जाना तुम्हार गुण शीला॥ कहौं सुनो अब रघुपति लीला॥
सुनि मुनि आजु समागम तोरे॥ कहि न जाइ जस सुख मन मोरे॥
राम चरित अति अमित मुनीशा॥ कहि न सकहिं शत कोटि अहीसा॥
तदपि यथा श्रुति कहौं बखानी॥ सुमिरि गिरा पति प्रभु धनुपानी॥
सारद दारु नारि सम स्वामी॥ राम सूत्र धर अंतर यामी॥
जेहि पर कृपा करहिं जन जानी॥ कवि उर अजिर नचावहिं बानी॥
प्रणऊं सोइ कृपालु रघुनाथा॥ वरनऊं विशद तासु गुण गाथा॥
परम रम्य गिरि वर कैलासू॥ सदा जहां शिव उमा निवासू॥

दोहा॥ सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किन्नर मुनि वृन्द॥
बसहिं जहां सुकृती सकल सेवहिं शिव सुख कन्द॥ ११३

हरि हर विमुख धर्म रत नाहीं॥ ते नर तहां न सपनेहु जाहीं॥
तेहि गिरि पर वट विटप विशाला॥ नित नूतन सुन्दर सब काला॥
त्रिविधि समीर सुशीतल छाया॥ शिव विश्राम विटप श्रुति गाया॥
एक बार तेहि तर प्रभु गयेऊ॥ तरु विलोकि उर अति सुख भयेऊ॥
निज कर डासि नाग रिपु छाला॥ बैठे सहजहिं शंभु कृपाला॥
कुन्द इन्दु दर गौर शरीरा॥ भुज प्रलम्ब परिधन मुनि चीरा॥
तरुण अरुण अंबुज सम चरणा॥ नख दुति भक्त हृदय तम हरणा॥

श्री महादेव जीको कैलाश पर्वत पर वट के तले श्री पार्वती से रामचरित्र कहना



भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी॥ आनंद शरद चन्द छवि हारी॥

दोहा — जटा मुकुट सुरसरित शिर लोचन नलिन विशाल।
नील कंठ लावन्य निधि सोह बाल विधु भाल॥ ११४

बैठे सोह कामरिपु कैसे॥ धरे शरीर शान्तरस जैसे॥
पारवती भल अवसर जानी॥ गई शंभु पहँ मातु भवानी॥
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा॥ वाम भाग आसन हर दीन्हा॥
बैठी शिव समीप हरषाई॥ पूरब जन्म कथा चित आई॥
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी॥ विहसि उमा बोली प्रिय बानी॥
कथा जो सकल लोक हितकारी॥ सोइ पूछन चह शैल कुमारी॥
विश्वनाथ मम नाथ पुरारी॥ त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी॥
चर अरु अचर नाग नर देवा॥ सकल करहि पद पंकज सेवा॥

दोहा — प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव सकल कला गुण धाम॥
योग ज्ञान वैराग्य निधि प्रणत कल्प तरु नाम॥ ११५

जो मोपर प्रसन्न सुखरासी॥ जानिय सत्य मोहि निज दासी॥
तो प्रभु हरहु मोर अज्ञाना॥ कहि रघुनाथ कथा विधि नाना॥
जासु भवन सुरतरु तर होई॥ सहकि दरिद्र जनित दुख सोई॥
शशि भूषण अस हृदय विचारी॥ हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी॥
प्रभु जे मुनि परमारथ वादी॥ कहहि राम कहँ ब्रह्म अनादी॥
शेष शारदा वेद पुराना॥ सकल करहि रघुपति गुणगाना॥
तुम पुनि राम राम दिन राती॥ सादर जपहु अनंग अराती॥
राम सो अवध न्रपति सुत सोई॥ की अज अगुण अलख गति कोई॥

दोहा — जो न्रप तनय तो ब्रह्म किमि नारि विरह मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि॥ ११६

जो अनीह व्यापक विभु कोऊ॥ कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ॥
अज्ञ जानि रिस जनि उर धरहू॥ जेहि विधि मोह मिटै सो करहू॥

मैं बन दीख राम प्रभुताई ॥ अति भय बिकल न तुमहिं सुनाई ॥
तदपि मलिन मन बोध न आवा ॥ सो फल भली भांति मैं पावा ॥
अजहुं कछु संशय मन मोरे ॥ करहु कृपा बिनउं कर जोरे ॥
प्रभु तब मोहि बहु भांति प्रबोधा ॥ नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा ॥
तब कर अस बिमोह अब नाहीं ॥ रामकथा पर रुचि मन माहीं ॥
कहहु पुनीत राम गुण गाथा ॥ भुजग राज भूषण सुर नाथा ॥

दोहा — बंदौ पद धरि धरनि सिर बिनय करौं कर जोरि ॥
बरणहु रघुवर बिशद यश श्रुति सिद्धांत निचोरि ॥ ११७

यदपि योषिता अन अधिकारी ॥ दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ॥
गूढ़ौ तत्व न साधु दुरावहिं ॥ आरत अधिकारी जहं पावहिं ॥
अति आरति पूछौ सुरराया ॥ रघुपति कथा कहहु करि दाया ॥
प्रथम सो कारण कहहु बिचारी ॥ निर्गुण ब्रह्म सगुण वपु धारी ॥
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ॥ बाल चरित पुनि कहहु उदारा ॥
कहहु यथा जानकी बिवाहा ॥ राज तजा सो दूषण काहा ॥
बन बसि कीन्हेउ चरित अपारा ॥ कहहु नाथ जिमि रावण मारा ॥
राज बैठि कीन्हों बहु लीला ॥ सकल कहहु शंकर सुखशीला ॥

दोहा — बहुरि कहहु करुणायतन कीन्ह जो अचरज राम ॥
प्रजा सहित रघुवंश मणि किमि गवने निज धाम ॥ ११८

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी ॥ जेहि बिज्ञान मगन मुनि ज्ञानी ॥
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा ॥ पुनि सब बरणहु सहित बिभागा ॥
औरो राम रहस्य अनेका ॥ कहहु नाथ अति बिमल बिवेका ॥
जो प्रभु मैं पूछा नहि होई ॥ सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥
तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना ॥ आन जीव पामर का जाना ॥
प्रश्न उमा की सहज सुहाई ॥ छल बिहीन सुनि शिव मन भाई ॥
हरि हिय राम चरित सब आये ॥ प्रेम पुलकि लोचन जल छाये ॥

श्री रघुनाथ रूप उर आवा ॥ परमानंद अमित सुख पावा ॥

दोहा — मगन ध्यान रस दंड युग पुनि मन बाहिर कीन्ह ।
रघुपति चरित महेश तब हरषित बरने लीन्ह ॥ ११९

झूठौ सत्य जाहि बिनु जाने ॥ जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने ॥
जेहि जाने जग जाइ हिराई ॥ जागे यथा सपन भ्रम जाई ॥
बंदौ बालरूप सोइ रामू ॥ ६ सब विधि सुलभ जपत जसनामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी ॥ द्रवौ सो दसरथ अजिर बिहारी ॥
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी ॥ हरषि सुधासम गिरा उचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी ॥ तुम समान नहि कोउ उपकारी ॥
पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ॥ सकल लोक यश पावन गंगा ॥
तुम रघुवीर चरण अनुरागी ॥ कीन्हेउ प्रश्न जगत हित लागी ॥

दोहा — रामकृपाते पार्वती सपनेहु तव मन मांहि ॥ ६
शोक मोह संदेह भ्रम मम विचार कछु नाहि ॥ १२०

तदपि अशंका कीन्हेउ सोई ॥ कहत सुनत सब कर हित होई ॥
जिन हरि कथा सुनी नहिं काना ॥ श्रवन रंध्र अहि भवन समाना ॥
नयनन संत दरश नहि देखा ॥ लोचन मोर पंख कर लेखा ॥
ते शिर कटु तूमर सम तूला ॥ जे न नमत हरि गुरु पद मूला ॥
जिन हरि भक्ति हृदय नहिं आनी ॥ जीवत सव समान ते प्रानी ॥
जो नहि करहिं राम गुण गाना ॥ जीह सु दादुर जीह समाना ॥
कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती ॥ सुनि हरि चरित न जो हरषाती ॥
गिरिजा सुनहु राम कर लीला ॥ सुर हित दनुज विमोहन शीला ॥

दोहा — राम कथा सुर धेनु सम सेवत सब सुख दानि ॥
संत सभा सुरलोक सम कौन सुने अस जानि ॥ १२१

राम कथा सुन्दर करतारी ॥ ६ संशय विहंग उड़ावन हारी ॥
राम कथा कलि विटप कुठारी ॥ सादर सुनु गिरिराज कुमारी ॥

राम नाम गुण चरित सुहाये। जन्म कर्म अगणित श्रुति गाये॥
जथा अनन्त राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुण नाना॥
तदपि जथा श्रुत जस मति मोरी। कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी॥
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई। सुखद सन्त सम्मत मोहि भाई॥
एक बात नहिं मोहि सोहानी। यदपि मोह बस कहहु भवानी॥
तुम जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना॥

दोहा॥ कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिशाच।
पाखंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साँच॥ १२२

अज्ञ अकोविद अन्ध अभागी। काई विषय मुकुर मन लागी॥
लम्पट कपटी कुटिल विशेषी। सपनेहु संत सभा नहिं देखी॥
कहहिं ते वेद असम्मत बानी। जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी॥
मुकुर मलिन अरु नयन विहीना। रामरूप देखहिं किमि दीना॥
जिनके अगुण न सगुण विवेका। जल्पहिं कल्पित वचन अनेका॥
हरि माया बश जगत भ्रमाहीं। तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं॥
बातुल भूत विवस मतवारे। ते नहिं बोलहिं वचन संभारे॥
जिन कृत महा मोह मद पाना। तिन कर कहा करिय नहिं काना॥

सोरठा॥ अस निज हृदय विचारि तजि संशय भजु राम पद॥
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रवि कर वचन मम॥ १०

सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा॥
अगुण अरूप अलख अज जोई। भक्त प्रेम वश सगुण सो होई॥
जो गुण रहित सगुण सो कैसे। जल हिम उपल विलग नहिं जैसे॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिय विमोह प्रसंगा॥
राम सच्चिदानंद दिनेशा। नहिं तहँ मोह निशा लव लेशा॥
सहज प्रकाश रूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि विज्ञान विहाना॥
हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना॥ परमानन्द परेश पुराना॥

दोहा— पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुल मणि मम स्वामि सोइ कहि शिव नायउ माथ॥ १२३

निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी॥
यथा गगन घन पटल निहारी। झाँपेउ भानु कहहिं कुविचारी॥
चितव जो लोचन अंगुलि लाये। प्रगट युगल शशि तेहि के भाये॥
उमा राम विषयक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा॥
विषय करन सुर जीव समेता। सकल एक ते एक सचेता॥
सब कर परम प्रकाशक जोई। राम अनादि अवधपति सोई॥
जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू। मायाधीश ज्ञान गुण धामू॥
जासु सत्यता ते जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥

दोहा— रजत सीप महँ भास जिमि यथा भानु कर वारि।
यदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकै कोउ टारि॥ १२४

इहि विधि जग हरि आश्रित रहई। यदपि असत्य देत दुख अहई॥
ज्यों सपने सिर काटै कोई॥ विनु जागे दुख दूरि न होई॥
जासु कृपा अस भ्रम मिट जाई। गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमान निगम अस गावा॥
विनु पद चलै सुनै विनु काना॥ कर विनु कर्म करै विधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। विनु वाणी वक्ता बड़ योगी॥
तनु विनु परस नयन विनु देखा। ग्रहै घ्राण विनु वास अशेषा॥
अस सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं वरनी॥

जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान॥
सोइ दशरथ सुत भक्त हित कोशलपति भगवान॥ १२५

काशी मरत जन्तु अवलोकी। जासु नाम बल करौं विशोकी॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुवर सब उर अन्तरजामी॥

बिबसहु जासु नाम नर कहहीं	जन्म अनेक संचित अघ दहहीं
सादर सुमिरन जो नर करहीं।	भव वारिधि गोपद इव तरहीं।
राम सो परमातमा भवानी॥	तहं भ्रम अति अविहित तव बानी
अस संशय आनत उर माहीं॥	ज्ञान बिराग सकल गुन जाहीं
सुनि शिव के भ्रम भंजन वचना	मिटि गई सब कुतर्क की रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती	दारुण असंभावना बीती॥

दोहा पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि
बोली गिरिजा बचन वर मनहुं प्रेम रस सानि॥ १२६

शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी	मिटा मोह शरदातप भारी॥
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ॥	राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ
नाथ कृपा अब गयेउ बिषादा।	सुखी भइउं प्रभु चरण प्रसादा
अब मोहिं आपनि किंकर जानी	यदपि सहज जड़ नारि अयानी
प्रथम जो मैं पूंछा सोइ कहहू॥	जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू॥
राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी॥	सर्व शांत सब उर पुर बासी॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू॥	मोहि समझाय कहहु वृषकेतू
उमा वचन सुनि परम विनीता	रामकथा पर प्रीति पुनीता॥

दोहा हिय हरषे कामारि तब शंकर सहज सुजान॥
बहु विधि उमहिं प्रसंसि पुनि बोले कृपा निधान १२७

सोरठा सुनु अस कथा भवानि राम चरित मानस विमल
कहा भुसुंडि बखानि सुना विहंग नायक गरुड़ ११
सोइ संवाद उदार जेहि विधि भा आगे कहब॥
सुनहु राम अवतार चरित परम सुन्दर अनघ॥ १२
हरि गुण नाम अपार कथा रूप अगणित अमित
मैं निज मति अनुसार कहौं उमा सादर सुनहु॥ १३

सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाये	विपुल विशद निगमागम गाये

हरिअवतार हेतु जेहि होई ॥ ४ इदमित्थं कहि जाइ न सोई॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी ॥ मत हमार अस सुनहु भवानी
तदपि संत मुनि वेद पुराना ॥ जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना
तस मैं सुमुखि सुनावउं तोही॥ समुझि परे जस कारण मोही ॥
जब जब होइ धर्म की हानी॥ बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
करहिं अनीति जाय नहिं बरनी सीदहिं विप्र धेनु सुर धरनी ॥
तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

दोहा असुर मारि थापहिं सुरन्हि राखहिं निज श्रुति सेतु
जग विस्तारहिं विशद यश रामजन्म कर हेतु ॥ १२८

सो यश गाइ भक्त भव तरहीं ॥ कृपासिंधु जनहित तनु धरहीं
राम जन्म के हेतु अनेका ॥ परम विचित्र एक ते एका ॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी॥ सावधान सुनु सुमति भवानी
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ ॥ जय अरु विजय जान सब कोऊ
विप्र श्राप ते दोनौं भाई ॥ ५ तामस असुर देह तिन पाई ॥
कनककशिपु अरु हाटकलोचन जगत विदित सुरपति मदमोचन
विजई समर वीर विख्याता ॥ धरि वराह वपु एक निपाता ॥
होइ नरहरि पुनि दूसर मारा जन प्रहलाद सुयश विस्तारा॥

दोहा भये निशाचर जाय तब महावीर बलवान ॥ ५ ॥
कुम्भकर्ण रावण सुभट सुर विजई जग जान १२९

मुक्त न भयेउ हते भगवाना॥ तीन जन्म द्विज वचन प्रमाना
एक वार तिनके हित लागी धरेउ शरीर भक्त अनुरागी ॥
कश्यप अदिति तहां पितु माता दशरथ कौशल्या विख्याता
एक कल्प एहि विधि अवतारा चरित पवित्र किये संसारा ॥
एक कल्प सुर देखि दुखारे समर जलंधर सन सब हारे॥
शंभु कीन्ह संग्राम अपारा ॥ दनुज महाबल मरै न मारा ॥

परमसती असुराधिप नारी ॥ तेहि बल ताहि न जीत पुरारी ॥

दोहा छल करि टारेउ तासु व्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह
जब तेहि जानेउ मर्म तब श्राप कोप करि दीन्ह १२७

तासु श्राप हरि कीन्ह प्रमाना। कौतुक निधि कृपाल भगवाना
तहां जलंधर रावण भयेऊ ॥ रण हति राम परम पद दयेऊ ॥
एक जन्म कर कारण एहा। जेहि लगि राम धरी नर देहा ॥
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी ॥ सुनि २ वरनी कविन घनेरी ॥
नारद श्राप दीन्ह यक बारा ॥ कल्प एक लगि तेहि अवतारा
गिरजा चकित भई सुनि बानी। नारद विष्णु भक्त मुनि ज्ञानी ॥
कारण कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी ॥ मुनि मन मोह सो अचरज भारी

विष्णु भगवान को जलधर की स्त्री वृंदा का पति व्रत भङ्ग करके जलंधर का
तेजहत करना



श्रीमहादेवजी और जलंधर का युद्ध



दोहा बोले विहसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ ॥
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि क्षण होइ ॥ १३९
सोरठा कहौं राम गुण गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ॥
भवभंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥ १४

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि । बह समीप सुरसरित सुहावनि ।
आश्रम परम पुनीत सुहावा ॥ देखि देवऋषि मन अति भावा ।
निरखि शैल सरि विपिन विभागा । भयउ रमापति पद अनुरागा ॥
सुमिरत हरिहिं श्राप गति बाधी । सहज विमल मन लागि समाधी ।
मुनि गति देखि सुरेश डराना ॥ कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना ।
सहित सहाय जाहु मम हेतू । चलेउ हरषि हिय जलचरकेतू ।
सुनासीर मन महं अति त्रासा ॥ चहत देवऋषि मम पुर वासा ।
जे कामी लोलुप जग माहीं ॥ कुटिल काक इव सबहिं डराहीं ।
दोहा सूख हाड़ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज॥

छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज १३२

तेहि आश्रमहि मदन जब गयेऊ। निज माया वसंत निरमयेऊ॥
कुसुमित विविध विटप बहु रंगा। कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा॥
चली सुहावनि त्रिविध बयारी॥ काम कृशानु बढ़ावनि हारी॥
रंभादिक सुरनारि नवीना॥ सकल असमसर कला प्रवीना॥
करहिं गान बहु तान तरंगा॥ बहुविधि क्रीड़हि पानि पतंगा॥
देखि सहाय मदन हरषाना॥ कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना॥
काम कला कछु मुनिहिं न ब्यापी। निज भय डरेउ मनोभव पापी॥
सीम कि चाप सकै कोउ तासू। बड़ रखवार रमापति जासू॥

दोहा — सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन।
गहेसि जाइ मुनि चरण कहि सुठि आरत बैन १३३

भयेउ न नारद मन कछु रोषा। कहि प्रिय वचन काम परितोषा॥
नाय चरण शिर आयसु पाई॥ गयेउ मदन तब सहित सहाऊ॥
मुनि सुशीलता आपनि करनी। सुरपति सभा जाय सब बरनी॥
सुनि सबके मन अचरज आवा। मुनिहिं प्रशंसि हरहिं शिर नावा॥
तब नारद गवने शिव पाहीं॥ जीता काम अहमिति मन माहीं॥
मार चरित शंकरहि सुनावा। अति प्रिय जानि महेश सिखावा॥
बारबार विनवउं मुनि तोही॥ जिमि यह कथा सुनायउ मोही॥
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहू। चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहू॥

दोहा — शंभु दीन उपदेश हित नहिं नारदहि सुहान॥
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान॥॥ १३४

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई॥ करै अन्यथा अस नहिं कोई॥
शंभु वचन मुनि मन नहिं भाये। तब विरंचि के लोक सिधाये॥
एक बार करतल बर बीना॥ गावत हरिगुण गान प्रवीना॥
क्षीरसिंधु गवने मुनि नाथा॥ जहं बस श्रीनिवास श्रुति माथा॥

हरषि मिले उठि रमा निकेता। बैठे आसन ऋषय समेता॥
बोले बिहंसि चराचर राया॥ बहुत दिनन्हि कीन्ही मुनि दाया
कामचरित नारद सब भाषे॥ यद्यपि प्रथम वरजि शिव राखे।
अति प्रचण्ड रघुपति की माया। जेहि न मोह अस को जग जाया।

दोहा। रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्री भगवान॥
तुम्हरे सुमिरन ते मिटहिं मोह मार मद मान॥ १३५

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके। ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके।
ब्रह्मचर्य्य व्रत रत मति धीरा॥ तुमहिं कि करहि मनोभव पीरा
नारद कहेउ सहित अभिमाना। कृपा तुम्हार सकल भगवाना।
करुणानिधि मन दीख विचारी। उर अंकुरेउ गर्व तरु भारी॥ ७॥
वेगि सो मैं डारिहौं उपारी॥ पण हमार सेवक हितकारी
मुनि कर हित मम कौतुक होई। अवसि उपाय करब मैं सोई॥
तब नारद हरि पद शिर नाई॥ चले हृदय अहमति अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी॥ सुनहु कठिन करनी तेहि केरी

दोहा। विरचेउ मग महं नगर तेहि सत योजन विस्तार
श्रीनिवास पुर ते अधिक रचना विविध प्रकार १३६

बसहिं नगर सुन्दर नर नारी॥ जनु बहु मनसिज रति तनु धारी
तेहि पुर बसै शील निधि राजा। अगणित हय गज सेन समाजा॥
शत सुरेश सम विभव विलासा। रूप तेज बल नीति निवासा॥
विश्व मोहनी तासु कुमारी॥ श्री विमोह जेहि रूप निहारी
सो हरि माया सब गुण खानी। शोभा तासु कि जाइ बखानी॥
करै स्वयम्बर सो नृप बाला। आये तहं अगणित महिपाला
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ। पुरवासिन सब पूछत भयऊ
सुनि सब चरित भूप गृह आये। करि पूजा नृप मुनि बैठाये॥

दोहा। आनि दिखाई नारदहि भूपति राजकुमारि॥

कहहु नाथ गुण दोष सब इहि कर हृदय विचारि ॥ १३७

देखि रूप मुनि विरति बिसारी ॥ बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
लक्षण तासु विलोकि भुलाने हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने ॥
जो इहि वरै अमर सो होई ॥ समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही ॥ वरै शील निधि कन्या जाही ॥
लक्षण सब विचार उर राखे ॥ कछुक बनाइ भूप सन भाषे ॥
सुता सुलक्षण कहि नृप पाहीं नारद चले सोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ यतन विचारी जेहि प्रकार मोहिं वरै कुमारी ॥
जप तप कछु न होइ यहि काला हे विधि मिलै कवन विधि बाला

दोहा इहि अवसर चाहिय परम शोभा रूप विशाल ॥
जो विलोकि रीझै कुंवरि नव मेलै जयमाल ॥ १३८

हरि सन मांगौ सुन्दरताई ॥ होइहि जात गहरु अति भाई ॥
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ इहि अवसर सहाय सो होऊ
बहु विधि विनय कीन्ह तेहि काला प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
प्रभु विलोकि मुनि नयन जुड़ाने होइहि काज हिये हरषाने ॥
अति आरत कहि कथा सुनाई करहु कृपा प्रभु होउ सहाई ॥
आपन रूप देउ प्रभु मोही ॥ आन भांति नहिं पावउं ओही ॥
जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा करो सो वेगि दास मैं तोरा ॥
निज माया बल देखि विशाला हिय हंसि बोले दीन दयाला ॥

दोहा जेहि विधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार
सोइ हम करब न आन कछु वचन न मृषा हमार १३९

कुपथ मांगु रुज व्याकुल रोगी वैद न देइ सुनहु मुनि योगी
इहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ कहि अस अंतर हित प्रभु भयेऊ
माया विवश भये मुनि मूढ़ा ॥ समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा
गवने तुरत तहां ऋषिराई ॥ जहां स्वयंवर भूमि बनाई ॥

निजनिज आसन बैठे राजा॥	बहु बनाव करि सहित समाजा॥
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे॥	मोहि तजि आन वरिहि नहिं भोरे॥
मुनि हित कारण कृपा निधाना॥	दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना॥
सो चरित्र लषि काहु न पावा॥	नारद जानि सबहि शिर नावा॥

दोहा॥ रहे तहां दुइ रुद्र गण ते जानहिं सब भेउ॥
विप्र भेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ॥ १४०

जेहि समाज बैठे मुनि जाई॥	हृदय रूप अहमिति अधिकाई॥
तहं बैठे महेश गण दोऊ॥	विप्र भेष गति लखै न कोऊ॥
करहिं कूट नारदहिं सुनाई॥	नीक दीन्ह हरि सुन्दरताई॥
रीझहि राज कुंवरि छवि देखी॥	इनहिं वरिहि हरि जान विशेषी॥
सुनहि मोह मन हाथ पराये॥	हंसहिं शंभु गण अति सचु पाये॥
यदपि सुनहिं मुनि अटपट बानी॥	समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी॥
काहु न लखा सो चरित विशेषी॥	सो स्वरूप नृप कन्या देखी॥
मर्कट वदन भयंकर देही॥	देखत हृदय क्रोध भा तेही॥

दोहा॥ सखी संग लै कुंवरि तब चलि जनु राज मराल॥
देखत फिरै महीप सब कर सरोज जयमाल॥ १४१

जेहि दिशि बैठे नारद फूली॥	सो दिशि तेइ न विलोकी भूली॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं॥	देखि दशा हर गण मुसकाहीं॥
धरि नृप तनु तहं गयेउ कृपाला॥	कुंवरि हरषि मेलेउ जयमाला॥
दुलहिन लैगो लक्ष्मि निवासा॥	नृप समाज सब भयेउ निरासा॥
मुनि अति विकल मोह मति नाठी॥	मणि गिरि गई छूटि जनु गांठी॥
तब हरगण बोले मुसकाई॥	निज मुख मुकुर विलोकहु जाई॥
असकहि दोउ भागे भय भारी॥	वदन दीख मुनि वारि निहारी॥
भेष विलोकि क्रोध अति बाढ़ा॥	तिनहिं श्राप दीन्हा अति गाढ़ा॥

दोहा॥ होहु निशाचर जाइ तुम कपटी पापी दोउ॥

हँसब हमहिं सो लेहु फल बहुरि हमेउ मुनि कोउ १४२

सुनि जल दीख रूप निज पावा	तदपि हृदय संतोष न आवा॥
फरकत अधर कोप मन माहीं	सपदि चले कमला पति पाहीं
देहौं स्राप कि मरिहौं जाई॥	जगत मोरि उपहास कराई॥
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी॥	संग रमा सोइ राज कुमारी॥
बोले मधुर वचन सुर साँई॥	मुनि कहँ चले विकल की नाँई
सुनत वचन उपजा अति क्रोधा	माया वस न रहा मन बोधा॥
पर संपदा सकहु नहिं देखी	तुमरे ईर्षा कपट विशेषी॥
मथत सिंधु रुद्रहिं बौराये॥	सुरन प्रेरि विष पान करायेहु॥

दोहा। असुर सुरा विष शंकरहिं आपु रमा मणि चारु
स्वारथ साधक कुटिल तुम सदा कपट व्यवहार १४३

परम स्वतंत्र न शिर पर कोई॥	भावे मनहिं करहु तुम सोई॥
भलेहिं मंद मंदहि भल करहू	विस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू
डहकि डहकि परिचेहु सब काहू	अति अशंक मन सदा उछाहू॥
कर्म शुभाशुभ तुमहिं न बाधा॥	अब लगि तुमहिं न काहु साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा॥	पावहु गे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मोहिं जवन धरि देहा	सोइ तनु धरहु श्राप मम येहा॥
कपि आकृति तुम कीन्ह हमारी	करिहहिं कीस सहाइ तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम भारी	नारि विरह तुम होउ दुखारी॥

दोहा। श्राप शीश धरि हरषि हिय प्रभु सुर कारज कीन्ह
निज माया की प्रबलता हरषि कृपा निधि लीन्ह १४४

जब हरि माया दूरि निवारी॥	नहिं तहँ रमा न राज कुमारी॥
तब मुनि अति सभीत हरि चरणा॥	गहे पाहि प्रणतारति हरणा॥
मृषा होउ मम श्राप कृपाला	मम इच्छा कह दीन दयाला॥
मैं दुर्वचन कहेउ बहुतेरे॥ ६	कह मुनि पाप मिटहिं किमि मेरे

जपहु जाइ शंकर शतनामा॥ होइहि हृदय तुरत विश्रामा॥
कोउ नहिं शिव समान प्रिय मोरे। अस परतीति तजहु जनि भोरे॥
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी॥ सो न पाव मुनि भक्ति तुम्हारी॥
अस उर धरि महि विचरहु जाई। अब न तुमहिं माया नियराई॥

दोहा॥ बहु विधि मुनिहि प्रबोध प्रभु तब भे अन्तर्ध्यान॥
सत्यलोक नारद चले करत राम गुण गान॥ १४५

हरगण मुनिहि जात पथ देखी। विगत मोह मन हर्ष विशेषी॥
अति सभीत नारद पहं आये॥ गहि पद आरत वचन सुनाये॥
हरगण हम न विप्र मुनिराया। बड़ अपराध कीन्ह फल पाया॥
श्राप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीन दयाला॥
निशिचर जाय होउ तुम दोऊ। वैभव विपुल तेज बल होऊ॥
भुजबल विश्व जितब तुम जहिआ। धरिहहिं विष्णु मनुज तनु तहिआ॥
समर मरण हरि हाथ तुम्हारा। होइहहु मुक्त न पुनि संसारा॥
चले युगल मुनि पद सिर नाई। भये निशाचर कालहिं पाई॥

दोहा॥ एक कल्प इहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार॥
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भूभार॥ १४६

इहि विधि जन्म कर्म हरि केरे। सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे॥
कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं। चारु चरित नाना विधि करहीं॥
तब तब कथा मुनीशन गाई॥ परम पुनीत विचित्र सुहाई॥
विविध प्रसंग अनूप बखाने। कहहिं न सुनि आचरज सयाने॥
हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहु विधि श्रुति संता॥
रामचन्द्र के चरित सुहाये॥ कल्प कोटि लगि जांहि न गाये॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी॥ हरि माया मोहहिं मुनि ज्ञानी॥
प्रभु कौतुकी प्रणत हितकारी। सेवत सुलभ सकल दुखहारी॥

सोरठा॥ सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल

अस विचार मन माहिं भजहिं असमाया पतिहि १५

अपर हेतु सुनु शैल कुमारी ॥ कहौं विचित्र कथा विस्तारी ॥
जेहि कारन अज अगुण अनूपा ब्रह्म भये कोशल पुर भूपा ॥
जो प्रभु विपिन फिरत तुम देखा बंधु समेत किये मुनि भेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी सती शरीर रहिउ बौराना ॥
अजहुं न छाया मिटत तुम्हारी तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी॥
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा सो सब कहिहौं मति अनुसारा
भरद्वाज मुनि शंकर वानी ॥ सकुचि सप्रेम उमा मुसकानी
लगे बहुरि वरनै वृषकेतू ॥ सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

दोहा सो मैं तुम सन कहौं सब सुनु मुनीश मन लाइ
राम कथा कलि मल हरणि मंगल करनि सुहाइ १४७

स्वायंभू मनु अरु शत रूपा ॥ जिनते भइ नर सृष्टि अनूपा ॥
दम्पति धरम आचरण नीका अजहुं गाय श्रुति जिनकी लीका
नृप उत्तान पाद सुत तासू ॥ ध्रुव हरि भक्त भये सुत जासू॥
लघु सुत नाम प्रियाव्रत ताही वेद पुरान प्रशंसत जाही ॥१॥
देवहूती पुनि तासु कुमारी ॥ जो मुनि कर्दम की प्रिय नारी
आदि देव प्रभु दीनदयाला जठर जरेउ जेहि कपिल कृपाला
सांख्य शास्त्र जिन प्रगट बखाना तत्व विचार निपुण भगवाना
तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला प्रभु आयसु बहु विधि प्रतिपाला

सो० होइ न विषय विराग भवन बसत भा चौथपन
हृदय बहुत दुख लाग जन्म गयेउ हरि भक्ति बिन १६

बरबस राज सुतहिं तब दीन्हा नारि समेत गवन बन कीन्हा ॥
तीरथ बर नैमिष विख्याता अति पुनीत साधक सिधि दाता॥
बसहिं जहां मुनि सिद्ध समाजा तहं हिय हरषि चले मनु राजा॥
पंथ जात सोहहिं मति धीरा॥ ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा ॥

पहुंचे जाइ धेनुमति तीरा ॥ हरषि नहाने निर्मल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनिज्ञानी धर्म धुरंधर न्दप ऋषि जानी ॥
जहं जहं तीरथ रहे सुहाये ॥ मुनिन सकल सादर कर वाये
कृश शरीर मुनि पट परिधाना संतसभा नित सुनहिं पुराना ॥

दोहा द्वादश अक्षर मंत्र वर जपहिं सहित अनुराग ॥
वासुदेव पद पंकरुह दम्पति मन अति लाग १४६

करहिं अहार शाक फल कन्दा सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे बारि अहार मूल फल त्यागे
उर अभिलाष निरंतर होई देखिय नयन परम प्रभु सोई
अगुण अखण्ड अनन्त अनादी जेहि चिंतहिं परमारथ वादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा ॥ चिदानंद निरुपाधि अनूपा ॥
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना उपजहिं जासु अंश ते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवक वश अहहीं ॥ भक्ति हेतु लीला तनु गहहीं ॥
जो यह वचन सत्य श्रुति भाषा तौ हमार पूजिहि अभिलाषा

दोहा इहि विधि बीते वर्ष षट सहस्र वारि आहार ॥
सम्वत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥ १४८

वरष सहस दश त्यागेउ सोऊ ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥
विधि हरिहर तप देख अपारा मनु समीप आये बहु बारा ॥
मांगहु वर बहु भांति लुभाये परम धीर नहिं चलहिं चलाये
अस्थि मात्र होइ रहा शरीरा तदपि मनागपि नहिं मनपीरा
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी गति अनन्य तापस न्दपरानी ॥
मांगु मांगु वर भइ नभ वानी परम गंभीर कृपामृत सानी ॥
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई श्रवण रंध्र होइ उर जब आई ॥
हृष्ट पुष्ट तन भयेउ सुहाये ॥ मानहु अबहिं भवन ते आये ॥

दोहा श्रवण सुधा सम वचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात

बोले मनु कर दंडवत प्रेम न हृदय समात ॥ १५०

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू ॥ विधि हरि हर वंदित पद रेनू ॥
सेवत सुलभ सकल सुखदायक ॥ प्रणत पाल सचराचर नायक ॥
जो अनाथ हित हमपर नेहू ॥ तौ प्रसन्न होइ यह वर देहू ॥
जो स्वरूप बस शिव मन माहीं ॥ जेहि कारण मुनि यतन कराहीं ॥
जो भुसुंडि मन मानस हंसा ॥ अगुण सगुण जेहि निगम प्रशंसा ॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन ॥ कृपा करहु प्रणतारति मोचन ॥
दंपति वचन प्रेम प्रिय लागे ॥ मृदुल विनीत प्रेम रस पागे ॥
भक्तिवछल प्रभु कृपानिधाना ॥ विश्ववास प्रगटे भगवाना ॥

दोहा। नील सरोरुह नीलमणि नीर धीर धर श्याम
लाजहिं तनु शोभा निरखि कोटि कोटि शतकाम १५१

शरद मयंक वदन छवि सीवां ॥ चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवां ॥
अधर अरुण रद सुन्दर नासा ॥ विधु कर निकर विनिंदक हासा ॥
नव अंबुज अंबक छवि नीकी ॥ चितवनि ललित भावती जीकी ॥
भृकुटि मनोज चाप छवि हारी ॥ तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा ॥ कुटिल केश जनु मधुप समाजा ॥
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला ॥ पदकि अहार भूषण मणिजाला ॥
केहरि कंधर चारु जनेऊ ॥ बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करि कर सरिस सुभग भुजदंडा ॥ कटि निषंग कर सर को दंडा ॥

दोहा। तड़ित विनिंदक पीत पट उदर रेख वर तीनि ॥
नाभि मनोहर लेति जनु मुनि मन भवर छवि छीन १५२

पद राजीव वरनि नहिं जाहीं ॥ मुनि मन मधुप बसहिं जेहि माहीं ॥
वाम भाग शोभित अनुकूला ॥ आदि शक्ति छवि निधि जग मूला ॥
जासु अंश उपजहिं गुणखानी ॥ अगणित उमा रमा ब्रह्माणी ॥
भृकुटि विलास जासु जग होई ॥ राम वाम दिशि सीता सोई ॥

छबि समुन्द्र हरि रूप बिलोकी। इकटक रहे नयन पट रोकी॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा। तृप्ति न मानहिं मनु शत रूपा॥
हर्ष विवस तनु दशा भुलानी। परे दण्ड इव गहि पद पानी॥
सिर परजे प्रभु निज कर कंजा। तुरंत उठाये करुणा पुंजा॥

दोहा॰ बोले कृपा निधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि।
मागहु वर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि॥ १५३

सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी। धरि धीरज बोले मृदु बानी॥
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे। अब पूजे सब काम हमारे॥
एक लालसा बडि मन माहीं। सुगम अगम कहि जात सो नाहीं॥
तुमहिं देखि अति सुगम गुसाईं। अगम लाग मोहि निज कृपनाई॥
यथा दरिद्र विबुध तरु पाई। बहु सम्पति मागत सकुचाई॥
तासु प्रभाव न जान सोई॥ तथा हृदय मम संशय होई॥
सो तुम जानहु अन्तर यामी॥ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी॥
सकुच विहाइ मागु नृप मोही। मोरे नहिं अदेय कछु तोही॥

दोहा॰ दानि शिरोमणि कृपानिधि नाथ कहौं सत भाव।
चाहौं तुमहिं समान सुत प्रभु सन कवन दुराव॥ १५४

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुणानिधि बोले॥
आप सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैं आई॥
शतरूपहिं बिलोकि कर जोरे। देवि मागु वर जो रुचि तोरे॥
जो वर नाथ चतुर नृप मागा॥ सोइ कृपालु मोहि अति प्रिय लागा॥
प्रभु परन्तु सुठि होति ढिठाई॥ यदपि भगत हित तुमहिं सुहाई॥
तुम ब्रह्मादि जनक जग स्वामी। ब्रह्म सकल उर अन्तर यामी॥
अस समुझत मन संशय होई। कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई॥
जे निज भक्त नाथ तव अहहीं। जो सुख पावहिं जो गति लहहीं॥

दो॰ सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरण सनेह

सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु मोहि कृपा करि देहु ॥ १५५ ॥

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना। कृपासिंधु बोले मृदु बचना ॥
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं। मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं ॥
मातु विवेक अलौकिक तोरे। कबहुं न मिटहि अनुग्रह मोरे ॥
बंदि चरण मनु कहेउ बहोरी। अवर एक बिनती प्रभु मोरी ॥
सुत विषयक तव पद रत होऊ। मोहि बरु मूढ़ कहै किन कोऊ ॥
मणि बिनु फणि जिमि जल बिनु मीना। मम जीवन तिमि तुमहि अधीना ॥
अस वर मांगि चरण गहि रहेऊ। एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ ॥
अब तुम मम अनुसासन मानी। बसहु जाइ सुरपति रजधानी ॥

सोरठा — तहं करि भोग विलास तात गये कछु काल पुनि ।
होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत ॥ १८ ॥

इच्छामय नर भेष सवारे। होइहों प्रगट निकेत तुम्हारे ॥
अंशन सहित देह धर ताता। करिहों चरित भक्त सुखदाता ॥
जे सुनि सादर नर बड़ भागी। भव तरिहहिं ममता मद त्यागी ॥
आदि शक्ति जेहि जग उपजाया। सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा ॥
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना। अंतर्ध्यान भये भगवाना ॥
दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला। तेहि आश्रम निवसे कछु काला ॥
समय पाइ तनु तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति वासा ॥

दोहा — इह इतिहास पुनीत अति उमहि कहेउ वृषकेतु ।
भरद्वाज सुनि अपर मुनि राम जन्म कर हेतु ॥ १५६ ॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति शंभु बखानी ॥
विश्व विदित इक केकय देसू। सत्यकेतु तहं बसै नरेसू ॥
धर्म धुरंधर नीति निधाना। तेज प्रताप शील बलवाना ॥
तेहि के भये युगल सुत बीरा। सब गुण धाम महा रणधीरा ॥

राजधानी जेठे सुत अहौ ॥ ५ ॥ नाम प्रताप भानु अस कहहौ ॥
अपर सुतहि अरि मर्दन नामा ॥ भुजबल अतुल अचल संग्रामा ॥
भाइहि भाइ परस्पर प्रीती ॥ सकल दोष छल वर्ज्जित रीती ॥
जेठे सुतहिं राज न्टप दीन्हा ॥ हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥

दोहा जब प्रताप रवि भयेउ न्टप फिरी दोहाई देश ॥ ५
प्रजापाल अति वेद विधि कतहुं नही अघ लेश १५७

न्टपहित कारक सचिव सुजाना ॥ नाम धर्म रुचि शुक्र समाना ॥
सचिव सयान बन्धु बल बीरा ॥ आपु प्रताप पुंज रणधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा ॥ ५ अमित सुभट सब समर जुझारा ॥
सेन बिलोकि राउ हरषाना ॥ अरु बाजे गहगहे निशाना ॥
विजय हेतु कटकाइ बनाई ॥ सुदिन साधि न्टप चलेउ बजाई ॥
जहंतहं परी अनेक लराई ॥ ५ जीते सकल भूप बरिआई ॥
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हा ॥ लै लै दण्ड छांडि न्टप कीन्हा ॥
सकल अवनि मण्डल तेहि काला ॥ एक प्रताप भानु महि पाला ॥

दोहा स्ववस विश्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रवेश
अर्थ धर्म कामादि सुख सेवहिं सबै नरेश ॥ ५ १५८

भूप प्रताप भानु बल पाई ॥ ५ कामधेनु भइ भूमि सुहाई ॥
सब दुख वर्ज्जित प्रजा सुखारी ॥ धर्मशील सुन्दर नर नारी ॥
सचिव धर्म रुचि हरि पद प्रीती ॥ न्टपहित हेतु सिखावत नीती ॥
गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा ॥ करै सदा न्टप सब की सेवा ॥ ५
भूप धर्म जे वेद बखाने ॥ ५ ॥ सकल करै सादर सुख माने ॥
दिन प्रति देइ विविध विध दाना ॥ सुनै शास्त्र वर वेद पुराना ॥ ५ ॥
नाना वापी कूप तड़ागा ५ ॥ सुमन वाटिका सुन्दर बागा ५ ॥
विप्र भवन सुर भवन सुहाये ॥ सब तीरथनि विचित्र बनाये ॥

दोहा जहं लगि कहे पुराण श्रुति एक एक सब याग ॥

चार सहस्र सहस्र न्टप किये सहित अनुराग ॥ १५९

हृदय न कछु फल अनुसंधाना ॥ भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करै जो धर्म कर्म मन वानी ॥ वासुदेव अर्पित न्टप ज्ञानी ॥
चढ़ि वर वाजि वार यक राजा ॥ म्टगया कर सब साजि समाजा ॥
विंध्याचल गंभीर वन गयेऊ ॥ म्टग पुनीत बहु मारत भयेऊ ॥
फिरत विपिन न्टप दीख वराहू ॥ जनु वन दुरेउ शशिहि ग्रसि राहू ॥
बड़ विधु नहि समात मुख माहीं ॥ मनहुं क्रोध वस उगिलत नाहीं ॥
काल कराल दसन छवि गाई ॥ तनु विशाल पीवर अधिकाई ॥
घुरुघुरात हय आरव पाये ॥ चकित विलोकत कान उठाये ॥

दोहा नील महीधर शिखर सम देखि विशाल वराह ॥
चपरि चलेउ हय सुटकि न्टप हांकि न होइ निवाह ॥ १६०

आवत देखि अधिक रव वाजी ॥ चला वराह मरुत गति भाजी ॥
तुरत कीन्ह न्टप सर संधाना ॥ महि मिलि गयेउ विलोकत वाना ॥
तकि तकि तीर महीश चलावा ॥ करि छल सुअर शरीर बचावा ॥
प्रगटत दुरत जाय म्टग भागा ॥ रिस वस भूप चलेउ संग लागा ॥
गयेउ दूरि घन गहन वराहू ॥ जहं नाहीं गज वाजि निवाहू ॥
अति अकेल वन विपुल कलेशू ॥ तदपि न म्टग मग तजे नरेशू ॥
कोल विलोकि भूप बड़ धीरा ॥ भागि पैठि गिरि गुहा गंभीरा ॥
अगम देखि न्टप अति पछिताई ॥ फिरेउ महावन परेउ भुलाई ॥

दोहा खेद खिन्न त्टषित क्षुधित राजा वाजि समेत ॥
खोजत व्याकुल सरित सर जल विनु भयेउ अचेत ॥ १६१

फिरत विपिन आश्रम इक देखा ॥ तहं वस न्टपति कपट मुनि भेषा ॥
जासु देश न्टप लीन्ह छुड़ाई ॥ समर सेन तजि गयेउ पराई ॥
समय प्रताप भानु कर जानी ॥ आपन अति असमय अनुमाने ॥
गयेउ न ग्रह मन वहुत गलानी ॥ मिला न राजहिं न्टप अभिमानी ॥

रिस उर मारि रंक जिमि राजा ॥ विपिन वसै तापस के साजा ॥
तासु समीप गवन न्टप कीन्हा । यह प्रताप रवि तेइ तब चीन्हा ॥
राउ त्रषित नहिं सो पहिचाना । देखि सुभेष महा मुनि जाना ॥
उतरि तुरंग तें कीन्ह प्रणामा ॥ परम चतुर न कहेउ निज नामा ॥

दोहा भूपति त्रषित विलोकि तेइ सरवर दीन्ह दिखाइ
मज्जन पान समेत हय कीन्ह न्टपति हरषाइ ॥ १६२

गा श्रम सकल सुखी न्टप भयऊ । निज आश्रम तापस लै गयऊ
आसन दीन्ह अस्त रवि जानी ॥ पुनि तापस बोला मृदु बानी ॥
को तुम कस वन फिरहु अकेले । सुन्दर युवा जीव पर हेले ॥
चक्रवर्ति के लक्षण तोरे ॥ देखत दया लागि अति मोरे ॥
नाम प्रताप भानु अवनीसा ॥ तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा ॥
फिरत अहेरहिं परेउ भुलाई ॥ बड़े भाग्य देखेउ पद आई ॥
हम कहँ दुर्लभ दरश तुम्हारा ॥ जानत हौं कछु भल होनिहारा ॥
कह मुनि तात भयेउ अँधियारा । योजन सत्तर नगर तुम्हारा ॥

दोहा निशा घोर गंभीर वन पथ न सूझ सुजान ॥
वसहु आजु अस जानि तुम जायेउ होत विहान ॥ १६३
तुलसी जसि भवितव्यता तैसे मिलै सहाय ॥
आपुन आवै ताहि पै ताहि तहाँ लै जाय ॥ १६४

भलेहि नाथ आयसु धरि शीशा । बाँधि तुरग तरु बैठ महीशा ।
न्टप बहु भाँति प्रशंसेउ ताही ॥ चरण बंदि निज भाग्य सराही ॥
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई । जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई ॥
मोहि मुनीश सुत सेवक जानी । नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
तेहि न जान न्टप न्टपहिं सो जाना ॥ भूप सुहृदय सो कपट सयाना ॥
वैरी पुनि क्षत्री पुनि राजा ॥ छल बल कीन्ह चहै निज काजा ॥
समुझि राज सुख दुखित अराती । अवा अनल इव सुलगै छाती ॥

सरल वचन न्रप के सुनि काना ॥ बैर संभारि हृदय हरषाना ॥

दोहा — कपट बोरि बानी म्रदुल बोलेउ युक्ति समेत ॥
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत ॥ १६५

कह न्रप जे विज्ञान निधाना ॥ तुम सारिखे गलित अभिमाना ॥
सदा अपन पो रहहिं दुराये ॥ सब विधि कुशल कुभेष बनाये ॥
तेहि ते कहहिं सन्त श्रुति टेरे ॥ परम अकिंचन प्रिय हरि केरे ॥
तुम सम अधन भिखारि अगेहा ॥ होत विरंचि शिवहिं संदेहा ॥
जोसि सोसि तव चरण नमामी ॥ मोपर कृपा करिय अब स्वामी ॥
सहज प्रीति भूपति की देखी ॥ आप विषै विश्वास विशेषी ॥
सब प्रकार राजहिं अपनाई ॥ बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुनु सति भाव कहौं महिपाला ॥ इहां बसत बीते बड़ काला ॥

दोहा — अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनायो काहु ॥
लोक मान्यता अनल सम कर तप कानन राहु ॥ १६६

सोरठा — तुलसी देखि सुवेष भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ॥
सुन्दर केकिहिं पेखि वचन सुधा सम असन अहि ॥ १८

ताते गुप्त रहौं जग माहीं ॥ हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
प्रभु जानत सब विनय जनाये ॥ कहहु कवन सिधि लोक रिझाये ॥
तुम शुचि सुमति परम प्रिय मोरे ॥ प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे ॥
अब जो तात दुरावों तोही ॥ दारुण दोष बढ़ै अति मोही ॥
जिमि जिमि तापस कथेइ उदासा ॥ तिमि २ न्रपहि होइ विश्वासा ॥
देखा स्ववस कर्म मन बानी ॥ तब बोला तापस बक ध्यानी ॥
नाम हमार एक तनु भाई ॥ सुनि न्रप बोलेउ पुनि सिर नाई ॥
कहहु नाम कर अर्थ बखानी ॥ मोहि सेवक अति आपन जानी ॥

दोहा — आदि सृष्टि उपजी जबहि तब उतपति भइ मोरि ॥
नाम एक तनु हेत तेहि देह न धरी बहोरि ॥ १६७

जनि अचरज करहु मन माहीं ॥ सुत तपते दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तपबल जग स्रजे विधाता ॥ तप बल विष्णु भये परित्राता
तपबल शंभु करहि संहारा ॥ तपते अगम न कछु संसारा ॥
भयेउ न्रपहिं सुनि अति अनुरागा कथा पुरातन कहे सो लागा ॥
कर्म धर्म इतिहास अनेका ॥ करे निरूपन विरति विवेका ॥
उद्भव पालन प्रलय कहानी कहेसि अमित आचरज बखानी
सुनि महीश तापस वश भयऊ आपन नाम कहन तव लयेऊ
कह तापस न्रप जानों तोही ॥ कीन्हेउ कपट लागु भल मोरी

दोहा॥ सुनि महीश अस नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं न्रप
मोहि तोहि पर अति प्रीति परम चतुरता निरखि तव ॥ २०

नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा ॥ सत्यकेतु तव पिता नरेशा
गुरु प्रसाद सब जानिय राजा ॥ कहिय न आपन जानि अकाजा
देखि तात तव सहज सुधाई ॥ प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई
उपजि परी ममता मन मोरे ॥ कहेउ कथा निज पूछे तोरे
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं ॥ मांगु जो भूप भाव मन माहीं
सुनि सुवचन भूपति हरषाना ॥ गहि पद विनय कीन्ह विधि नाना
कृपासिन्धु मुनि दर्शन तोरे ॥ चारि पदारथ करतल मोरे
प्रभुहिं तथापि प्रसन्न विलोकी मांगि अगम वर होउ अशोकी

दोहा॥ जरा मरण दुख रहित तनु समर न जीते कोउ ॥
एक छत्र रिपु हीन महि राज कल्प शत होउ ॥ १६१

कह तापस न्रप ऐसेहि होऊ ॥ कारण एक कठिन सुनु सोऊ ॥
कालहु तव पद नाइहि शीशा एक विप्रकुल छाडि महीशा ॥
तपबल विप्र सदा वरियारा ॥ तिनके कोप न कोउ रखवारा ॥
जो विप्रन वश करहु नरेशा ॥ तो तव वश विधि विष्णु महेशा
चलन ब्रह्मकुल सें वरिआई ॥ सत्य कहों दोउ भुजा उठाई ॥

विप्र श्रापविनु सुन महि पाला॥ तोर नाश नहिं कवहु न काला
हरषेउ राउ वचन सुनि तासू॥ नाथ न होइ मोर अव नासू॥
तव प्रसाद प्रभु कृपा निधाना॥ मोकहं सर्व काल कल्याना॥

दोहा एवमस्तु कहि कपट मुनि बोला कुटिल वहोरि॥
मिलव हमार भुलाव जनि कहहु मोर नीरवोरि॥ १६९

ताते मैं तोहिं वरजौं राजा॥ कहे कथा तव परम अकाजा॥
छठे श्रवण यह परत कहानी॥ नास तुम्हार सत्य मम वानी॥
यह प्रगटे अथवा द्विज श्रापा॥ नास तोर सुनु भानु प्रतापा॥
आन उपाय निधन तव नाहीं जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं
सत्य नाथ पद गहि न्रप भाषा॥ द्विज गुरु कोप कहहु को राखा
राखै गुरु जो कोप विधाता॥ गुरु विरोध नहि कोउ जगत्राता
जौन चलव हम कहे तुम्हारे॥ होइ नाश नहिं शोच हमारे॥
एकहि डर डरपत मन मोरा॥ प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा॥

दोहा होहिं विप्र वस कवन विधि कहहु कृपा करि सोउ॥
तुम तजि दीनदयाल निज हितू न देखउं कोउ॥ १७०

सुनु न्रप विविध यतन जगमाहीं कष्ट साधि पुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई॥ तहां परन्तु एक कठिनाई॥
मम आधीन युक्ति न्रप सोई॥ मोर जाव तव नगर न होई॥
आजु लगे अरु जवतें भयऊं॥ काहू के ग्रह ग्राम न गयऊं
जौन जाव तव होइ अकाजू॥ वना आइ अस मंजस आजू॥
सुनि महीप बोले म्रदुवानी॥ नाथ निगम अस नीति वखानी
वड़े मनेह लघु पर करहहीं॥ गिरि निज सिर न सदा तृण धरहीं
जलधि अगाध मौलि वह फेनू॥ संतत धरनि धरत सिर रेनू॥

दोहा अस कहि गहें नरेश पद स्वामी होहु कृपालु॥
मोहि लगि दुख सहिय प्रभु सज्जन दीन दयालु॥ १७१

जानेसि न्टपहिं आपनआधीना	बोला तापस कपट प्रवीना ॥
सत्य कहौं भूपति सुन तोहीं ॥	जगमहं नाहि दुर्लभ कछु मोही
अवसि काज मैं करिहौ तोरा ॥	मनक्रम बचन भक्ति तू मोरा ॥
योगयुक्ति तप मंत्र प्रभाऊ ॥	फलै तबहिं जब करिय दुराऊ ॥
जो नरेश मैं करेउं रसोई ॥	तुम परसहु मोहि जानन कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई	सोई सोइ तव आयसु अनुसरई ॥
पुनि तिनके गृह जेवैं जोऊ ॥	तव वस होय भूप सुन सोऊ ॥
जाइ उपाय रचहु न्टप येहू ॥	संवत भरि संकल्प करेहू ॥

दोहा — नितनूतन द्विज सहस शत बरेउ सहित परिवार
मैं तुम्हरे संकल्प लगि दिनहि करब जेवनार ॥ १७२ ॥

इहि विधि भूप कष्ट अति थोरे	होइहहिं सकल विप्रवस तोरे ॥
करिहहिं विप्र होम मख सेवा	तेहि प्रसंग सहजहिं वस देवा ॥
और एक तोहि कहौं लखाऊं	मैं यहि भेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहं राया ॥	हरि आनब मैं करि निज माया ॥
तप बल तेहि करि आपु समाना	रखिहौं इहां बरष परमाना ॥
मैं धरि तासु भेष सुनु राजा ॥	सब विधि तोर संवारब काजा ॥
गै निशि बहुत शयन अब कीजे	मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥
मैं तपबल तोहि तुरंग समेता	पहुंचैहौं सोवतहि निकेता ॥

दोहा — मैं आउब सोइ भेष धरि पहिचानेहु तब मोहि ॥
जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनाऊं तोहि ॥ १७३ ॥

शयन कीन्ह न्टप आयसु मानी	आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई	सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥
कालकेतु निशिचर तहं आवा	जेहि शूकर होइ न्टपहि भुलावा ॥
परम मित्र तापस न्टप केरा ॥	जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के शत सुत अरु दश भाई	खल अति अजय देव दुखदाई ॥

प्रथमहि भूप समर सब मारे॥ विप्र सन्त सुर देखि दुखारे॥
तेहि खल पाछिल बैर संभारा॥ तापस न्रप मिलि मंत्र बिचारा॥
जेहि रिपुक्षय सोइ रचेसि उपाऊ भावी बस न जान कछु राऊ॥

दोहा रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिय न ताहु
अजहुं देत दुख रवि शशिहिं शिर अवशेषित राहु १७४

तापस न्रप निज सखहि निहारी हरषि मिलेउ उठि भयेउ सुखारी
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई यातुधान बोला सुख पाई॥
अब साधउं रिपु सुनहु नरेशा॥ जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा॥
परिहरि शोच रहहु तुम सोई॥ विनु औषध हिं व्याधि विधि खोई
कुल समेत रिपु मूल बहाई॥ चौथे दिवस मिलब मैं आई॥
तापस न्रपहि बहुत परितोषी चला महा कपटी अति रोषी॥
भानु प्रतापहि वाजि समेता॥ पहुंचायसि सो वतहि निकेता
न्रपहि नारि पह शयन कराई॥ हय ग्रह बांधेसि वाजि बनाई

दोहा राजा के उपरोहितहिं हरि लै गयउ बहोरि॥५॥
लै राखेसि गिरि खोह महं माया करि मति भोरि १७५

आपु विरंचि उपरोहित रूपा॥ परा जाय तेहि सेज अनूपा॥
जागेउ न्रप अन भयेउ बिहाना देखि भवन अति अचरज माना
सुन महिमा मन महं अनुमानी उठे गवहि जेहि जानन रानी॥
कानन गयेउ वाजि चढ़ि तेही॥ पुरनर नारि न जानेउ केही॥
गय याम जुग भूपति आवा॥ घर घर उत्सव बाजु बंधावा॥
उपरोहितहिं दीख जब राजा॥ चकित विलोकि सुमिर सोइ काज
युग सम न्रपहि गये दिन तीनी कपटी मुनि पद हरि मति लीनी
समय जानि उपरोहित आवा॥ न्रपहि मतो सब कहि समुझावा

दोहा न्रप हर्षे पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत॥
बरे तुरत शत सहस वर विप्र कुटम्ब समेत॥ १७६

उपरोहित जेवनार बनाई ॥ छरस चारि विधि जस श्रुति गाई
मायामय तेहि कीन्ह रसोई व्यंजन बहु गनि सकै न कोई
विविध मृगन कर आमिष रांधा तेहि महं विप्र मांस खल सांधा
भोजन कहं सब विप्र बुलाये ॥ पद पखारि सादर बैठाये ॥
परुसन लाग जबहिं महिपाला भई अकासवानी तेहि काला
विप्र वृंद उठि उठि गृह जाहू ॥ है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू
भयेउ रसोई भूसुर मांसू ॥ सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूप विकल मति मोह भुलानी भावीवस न आव मुख बानी ॥

दोहा॥ बोले विप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह विचार
जाइ निशाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ॥ १७७

छत्रबंधु तैं विप्र बुलाई ॥ घालेसि लिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धर्म हमारा ॥ जैहसि तै समेत परिवारा ॥
संवत मध्य नाश तव होऊ जलदाता न रहहि कुल कोऊ
नृप सुनि श्राप विकल अति त्रासा भई बहुरि वर गिरा अकासा ॥
विप्रन्ह श्राप विचारन्ह दीन्हा नहि अपराध भूप कछु कीन्हा ॥
चौंकित विप्र सब सुनि नभवानी भूप गये जहं भोजन खानी ॥
तहं न असन नहिं विप्र सुआरा फिरेउ राउ मन शोच अपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई त्रसित परेउ अवनी अकुलाई

दोहा॥ भूपति भावी मिटै नहिं यदपि न दूषन तोर ॥
किये अन्यथा होइ नहिं विप्र श्राप अति घोर १७८

अस कहि सब महिदेव सिधाये समाचार पुरलोगन पाये ॥ ॥
शोचहि दूषण दैवहिं देहीं ॥ विरचत हंस काक किय जेही ॥
उपरोहितहिं भवन पहुंचाई ॥ असुर तापसहिं खबरि जनाई ॥
तेहि खल जहं तहं पत्र पठाये ॥ सजि सजि सेन भूप सब आये ॥
घेरिन्हि नगर निशान बजाई विविध भांति नित होत लराई

जुझे सकल सुभट के करराती ॥ बंधु समेत परेउ नृप धरराती ॥
सैत्यकेतु कुल कोइ न बांचा । विप्र श्राप किमि होइ असांचा ॥
रिपुहिं जीति नृप नगर वसाई । निज निज पुर गये जय जश पाई

दोहा भरद्वाज सुनु जाहि जब होत विधाता वाम ॥ ऽऽ
धूरि मेरु सम जनक यम ताहि व्याल सम दाम ॥ १७९

कालपाय मुनि सुनि सोइ राजा ॥ भयेउ निशाचर सहित समाजा
दशशिर ताहि बीस भुज दण्डा ॥ रावण नाम वीर वरिवण्डा ॥ ॥
भूप अनुज अरि मर्दन नामा ॥ ॥ भयेउ सो कुंभकरण वलधामा
सचिव जो रहा धर्म्म रुचि जासू ॥ भयेउ विमात्र वंधु लघु तासू ॥
नाम विभीषण जेहि जग जाना । विष्णु भक्त विज्ञान निधाना
रहे जे सुत सेवक नृप केरे ॥ ऽऽ ॥ भये निशाचर घोर घनेरे ॥ ऽऽ
कामरूप खल जिनस अनेका ॥ कुटिल भयंकर विगत विवेका
कृपा रहित हिंसक सब पापी ॥ वरनि न जाय विश्व परितापी ॥

दोहा ॥ उपजे यदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप ॥
तदपि महीसुर श्राप वस भये सकल अघ रूप ॥ १८०

कीन्ह विविधि तप तीन्हेउ भाई । परम उग्र सो वरनि न जाई ॥
गयेउ निकट तप देखि विधाता । मांगहु वर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि विनती पद गहि दशशीशा । बोलेउ वचन सुनहु जगदीशा
हम काहू कर मरहिं न मारे ॥ ऽऽ वानर मनुज जाति दुइ वारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा ॥ मैं ब्रह्मा मिलि तेहि वर दीन्हा
पुनि प्रभु कुम्भकरण पहं गयेऊ । तेहि विलोकि मन विस्मय भयेऊ
जौ यह खल नित करव अहारा । होइहिं सब उजार संसारा ॥
शारद प्रेरि तासु मति फेरी ॥ मांगेसि नींद मास षट केरी ॥

दोहा गयेउ विभीषण पास तब कहा पुत्र वर मांगु ॥ ऽऽ
तेहि मांगेउ भगवन्त पद कमल अमल अनुरागु ॥ १८१

नहिं देह धर ब्रह्म सिधाये ॥ हर्षित ते अपने गृह आये ॥ ५ ॥
मय तनया मंदोदरि नामा ॥ परम सुन्दरी नारि ललामा ॥
सोइ मय दीन्ह रावणहि आनी ॥ भई सो यातुधान पति रानी ॥
हर्षित भयेउ नारि भल पाई ॥ पुनि दोउ बंधु बिबाहेसि जाई ॥
गिरि त्रिकूट इक सिंधु मझारी ॥ विधि निर्मित दुर्गम अति भारी ॥
सोइ मय दानव बहुरि संवारा ॥ कनक रचित मणि भवन अपारा ॥
भोगवती जस अहिकुल वासा ॥ अमरावति जस शक्र निवासा ॥
तिनके अधिक रम्य अति बंका ॥ जग विख्यात नाम तेहि लंका ॥

दोहा— खाइ सिंधु गंभीर अति चारिउ दिशि फिरि आव ।
कनक कोट मणि खचित दृढ़ वरनि न जाइ बनाव ॥ १८२ ॥
हरि प्रेरित जिहि कल्प जोइ जातुधानु पति होय ।
सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोय ॥ १८३ ॥

रहे तहां निशाचर भट भारे ॥ ५ ॥ ते सब सुरन समर संहारे ॥
अब तहं रहहिं शक्र के प्रेरे ॥ रक्षक कोटि यक्षपति केरे ॥
दशमुख कतहुं खबरि असि पाई ॥ सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥
देखि विकट भट बड़ि कटकाई ॥ यक्ष जीव ले गयउ पराई ॥
फिरि सब नगर दशानन देखा ॥ गयउ शोच सुख भयउ विशेषा ॥
सुन्दर सहज अगम अनुमानी ॥ कीन्ह तहां रावण रजधानी ॥
जेहि जस योग्य बांटि गृह दीन्हे ॥ सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
एक बार कुबेर पह धावा ॥ ६ ॥ पुष्पकयान जीत ले आवा ॥

दोहा— कौतुक ही कैलाश पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ॥
मनहु तौलि भुजबल चला अधिक सुख पाइ ॥ १८४ ॥

सुख संपति सुत सेन सहाई ॥ जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥
नित नूतन सब बाढ़त जाई ॥ जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥
अति बल कुम्भकर्ण अस भ्राता ॥ जेहि कहं नहिं प्रति भट जग जाता ॥

करि मद पान सोव षट मासा । जागत होइ तिहूं पुर त्रासा ॥
जौं दिन प्रति अहार करु सोई । विश्व वेगि सब चौपट होई ॥ ॥
समर धीर नहिं जाइ वखाना । तेहि सम अधिक न कोउ वलवाना
वारिद नाद जेठ सुत तासू ॥ भटमहं प्रथम लीक जगजासू
जेहि न होइ रण सन्मुख कोई । सुरपुर नितहि परावन होई ॥

दोहा — कुमुख अलंकन कुलिशरद धूम्रकेतु अतिकाय ।
एकएक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥ १८४

कामरूप जानहिं सब माया । सपनेहु जिनके धर्म न दाया
दशमुख बैठ सभा इक बारा ॥ देखि अमित आपन परिवारा
सुत समूह जन परिजन नाती । जनै को पार निशाचर जाती ॥
सेन विलोकि सहज अभिमानी । बोला वचन क्रोध मद सानी ॥
सुनहु सकल रजनीचर यूथा । हमरे वैरी विबुध वरूथा ॥ ॥
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई । देखि सवल रिपु जाहिं पराई ॥
तिनकर मरण एक विधि होई । कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विज भोजन मख होम सराधा । सब कहं जाइ करहु तुम बाधा ॥

दोहा — क्षुधा क्षीण वल हीन सुर सहजहिं मिलिहैं आइ ।
तब मारिहौं कि छांड़िहौं भली भांति अपनाइ ॥ १८६

मेघनाद कहं पुनि हंकरावा । दीन्ह सीख बल वैर बढ़ावा ॥
जे सुर समर धीर बलवाना । जिनके लरिबे को अभिमाना ॥
तिनहिं जीति रण आनसि बांधी । उठि सुत पितु अनुसासन साधी
इहि विधि सबही आज्ञा दीन्ही । आपन चलेउ गदा कर लीन्ही
चलत दशानन डोलत अवनी । गर्जत गर्भ स्रवत सुर रवनी ॥ ॥
रावण आवत सुनेउ सकोहा ॥ देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा ॥
दिगपालनके लोक सिधाये ॥ सूने सकल दशानन आये ॥
पुनिपुनि सिंहनाद करि भारी । देइ देवनन्हि गारि उचारी ॥

रण मद मत फिरै जग धावा	प्रतिभट खोजत कतहुं न पावा

यहां से क्षेपक है

नारद मिले कहेसि मुसकाई ॥	देव कहां मुनि देहु दिखाई ॥
सुनत अनख नारदहिं न भावा ॥	श्वेत दीप तिहि तुरत पठावा ॥
सागर उतरि पार सो गयेऊ ॥	नारि वृन्द तहं देखत भयेऊ ॥
तिन सन कहा पतिन्ह पहं जाहू	कहेउ कि आव निशाचरनाहू ॥
तव से तिनहिं जीति संग्रामा	लै जैहौ तुम कहं निज धामा ॥
सुनत वचन एक जठर रिसानी	धाइ चरण गहि गगन उड़ानी ॥
गई दूरि धरि धार झकझोरा ॥	डारेसि सिंधु मध्य अति जोरा ॥

दोहा गयो पताल अचेत है मरै न विप्र प्रसाद ॥
सावधान उठि गर्जि पुनि हिये न हरख विषाद ॥

जीतेसि नाग नगर सब भारी	गयो बहुरि वलि लोक सुरारी ॥
आमत रावण आषत जाना	किये देव ऋषि मन अपमाना
खेलत रहे नगर शिशु नाना	निज वल तिनहिं दीन्ह भगवाना
धाइ धरा तिन पुर लै आये ॥	नगर नारि नर देखन धाये ॥
वीस वाहु दशकन्धर भाई ॥	विधि यह गढ़नि कहां की आई
सखिन वांधि खिझावहिं भारी	नाम न कहे सहै वरु मारी ॥
वामन दीख बहुत सकुचाना	तव छुड़ाय दिय कृपानिधाना
चला तुरंत निशाचर नाहा ॥	लाज शंक कछु नहिं मन मांहा ॥

दोहा अति निर्लज्ज दया रहित हिंसा पर अति प्रीति ॥
राम विमुख दशकन्ध शठ तापर चाहति जीति ॥ १८८
भरद्वाज सुनि जाहि सव होइ विधाता वाम ॥
मणिहु कांच हुइ जाइ तब लहैन कौड़ी दाम ॥ १८९

जहं कहुं फिरत देव द्विज पावे	दगध लेइ बहु त्रास दिखावे ॥
दुहिआच रण फिरै दिन राती ॥	महा मलिन मन खल उतपाती ॥

वहाँ ते तुरत पंपापुर आवा ॥ बालि नाम कपि पति जिहि ठावा ॥
अव लोकेसि इक सरवर सोभा । जिहि मन सदा मुनिन्ह कर लोभा ॥
तहां कपीस करै निज ध्याना ॥ दशकन्धरहि देखि मुसकाना ॥
तव रावण बोला करि क्रोधा । वक ध्यानी कपि सठ विन बोधा ॥
नाम तोर मुनि आयउं धाई ॥ दे कपि युद्ध छांडि कदराई ॥

दोहा ॥ मोहि जीते विनु समर सुनु वृथा ध्यान तव कीस ।
कट कटाइ कह रज निचर रदन दीनि सै वीस ॥ १८॥

बालि कहा हठि करिय न रारी । दशकन्धर घर जाहु विचारी ॥
वल तुम्हार ऐसोइ है भाई ॥ अजय चारि दिशि मैं सुनि पाई ॥
यहि विधि वालि वहु त समुझावा । कवनिहु भांति बोध नहिं आवा ॥
तव सकोप उठि झपटि कपीसा । हग गहि कांख चापि दशशीसा ॥
बालहि विसरि गई सुधि तासू । इहि विधि विगत भये षट मासू ॥
एक दिवसि रवि अंजुलि साजा । कांख ते निसरि दशानन भाजा ॥
निलल अशक आव पुनि तहवां । कर जल कालि सहस भुज जहवां ॥

दोहा ॥ छोभेउ जल भुज वीश वल वूड़न लगो समाज ॥
सहस वाहु अति कोध मन मोहिं सम आनको आज ॥

आइ दीख तह रावण ठाढा ॥ जासु विपुल भुज वल जल वाढा ॥
माया प्रवल महावल भारी ॥ लंकेश्वर कह धरिसि प्रचारी ॥
निरखि नियन आचरज विशाला । वांधि राख कछु दिन हय शाला ॥
न कैत गल मष्ठ कीरे रहई ॥ सिसु उर मारि कष्ट वहु सहई ॥
सकल आइ देखहिं नर नारी ॥ मारहिं लात हँसे दे गारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना ॥ वहु विधि पूछहिं नृपति सुजाना ॥
नृत्य करै रंभादिक नारी ॥ दशहु माथ दश दीवक वारी ॥
मुनि पुलस्ति तव जाइ छुडावा ॥ पुनि नल शाप आय तिहिं पावा ॥

दोहा ॥ मारग जातु दीख अति अनुपम सुन्दरि नारि ॥

चन्दन पुष्प पत्र कर पूजन चलि त्रिपुरारि ॥ १८२

देखिउ वैसी मन सकुचानी ॥ तव रावण वोला मृदु वानी ॥
को तुम नारि गवन कहं कीन्हा लज्जा वस नाहि उतरन दीन्हा ॥
मन महं मत विचारन करेऊ ॥ धनपति पुत्र वधू कर धरेऊ ॥
चीन्ह नाहि पुनि शंका आई ॥ घाटिक में कीन्हीं पाछुताई ॥
मन पछिताइ शोच उर भयेऊ ॥ लंकेश्वर लंका कहं गयऊ ॥
विकल उर वसी अलकाहि आई नलकूवर सन वात जनाई ॥ ॥
दीन्ह श्राप तिन क्रोध अपारा रावण वंश होउ क्षय कारा ॥
चली श्राप लंका कहं आई ॥ दशकन्धर वैठा जिहिं ठाई ॥
आगे आइ ठाढि भई शापा ॥ निरखि दशानन अतिभय कांपा ॥

दोहा शापहि अंगीकार करि मन महं कीन्ह विचार
दण्ड ऋषिन्ह से लीन्ह नहि शेषउ लंक भुआर १८३

दूत चारि पठये ऋषि आश्रम ॥ निरखि विसरगे मुनि आधि आतम
तिनसन तव पूछहिं मुनि हाला कहहु कुशल लंकेश भुआला
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा कर तुम मन चाहत दशशीशा
सुनि सो वचन महा भय पाई ॥ करहिं विचार विरति विसराई ॥
जिहिं दरवार नीति नहिं भाई खल मण्डली जरी तहं आई ॥
कछु विन दिये नही गति आछी घट भरि रुधिर दिये तन पाछी ॥
दूतन्ह सौंपि कहा मुनिज्ञानी भूपहिं कहेउ जाइ यह वानी

दोहा घट उघरत क्षय होइहहु सहित सकल परिवार
दूत तुरत घट ले गये लंकापति दरवार ॥ ॥ १८४

रावण घट लखि परम हुलासा तव दूतन मुनि वचन प्रकाशा
सुनि मुनि शाप उपज उर दाहू वोला घट लइ उतर जाहू ॥ ॥
यतन समेत धरनि धरिराहू जानि न पाव वात यह
लेइ घट जनक देश ले गये ॥ गाड़न सैत्र मध्य तहं ॥

जनकजज्ञ रचना तहं ठयेऊ । चासीकर हल कर्षत भयऊ
प्रगट अवनि ते अक्षय कुमारी कन्या कहि लीन्ही उरगारी
नाम जानकी परम पुनीता नारद आइ कहा पुनि सीता
कहि सु कथा ऋषिराउ सिधाये बहुरि दूत लंकापुर आये ।।
चारि ठांव हारा लंकेशा ।। ।। देवन को बहु देत कलेशा ।। ।।

यहां तक क्षेपक

रवि शशि पवन वरुन धनुधारी अग्नि काल यम सब अधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा ।। हठि सबही के पन्थहि लागा ।।
ब्रह्म सृष्टि जहं लगि तनुधारी दशमुख बसवर्ती नर नारी ।।
आयसु करहि सकल भय भीता नवहिं आय नित चरण विनीता

दोहा भुजबल विश्व वश्य करि राखेसि कोउ न स्वतंत्र ।।
मण्डलीक मणि रावन राज करै निज मंत्र ।। १८५
देव यक्ष गन्धर्व नर किन्नर नाग कुमारि ।।
जीति वरी निज बाहुबल बहु सुन्दरि वर नारि ।। १८६

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ ।। सो सब जनु पहिले करि रहेऊ
प्रथम हि जिन कहं आयसु दीन्हा तिन कर चरित सुनहु जो कीन्हा
देखत भीम रूप सब पापी ।। निशिचर निकर देव परितापी
करहि उपद्रव असुर निकाया नाना रूप धरहि करि माया ।।
जेहि विधि होइ धर्म निर्मूला ।। सो सब करहि वेद प्रतिकूला ।।
जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहिं ।। नगर ग्राम पुर आगि लगावहिं
शुभ आचरन कतहुं नहिं होई ।। देव विप्र गुरु मान न कोई ।।
नहिं हरि भक्ति जज्ञ जप दाना ।। सपनेहु सुनिय न वेद पुराना ।।

छन्द जप योग विरागा तप मख भागा श्रवन सुनै दशशीशा
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना

तेहि बहु विधि त्रासे देश निकासे जो कह वेद पुराना २८

सोरठा वरणि न जाइ अनीति घोर निशाचर जो करहिं ॥
हिंसा पर अति प्रीति तिनके पापहिं कवन मिति २१

वाढे खल बहु चोर जुआरी ॥ जे लम्पट परधन परनारी
मानहिं मातु पिता नहिं देवा ॥ साधन सों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी ते जानहु निशिचर सम प्रानी
अतिशय देखि धर्म की हानी परम सभीत धरा अकुलानी
गिरि सरि सिन्धु भार नहिं मोही ॥ जस मोहि गरुअ एक पर द्रोही
सकल धर्म देखहिं विपरीता ॥ कहि न सकै रावण भय भीता
धेनु रूप धरि हृदय विचारी ॥ गई जहां जहां सुर मुनि झारी
निज संताप सुनायसि रोई ॥ काहू ते कछु काज न होई ॥

छन्द सुर मुनि गन्धर्वा मिलि करि सर्वा गये विरंचि के लोका
संग गो तनु धारी भूमि विचारी परम विकल भय शोका
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोरेउ कछु न बसाई
जाकरि तै दासी सो अविनाशी हमरो तोर सहाई २८

सोरठा धरणि धरहु मन धीर कह विरंचि हरि पद सुमिरि
जानत जनकी पीर प्रभु भंजहि दारुण विपति ॥ २२

बैठे सुर सब करहिं विचारा ॥ कहं पाइय प्रभु करिय पुकारा
पुर बैकुंठ जान कह कोई ॥ कोउ कह पयनिधि महं बसु सोई
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ॥ प्रभु तेहि प्रगट सदा यह रीती ॥
तेहि समाज गिरजा मैं रहेऊं ॥ अवसर पाइ वचन अस कहेऊं
हरि व्यापक सर्वत्र समाना ॥ प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना ॥
देश काल दिशि विदिशिहु माहीं ॥ कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं
अग जग मय सब रहित विरागी पवन ते प्रगट होहिं जिमि आगी
मम वचन सबके मन माना ॥ साधु २ करि ब्रह्म बखाना

दोहा सुनि विरंचि मन हर्ष तनु पुलकि नयन वह नीर

अस्तुति करअ्ज जोरि कर सावधान मति धीर ॥ १८७

छन्द

जयजय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणत पाल भगवन्ता
गोद्विज हितकारी जय असुरारी सिन्धु सुता प्रियकंता
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मर्म न जानै कोई
जो सहज कृपाला दीनदयाला करो अनुग्रह सोई २०
जयजय अविनाशी सव घट वासी व्यापक परमानन्दा
अविगति गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा
जेहि लगि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृन्दा
निशि वासर ध्यावहिं हरि गुण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविधि वनाई संग सहाय न दूजा
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा
जो भवभय भंजन जन मन रंजन गंजन विपति वरूथा
मन वच क्रम वानी छांड़ि सयानी सरण सकल सुरयूथा २२
शारद श्रुति शेषा ऋषिय अशेषा जाकहं कोउ नहिं जाना
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवो सो श्री भगवाना
भव वारिध मंदर सव विधि सुन्दर गुणमंदिर सुखपुंजा
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा २३

दोहा

जान सभय सुरभूमि सुनि वचन समेत सनेह
गगन गिरा गंभीर भइ हरनि शोक सन्देह ॥ ॥ १८८

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा
तुमहिं लागि धरिहौं नर भेषा
अंशन सहित मनुज अवतारा
लेहौं दिनकर वंश उदारा ॥
कश्यप अदिति महा तप कीन्हा
तिन कहं मैं पूरब वर दीन्हा ॥
ते दशरथ कौशिल्या रूपा ॥
कौसल पुरी प्रगट नर रूपा
तिनके गृह अवतरिहौं जाई ॥
रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई
नारद वचन सत्य सव करिहौं
परम शक्ति समेत अवतरिहौं

हरिहौं सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई॥ ५॥
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना॥ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना॥
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा। अभय भई भरोस जिय आवा॥

दोहा। निज लोकहि विरंचि गये देवन्ह इहै सिखाइ॥
बानर तनु धरि धरनि महँ हरिपद सेवहु जाइ॥ ९९

गये देव सब निज २ धामा॥ भूमि सहित मन कहँ बिश्रामा।
जो कछु आयसु ब्रह्मे दीन्हा॥ हरषे देव बिलंब न कीन्हा।
बनचर देह धरी छिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन पाहीं।
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा। हरि मारग चितवहिं मति धीरा॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी॥
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा॥ अब जो सुनहु जो बीचहि राखा।
अवधपुरी रघुकुल मणि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊ।
धर्म धुरंधर गुणनिधि ज्ञानी। हृदय भक्ति मति सारँग पानी।

दोहा। कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत॥
पति अनुकूल प्रेम दृढ हरि पद कमल बिनीत २००

एक बार भूपति मन माहीं॥ भइ गलानि मोरे सुत नाहीं॥
गुरु गृह गये तुरत महिपाला। चरण लागि करि बिनय बिसाला।
निज दुख सुख नृप गुरुहि सुनायउ। कहि वसिष्ठ बहु बिधि समुझायउ।
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भक्त भय हारी॥
शृंगी ऋषिहि वसिष्ठ बुलावा। पुत्र लागि शुभ यज्ञ करावा॥ ५॥
भक्ति सहित मुनि आहुति दीन्हे। प्रगटे अग्नि चरू कर लीन्हे॥
बोले अनल प्रेम युत बानी॥ अति प्रसन्न जहि परै न जानी॥
जो वसिष्ठ कछु हृदय बिचारा। सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा।
यह हवि बाँटि देउ नृप जाई। यथा योग जेहि भाग बनाई॥

दोहा। तब अदृश्य पावक भये सकल सभहि समुझाइ

परमानन्द मगन नृप हर्ष न हृदय समाय ॥ २०१ ॥

तबहिं राउ प्रिय नारि बुलाई ॥ कौशल्यादि तहां चलि आई ॥
अर्द्ध भाग कौशल्यहिं दीन्हा ॥ उभय भाग आधे कर लीन्हा ॥
केकयि कहं नृप लै सो दयऊ ॥ रहेउ सोउ भय भाग शुनी भयऊ ॥
कौशिला ककयी हाथ धरि ॥ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥
इहि विधि गर्भ सहित सब नारी ॥ भयउ हृदय हर्षित सुख भारी ॥
जादिन ते हरि गर्भहिं आये ॥ सकल लोक सुख संपति छाये ॥
मंदिर महं सब राजहिं रानी ॥ शोभा शील तेज की खानी ॥
सुख युति कछुक काल चलि गयेऊ ॥ जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥

दोहा योग लग्न ग्रह वार तिथि सकल भये अनुकूल ॥
चर अरु अचर हर्ष युत राम जन्म सुख मूल ॥ २०२

नवमी तिथि मधुमास पुनीता ॥ शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता ॥
मध्य दिवस अति शीत न घामा ॥ पावन काल लोक विश्रामा ॥
शीतल मन्द सुरभि वह वाऊ ॥ हर्षित सुर संतन मन चाऊ ॥
वन कुसुमित गिरि गण मनियारा ॥ स्रवहिं सकल सरिता सत धारा ॥
सो अवसर विरंचि जब जाना ॥ चले सकल सुर साजि विमाना ॥
गगन विमल संकुल सुर यूथा ॥ गावहिं गुण गंधर्व वरूथा ॥
वर्षहिं सुमन सु अंजलि साजी ॥ गह गह गगन दुंदुभी बाजी ॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ॥ बहु विधि लावहिं निज निज सेवा ॥

दोहा सुर समूह विनती करी पहुंचे निज निज धाम ॥
जग निवास प्रगटे अखिल लोक विश्राम ॥ २०३

छन्द भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशिल्या हितकारी
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घन श्यामा निज आयुध भुज चारी
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी २४

कह दुइ करजोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता
माया गुणज्ञाना तीत अमाना वेद पुराण भनंता ॥
करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रगट भये श्री कंता २५
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम २ प्रति वेद कहै
मम उर सोइ वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना चरित बहु विधि कीन्ह चहै
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै २६
माता पुनि वोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा
कीजै शिशुलीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना ह्वै वालक सुरभूपा
यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहिं ते न परहिं भवकूपा २७

दोहा विप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गोपार ॥ २०४

सुनि शिशु रुदन परम प्रिय वानी । संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हर्षित जहं तहं आईं दासी ॥ आनन्द मगन सकल पुर वासी
दसरथ पुत्र जन्म सुनि काना । मानहुं ब्रह्मानन्द समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक शरीरा ॥ चाहत उठन करत मति धीरा
जाकर नाम सुनत शुभ होई । मोरे गृह आयो प्रभु सोई ॥
परमानन्द पूरि मन राजा ॥ कहा बुलाय बजावहु बाजा ॥
गुरु वसिष्ठ कहं भयउ हंकारा । आये द्विजन्ह सहित नृप द्वारा ॥
अनुपम वालक देखिन जाई । रूप राशि गुण कहि न सिराई

दोहा नन्दीमुख श्राध करि जात कर्म सब कीन्ह
हाटक धेनु वसन मणि नृप विप्रन कहं दीन्ह ॥ २०५

ध्वज पताक तोरन पुर छावा ॥ । कहि न जाइ जेहिं भांति बनावा ॥

सुमन वृष्टि आकाश ते होई॥ ब्रह्मानन्द मगन सब कोई॥
वृन्द वृन्द मिलि चली लुगाई। सहज सिंगार किये उठि धाई॥
कनक कलश मंगल भरि थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा॥
करि आरती निछावर करहीं। बार बार शिशु चरणन परहीं॥
मागध सूत वन्दि गण गायक। पावन गुण गावहिं रघुनायक॥
सर्वस दान दीन्ह सब काहू॥ जेहिं पावा राखा नहिं ताहू॥
मृगमद चन्दन कुंकुम कीचा। मची सकल वीथिनि बिच बीचा॥

दो० गृह गृह बाज बधाव शुभ प्रगट भये सुखकन्द २०६
हर्षवन्त सब जहँ तहँ नगर नारि नर वृन्द॥

कैकय सुता सुमित्रादोऊ। सुन्दर सुत जन्मत नहिं सोऊ॥
वह सुख सम्पति समय समाजा। कहि न सके सारद अहि राजा॥
अवध पुरी सोहै इहि भाती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी। तदपि बनी सन्ध्या अनु मानी॥
अगर धूप जनु बहु अँधियारी। उड़ै अबीर मनहु अरुणारी॥
मंदिर मणि समूह जनु तारा। नृप गृह कलश सो इन्दु उदारा॥
भवन भेद धुनि अति मृदु बानी। जनु खग मुखर समय सुख सानी॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तहि जात न जाना॥

दो० एक मास का दिवस भा मरम न जाने कोइ॥ २०७
रथ समेत रवि थाके उ निशा कवन विधि होइ

यह रहस्य काहू नहिं जाना। दिन मणि चले करत गुणगाना॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन बरणत निज भागा॥
औरो एक कहौ निज चोरी॥ सुनु गिरजा अति दृढ़ मति तोरी॥
काक भुशुण्ड संग हम दोऊ। मनुज रूप जानै नहिं कोऊ॥
परमानंद प्रेम सुख फूले॥ वीथिन फिरहिं मगन मन भूले॥
तेहि अवसर जो जेहि विधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा॥

गज तुरंग हेम गो हीरा ॥ ॥ दीन्हे नृप नाना विधि चीरा ॥

दो० मन संतोष सबन के जहँ तहँ देहिं असीस ॥ २०८
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईश ॥

कछुक दिवस बीते एहि भांती । जात न जानहिं दिन अरु राती ॥
नाम करण कर अवसर जानी । भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति अस भाषा । धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा ॥
इनके नाम अनेक अनूपा ॥ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥
जो आनंद सिंधु सुखरासी ॥ सीकर ते त्रैलोक सुपासी ॥
सो सुखधाम राम अस नामा । अखिल लोक दायक विश्रामा ॥
विश्व भरण पोषण कर जोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरण ते रिपु नाशा । नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥

दो० लक्ष्मण धाम राम प्रिय सकल जगत आधार ॥ २०९
गुरु वशिष्ठ तेहि राखेउ लक्ष्मण नाम उदार ॥

धरे नाम गुरु हृदय विचारी ॥ वेद तत्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनि जन धन सर्बस शिव प्राना । बाल केलि रस तेहि सुख माना ॥
बारेहि ते निज हित पति जानी । लक्ष्मण राम चरण रति मानी ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई ॥ ॥ प्रभु सेवक जस प्रीति बड़ाई ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी । निरखहिं छवि जननी तृण तोरी ॥
चारिउ शील रूप गुणधामा । तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥
हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकाशा ॥ सूचत किरण मनोहर हासा ॥
कबहुँ उछंग कबहुँ वरपालन । मातु दुलारहिं कहि प्रिय लालन ॥

दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण बिगत बिनोद ॥ २१०
सो अज प्रेम भक्ति बस कौशल्या की गोद ॥ ॥

काम कोटि छवि श्याम शरीरा । नील कंज वारिद गम्भीरा ॥
अरुण चरण पंकज नखजोती । कमल दलन बैठे जनु मोती ॥

रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहे
कटि किंकिणी उदर त्रय रेखा
भुज विशाल भूषण युत पूरी
उर मनि हार पदिक की शोभा
कम्बु कंठ अति चिबुक सुहाई॥
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला
नील कमल दोउ नयन विशाला
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे
पीत झिंगुलिया तन पहिराये
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति शेषा

नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे
नाभि गंभीर जान जेहि देखा
हिय हरि नख सोमा अति रूरी
विप्र चरण देखत मन लोभा
आनन अमित सदन छवि छाई
नासा तिलक को वरनै पारे॥
अति प्रिय मधुर सो तोतरि बोला
विकट भृकुटि लटकै वर माला
बहु प्रकार रचि मातु संवारे॥
जानु पानि विचरत मोहि भाये
सो जाने सपनेहु जिन्ह देखा॥

दोहा सुख सन्दोह मोहपर ज्ञान गिरा गोतीत॥
दम्पति परम प्रेम वस कर शिशु चरित पुनीत॥ २११

यह विधि राम जगत पितु माता
जिन रघुनाथ चरण रति मानी
रघुपति विमुख यतन कर जोरी
जीव चराचर वस करि राखे
भृकुटि विलास नचावे ताही
मन वच कर्म छांडि चतुराई॥
एहि विधि शिशु बिनोद प्रभु कीना
लै उछंग कबहुं हलरावें॥

कोशल पुर वासिन सुखदाता
तिनकी यह गति प्रगट भवानी
कवन सकै भव वंधन छोरी॥
सो माया प्रभु सो भय भाखे
अस प्रभु छांडि भजिय कहु काही
भजतहि कृपा करें रघुराई॥
सकल नगर वासिन सुख दीना
कबहुं पालने घालि झुलावें

दोहा प्रेम मगन कौशिल्या निशिदिन जात न जान
सुत सनेह बस माता बाल चरित्र करि गान २१२

एक बार जननी अन्हवाये॥
निज कुल इष्ट देव भगवाना॥

करि सिंगार पलना पौढाये॥
पूजा हेतु कीन्ह पकवाना॥

करि पूजा नैविद्य चढ़ावा॥ आपु गई जहं पाक बनावा॥
बहुरि मात कहं वा चलि आई। भोजन करत दीख रघुराई॥
गई जननी शिशु पहं भयभीता। देखा बाल तहां पुनि सूता॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदय कम्प मन धीरन होई॥
इहां उहां दुइ बालक देखा। मति भ्रम मोर कि आन विशेषा॥

श्री रामचंद्र जी अपनी माता कौशिल्या को विराट स्वरूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को दिखलाना और कौशल्या का मोह निवृत्त करना॥



देखि राम जननी अकुलानी॥ प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी॥

दोहा दिखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड॥५॥
रोम रोम प्रति राजहिं कोटि कोटि ब्रह्मंड॥५॥ २१३

अगणित रवि शशि शिव चतुरानन बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन॥
कालकर्म गुण दोष सुभाऊ॥ सो देखा जो सुना न काऊ॥
देखी माया सब विधि गाढ़ी अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी॥
देखा जीव नचावै जाही॥ देखी भक्ति जो छोरै ताही॥
तनु पुलकित मुख बचन न आवा नयन मूँदि चरणन सिर नावा॥
विस्मयवंतु देखि महतारी॥ भये बहुरि शिशु रूप खरारी॥
अस्तुति करि न जाय भय माना जगत पिता मैं सुत करि जाना॥
हरि जननिहि बहु विधि समुझाई यह जनि कतहुं कहसि सुनु माई॥

दोहा बार बार कौशिल्या विनय करै करजोरि॥५॥
अब जनि कबहूं व्यापै प्रभु मोहि माया तोरि॥ २१४

बाल चरित हरि बहु विधि कीन्हा अति आनन्द दासन कहँ दीन्हा॥
कछुक काल बीते सब भाई॥ बड़े भये परिजन सुखदाई॥
चूड़ा करन कीन्ह गुरु आई॥ विप्रन दक्षिणा पुनि बहु पाई॥
परम मनोहर चरित अपारा॥ करत फिरत चारिउ सुकुमारा॥
मन क्रम वचन अगोचर जोई दशरथ अजिर विचर प्रभु सोई॥
भोजन करत बुलावत राजा॥ नहिं आवहिं तजि बाल समाजा॥
कौशिल्या जब बोलन जाई॥ ठुमकि ठुमकि प्रभु चलहिं पराई॥
निगम नेति शिव अंत न पावा ताहि धरै जननी हठि धावा॥
धूसर धूरि भरे तन आये॥ भूपति विहँसि गोद बैठाये॥

दोहा भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ॥
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ॥ २१५

बाल चरित अति सरल सुहाये शारद शेष शंभु श्रुति गाये॥

जिन्ह कर मन इन सन नहिं राता। ते जग बंचित किये बिधाता॥
भये कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता॥
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई॥ अल्प काल विद्या सब पाई॥
जाकी सहज स्वांस श्रुति चारी॥ सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
विद्या विनय निपुन गुण शीला खेलहिं खेल सकल नृपलीला
करतल बाण धनुष अति सोहा देखत रूप चराचर मोहा॥
जिन बीथिन विहरहिं सब भाई चकित होहिं सब लोग लुगाई

दोहा कोशलपुर बासी नर नारि वृद्ध अरु बाल॥ २१६
प्राणहु ते प्रिय लागहीं सब कहँ राम कृपाल॥

बंधु सखा संग लेहिं बुलाई॥ बन मृगया नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जिय जानी॥ दिन प्रति नृपहि दिखावहिं आनी
जे मृग राम बाण के मारे॥ ते तनु तजि सुर लोक सिधारे
अनुज सखा संग भोजन करहीं मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं॥
जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा
वेद पुरान सुनहिं मन लाई॥ आपु कहहिं अनुजहिं समुझाई
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा॥ मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु मांगि करहिं पुर काजा॥ देखि चरित हरषहिं मन राजा

दोहा व्यापक अकल अनीह अज निर्गुण नाम न रूप
भक्ति हेतु नाना विधिहि करत चरित अनूप॥ २१७

यह सब चरित कहा मैं गाई॥ आगिल कथा सुनहु मन लाई
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी॥ बसहिं विपिन शुभ आश्रम जानी
तहँ जप जज्ञ जोग मुनि करहीं अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत जज्ञ निशाचर धावहिं॥ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं
गाधि तनय मन चिंता व्यापी हरि बिनु मरहिं न निशिचर पापी
तब मुनि वर मन कीन्ह विचारा प्रभु अवतरेउ हरण महि भारा

छवि निस देखौं प्रभु पद जाई॥	करि विनती आनौ दोउ भाई॥
ज्ञान विराग सकल गुण अयना	सो प्रभु मैं देखब भरि नयना॥

दोहा बहु विधि करत मनोरथ जात न लागी बार॥
करि मज्जन सरयू सलिल गये भूप दरबार॥ २१८

मुनि आगमन सुना जब राजा	मिलन गये लै विप्र समाजा
करि दंडवत मुनिहि सन्मानी	निज आसन बैठारिस आनी
चरण पखार कीन्ह अति पूजा॥	मो सम आजु धन्य नहिं दूजा
विविध भांति भोजन कर वावा	मुनिवर हृदय हर्ष अति पावा
पुनि चरणन मेले सुत चारी॥	राम देखि मुनि विरति बिसारी॥
भये मगन देखत मुख शोभा॥	जनु चकोर पूरण शशि लोभा
तब मन हर्ष बचन कहि राऊ॥	मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ
केहि कारण आगमन तुम्हारा	कहहु सो करत न लावब वारा॥
असुर समूह सतावहि मोही	मैं याचन आयेउं न्रप तोही॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा॥	निशिचर वध मैं होब सनाथा॥

दोहा देहु भूप मन हर्षि सुत तजहु मोह अज्ञान॥ ॥
धर्म सुयश न्रप तुम कहं इन कहं अति कल्यान॥ २१९

सुनि राजा अति अप्रिय वानी	हृदय कंप मुख दुति कुंभिलानी
चौथे पन पायेउं सुत चारी॥	विप्र वचन नहिं कहेउ विचारी
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा	सर्वस देउं आजु सह रोषा॥
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं॥	सोउ मुनि देउं निमिष एक माहीं
सब सुत मोहि प्रिय प्राण की नाईं	राम देत नहिं बनै गोसाईं॥
कहं निशिचर अति घोर कठोरा	कहं सुन्दर सुत परम किशोरा
सुनि न्रप गिरा प्रेम रस सानी	हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी
तब वसिष्ठ बहु विधि समुझावा	न्रप संदेह नाश कहं पावा॥
अति आदर दोउ तनय बुलाये	हृदय लाय बहु भांति सिखाये

विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा करने के निमित्त श्री रामचंद्र करके ताड़का राक्षसी वध करना



सो प्रारानाथ सुत दोऊ ॥	तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ

दोहा सौंपे भूपति ऋषिहिं सुत बहु विधि देइ अशीश ।
जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद शीश ॥ २२०

सो० पुरुष सिंह दोउ वीर हर्षि चले मुनि भय हरण ॥
कृपासिंधु मति धीर अखिल विश्व कारण करण ॥

अरुण नयन उर बाहु विशाला	नील जलद तन श्याम तमाला
कटि पट पीत कसे वर भाथा ॥	रुचिर चाप सायक दुहु हाथा ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ॥	विश्वामित्र महा निधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना ॥	मोहि हित पिता तजेउ भगवाना
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई	सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥
एकहिं बाण प्राण हरि लीन्हा	दीन्ह जानि तेहि निज पद दीन्हा
तब ऋषि निज नाथहिं जिय चीन्हा	विद्या निधि कहं विद्या दीन्हा
जाते लाग न क्षुधा पियासा	अतुलित बल तन तेज प्रकाशा

दोहा आयुध सकल समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि
कंद मूल फल भोजन दिये भक्त हित जानि ॥ २२१

प्रात काल मुनि सन रघुराई ॥	निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई ॥
होम करन लागे मुनि झारी ॥	आपु रहे मख की रखवारी ॥
सुनि मारीच निशाचर कोही ॥	ले सहाय धावा मुनि द्रोही ॥
बिनु फर बाण राम तेहि मारा	शत योजन गा सागर पारा ॥
पावक सर सुबाहु पुनि मारा	अनुज निशाचर कटक सँघारा ॥
मारि असुर द्विज निर्भय कारी	अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥
तहं प्रभु कछुक दिवस रघुराया	रहे कीन्ह विप्रन पर दाया ॥
भक्ति हेत बहु कथा पुराना	कहा विप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥
तब मुनि सादर कहा बुझाई	चरित एक देखिय प्रभु जाई ॥
धनुष यज्ञ मुनि रघुकुल नाथा	हर्षि चले मुनि वर के साथा ॥

चले राम लछिमन मुनि संगा	गये जहां जग पावनि गंगा
अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा	बहु प्रकार सुर बर्णो रामा

दोहा जाति मन नयन आरि वस उपल देह बाराया ॥१॥
यहा कलान रज चाहती कृपा करहु रघुनाथ ॥॥ २२

छं० परमत पद पावन शोक नसावन प्रगट भई तब पुञ्ज सही ॥
देखत रघुनायक जन सुखदायक सन्मुख हुइ कर जोरि रही
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आवे बचन कही
अति शय बड़ भागी चरणन लागी युगल नयन जल धार बही ॥२
धीरज मन कीन्हा प्रभु कहं चीन्हा रघुपति कृपा भक्ति पाई
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञान गम्य जय रघुराई
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावणारिपु जन सुखदाई
राजिव लोचन भव भय मोचन पाहि पाहि शरणहिं आई॥ २८
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना
देखउं भरि लोचन हरि भव मोचन यहि लाभ शंकर जाना
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न वर मांगो आना
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करे पाना ३०
जेहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रगट भई शिव शीश धरी
सोइ पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी
इहि भांति सिधारी गौतम नारी वार वार हरि चरण परी॥
जो अति मन भावा सो वर पावा गै पति लोक आनन्द भरी ३१

दोहा अस प्रभु दीन बंधु हरि कारण रहित कृपाल ॥
तुलसी दास सठ ताहि भजु छांडि कपट जंजाल २२३

पुनि सुरसरि उतरे रघुराई	कौशिक सन पूछा सिर नाई ॥
कह मुनि प्रभु तव कुल इक राजा	नाम सगर तिहु लोक विराजा
केहि जुग भामिन सुकुमारी	प्रथम केशिनी मुननि विचारी ॥

कह मुनि प्रभु तव कुल इक राजा। नाम सगर तिहुं लोक बिराजा॥
तेहि के जुग भामिनि सुकुमारी। प्रथम केशिनी सुमति पियारी॥
सब प्रकार संपति सुर भ्राजा॥ सुत विहीन मन बिस्मय राजा॥
एक समय भामिनि होउ साथा। साथ बन तनय हेतु रघुनाथा॥
सघन सफल तरु सुन्दर नाना। तहां भृगु मुनि तप तेज निधाना।

दोहा　सहित नारि नृप मुदित मन रहे वर्ष शत एक॥
कीन्ह तप बल देखि भृगु प्रसतुति कीन्ह अनेक॥ २२३

कहि निज दुख प्रणाम नृप कीन्हा। देइ असीस तब मुनि वर दीन्हा॥
नृप रानी सन मुनि अस भाषा॥ लेहु सबन जो जेहि अभिलाषा॥
सुनि मुनि बचन सीस तिन नावा। देहु नाथ जो आनि मन भावा॥
एकहि कहेउ एक सुत हीना। दूसरि साठ सहस सुत लीना॥
हरषित भयो नृप भृग वर पाई॥ पानि जोरि चरनन सिर नाई।
सहित भामिनी अवध हि आये। हरष सहित कछु दिवस गंवाये
जानि सुघरि सुंदर सुख दई॥ नाम केसि अस संजस जाई॥
सुमति प्रसब एक तुंबरि सोई। भये सुत प्रगट कहे मुनि जोई॥
निरषि सुत हरषित सब होई। मंगल चार किये सब कोई॥
हरष सहित दिये दान नरेशू॥ पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू॥
घर घर सुंदर विविध मंगारा। ते सब सुत नृप तिन मह जाये॥

दोहा　एहि विधि भयउ सकल सुत पूजे सब मन काम
जाइ दिवस निसि हरष बस सुनहु राम घनस्याम　२२४

पुरि जन सब घर घरनि नरेशू॥ अति अनंद तन मिटा अंदेसू॥
बाल केलि कर भये कुमारा॥ लीला करे अगम संसारा॥
होइ जो काज सकल मन चीते। एहि सुख बसत बहुत दिन बीते
सरजू नदी अघघ जो अहई॥ बिमल सलिल उत्तर तट बहई
प्रजा लोक के बालक नाना। नित उठि तहां करें स्नाना॥

असमंजस तहँ तरनी आनी ॥ तिनहिं चढ़ाई बोरि निज पानी
भये प्रजा सब परम दुखारी ॥ बालक बध सुनि सुनहु खरारी ॥
सकल गये जहँ बैठि न्रपाला ॥ बोले बचन नाय पद भाला ॥
तुम न्रप देहु प्रजा प्रति पाला ॥ सुत तुम्हार भा दुखकर काला ॥
तुजव देश सब सुनहु नरेशू ॥ विना तजे नहि मिटे कलेशू ॥

दोहा। तव सुत कीन्हेउ पाप बहु मारे बालक वृन्द ॥
तुम कहँ प्राण समान यह सकल प्रजन कहँ मंद ॥ २२५

प्रजा विनै सुनि धीरज दीन्हा ॥ सुतहिं देश ते बाहर कीन्हा ॥
तासु तनय जग विदित प्रभाऊ ॥ गुननिधि अंशु मानतेहि नाऊ ॥
वसत हृदय न्रप केसो कैसे ॥ मुनि मन मीन सलिल रहे जैसे ॥
गये प्रजा सब निज निज धामा ॥ भये विलोक मन गुरा विश्रामा
बहुरि न्रपति मन कीन्ह विचारा ॥ आइ भयेउ पन चौथ हमारा ॥
हित मंत्री गुरु सुतहि बुलाये ॥ हिम गिरि विंध्य मध्य तब आये ॥
रुचिर वेदिका एक बनाई ॥ ॥ देखत बनइ बरनि नहिं जाई ॥
मखआरंभ छांडेउ तब तुरगा ॥ वेगि वंत जिमि देखिय उरगा ॥

दोहा। सुरपति सुन भय दारुनहि मन महि करअनुमान
आन तुरग तब लीन्हेउ मर्म न कोऊ जान ॥ ॥ २२६

राखेउ आनि कपिल मुनि पाहीं ॥ कोऊ न जान काहुहि गम नाहीं
जुगवत रहे जे सुभट सयाने ॥ ले तुरंग रहे कि नऊ न जाने ॥ ॥
तिन सब आनि कही न्रप पाहीं ॥ महाराज अस कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरंग कोइ जान न कोऊ ॥ कहा करिय सो आयसु होऊ ॥
सुनत वचन न्रप विस्मय पाये ॥ सकल सुतन्ह कहँ तुरत बुलाये
ज्ञौह तुरंग तुम हेरहु जाई ॥ सकल चले चरनन सिर नाई ॥
सुरपति सम देखिय सब बीरा ॥ सकल धनुर्धर अति रण धीरा
जिनहिं चलत धरनी अकुलाई ॥ वलि पशू ओव भये सब आई ॥

कुसुम न वाटिका उपवन वागा । सरित कूप वापिका तड़ागा ॥
नगर गांव मुनीश थल नाना । गिरि कंदर कानन नख्र स्थाना ॥

दोहा इहि विधि खोजत तुरंग तिन आये भूपति पाहि ।
चरनन माथहिं नाइ कहि खोज अश्व करि नाहि ॥ २२७

खोदहु महि सुत करहि पठाये । चल सकल पूर्व दिशि आये ॥
तिनके कर जिमि कुलिश समाना । जोजन भागि खोदहिं बल वाना ॥
देखि अतुल बल देव डराने ॥ मरह नाहु विरंचि मन माने ॥
खोदत महि पताल सब आये । दिग्गज देखि एक सिर नाये ॥
तिन पूछा सब कथा सुनाये ॥ बहुरि सकल दक्षिण दिशि आये ॥
इहि विधि पुनि इक सर गज देखा । अति उनत गज लिखत विशेषा ॥
ताहू बहु प्रणाम तिन कीने ॥ चले सुनत पश्चिम चित दीने ॥
तीसर देखि प्रदक्षिणा कीन्ही । पुनि उतर दिशि सोधहि लीन्ही ॥
दिग्गज स्वेत निरखि सुख पाये ॥ सकल कपिल मुनि पहं मुनि आये ।
खोजत महीपार नहि पावा ॥ शोभा चहु दिशि जलधि सुहावा ।

देखिन आप तुरंग तव बांधा मुनिवर पास ॥ ॥
बोले वचन सकोपि करि भया चह सब कर नास ॥ २२८

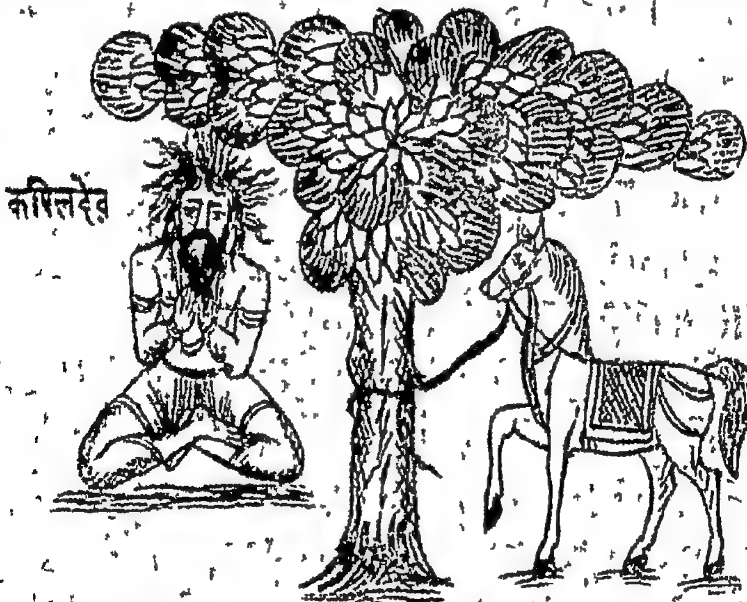
खोदा महि हम जाहि क्रोधा । रेरे दुष्ट बहुत तोहि सोधा ॥
कोउ कहि चोर दीख बहु होई । एहि सम छली अवर नहि कोई ॥
परधन लै पताल मुनि आयो ॥ नसका मुनिवर भेष बनाये ॥
कोऊ कहै यह मुनि बर नाही । समुझि देखि लक्षराम न माहीं ॥
कोऊ कहै वक तप कीन्ह अपारा ॥ अहो दुष्ट ले तुरंग हमारा ॥
सुनत वचन मुनि चितवा जवहीं । भये भस्म सव छिन में तवहीं ॥
उमा खचन जिहि समुझत बोला । सुधा होइ विष तिक्त म ओला ॥
पावक जानि धरहिं कर प्रानी । जरहिं काहि नहि अति अभिमानी ॥
जानि गरल जे संग्रह करहीं । सुनहु राम ते काहे न मरहीं ॥

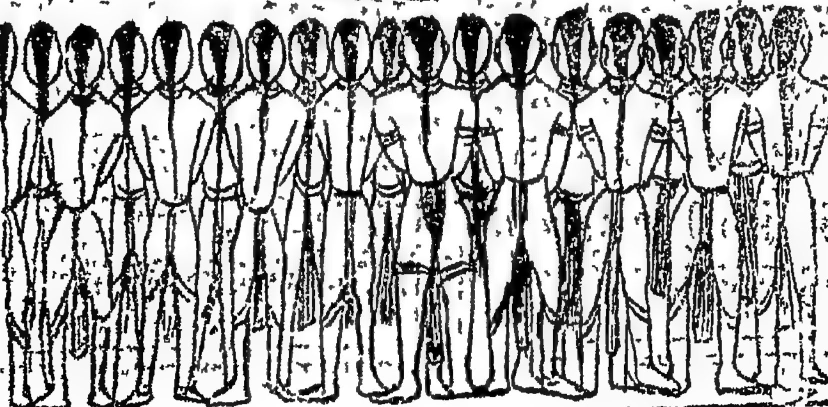
क्रोध करैं विन किये विचारा ॥	भये सकल तेहि ते जरि छारा ॥
इहां नृपति अनुमान बुलाये ॥	नहिं आये सब तिनहिं पठाये ॥

दोहा दीन्हा नृपति असीस तब अति हित बारहि बार ॥
बेगि फिरो ले तुरंग सुत मेरे प्राण अधार ॥ ॥ २२८

चले नाय पद सीस कुमारा ॥	विष्णु भक्त हित कुल उजियारा
जहं तहं निरखि मुनिन के धामा	पूंछि खबरि करि दंड प्रणामा
पन्नग नाथ सन पाइ असीसा ॥	चहुं दिग्गज कहं नायो सीसा ॥

राजा सगर के ६० हजार पुत्रों को अश्वमेध के घोड़ा ढूंढने जाना और कपिलदेव के स्थान पर पहुंच कर कपिल मुनि के शाप से ६० हजार का भस्म होना





इहिविधि साधत मगमह्ं जाता । मिले गरुड़ सुमती कर भ्राता ।
चरन परन नव आशिष दयेऊ ॥ जरे सकल जेहि विधि सो कहेऊ ।
सुनत वचन सोच भया भारी ॥ लिये खगेश दिखाय लवारी ॥
अंसमान तहं मज्जन कीन्हा ॥ क्रम क्रम सबहि जलाजलि दीन्हा
बहुरि गरुड़ बोले सुनु त्राता ॥ मैं तोहि कहौं कारिद्दि एक बाता

सोरठा करसुत सोई उपाइ गंगा आवहिं अवनि मह ॥ ॥
दर्शन ते अघ जाय मज्जन कीन्हे परम सुख ॥ ॥

षट सहस्र तरिहैं एही बिधि ॥ गंगा पाय परम पावन निधि
सुन अस वचन हृदय मन भाये सहित गरुड़ मुनिवर पहिं आये
तब खगेश मुनि चरन नआयउ पूरव कथा सकल मुनि गायउ
आयसु देइ तुरंग मुनि दीन्हा ॥ हरषि हृदय निज अम्बहि चीन्हा
नगर समीप गरुड़ पहुंचाई ॥ गये भवन निज तव रघुराई ॥
इहां तुरंग लै न्रप शिर नाई ॥ षट सहस्र मुनि कथा बुझाई॥
विस्मय हरष विवस न्रप भएऊ कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
बहुविधि न्रपति राज सुनि कीन्हा प्रजा लोक कह अति सुख दीन्हा

दोहा अंसुमान हित राज दै निज मन हरि पद लाग ॥
गयेउ मझार तप काज वन हृदय अधिक अनुराग २३०

ता सुत नाम दलीप न्रप भयेऊ मन तप हेतु उतर दिशि गयेऊ
उहां अगम तप कीन्ह न्रपाला भए काल बस गये कछु काला
कहहुं कवन दलीप प्रभुताई सेवैं सकल न्रपति जेहि आई
जुगवत जेहि नित सुरपति रहहीं महिमा तासु कवि केहि विधि कहहीं
भागीरथ अस सुत भयो जासू ॥ पितु सम नीत अधिक उर तासू
तिनहि बोल न्रप दीन्हेउ राजू आप चले उठि तपके काजू ॥
मन कहु करत पंथ अनुमाना ॥ सुरसरि आव तजहु नत प्राना
निज मनु तनु दीनेउ निमि देऊ फिरि निजु नगर क नाम न लेऊ

सोरठा एहिविधि करत बिचार न्र्प कीन्हे तप प्रबल तब
बीते कछु एक काल देह न जी कोऊ प्रगट नहि

जेहि सुरसरि लगि तजेतन भूपा । सोतजि मूढ़ पियहु जल कूपा
इहां भगीरथ अस मन भयेऊ । पितु न आव बहु दिन चलि गयेऊ
काकुस्थ नाम तनय एक रहेऊ । दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ ॥
कहि तब पूर्ब कथा सुत पाहीं । दीन्ह असीस चले नर नाहीं ॥
निकसत नगर सगुन भल पाये । अतिहि निविड़ बन जहं न्र्प आये
देख भगीरथ बन सुख पावा । सुरसरि हित तप कहं मन लावा
एक चरन दोउ भुजा उठाये ॥ रबि सन्मुख चितवहिं मन लाये
सहस बरष बीते इहि भांती ॥ जान न जाने दिन अरु राती ॥
देखि उग्र तप अज चलि आये ॥ बोले बचन न्र्पहि मन भाये ॥
चहहि न्र्पति जो ले बरदाना । बोले न्र्प कर अजहिं प्रणामा
जो मांगो सो जानत अहहू । मो सन मांगन प्रभु किमि कहहु

दोहा तदपि कहे प्रभु देहु बर सब संतन कह बुद्धि ॥
दूसर मांगो जोरि कर गंगा आवहि निर्बिद्ध ॥ २३१

एवमस्तु कहि पुनि बिधि भवहीं । सुरसरि देइ राखि को सकहीं ॥
कुर जाहि पुनि तुरत रसातल्ल । फिरहिं न न्र्पति बहुरि सुन भूतल
तेहि ते कहों एक तोहि पाहीं । अति दयाल शंकर मन माहीं ॥
सोइ शंकर राखि देव सर आजू । उनहिं जपे तब होय है काजू
असकहि बिधि अंतरहित भये । बहुरि भगीरथ शिव पहं गये ॥
विविधि बरष अंगुष्ठ अधारा ॥ बारबार शिव नाम उचारा ॥ ॥
शिव दयाल प्रगटे तब आई ॥ हाथ जोरि न्र्प विनय सुनाई ॥
मैं राखब सुरसरि कह ईशा ॥ बहुरि रमापति ध्यान करीशा

दोहा जहां देव सरि शिव बचन सुन मन कीन्ह विचार २३२
जाउं रसातल्ल शिव सहित आन न लावों बार ॥

अंतरजामी शिवहि उपाई ॥ निज सिर जटा सो अगम बनाई
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्ही सुनि मृदु गिरा छांड विधि दीन्ही
छूटे सोर भयो जग भारी ॥ चकित देख अहि दिग्गज चारी
सुरसरि पुनि हरिजटा समानी वर्ष एक तहं रही भवानी ॥१॥
कौतुक देखि सकल सुर हरखे कहि जय जयति सुमन बहु बरखे
बहुरि भगीरथ सुमरन्ह कीन्हा डारि जय शिव बुंदक दीन्हा ॥
तेहिते भई तीन पुनि धारा॥ एक गई नभ एक पतारा ॥२॥
गई नभ सोई किअघनासिनी देवन धरा नाम मंदाकिनी ॥ ॥

दोहा दूसर गई पताल में नाम प्रभावति हरन दुख ॥
तीसरि भई सोई गंगा सब संतन को करन सुख
सलिल प्रवाह निरखि नृपति उरअति भये अनंद
जैसे उमडत सिंधु लख पूरो कला लख चंद ॥५॥

आय भगीरथ पुनि सिर नाये॥ बोले सुरसरि बचन सुहाये॥
बेगवंत नृप रथ ले आनू ॥१॥ तुरत तुरंग सुभ गति जिमि भानू
तेहि रथ चढि नृप चल मम आगे चलिहों मैं तव पाछे लागे ॥२॥
सुनि नृप दिव्य तुरंग रथ आना चले हृदय सुमिरत भगवाना॥
चली अग्र करि नृपहि सुरसरी देवन्ह मुदित सुमन झर करी ॥
चलत तेज कछु वरनि न जाई टरहिं गिरि तरु शैल सुहाई॥
करे कुलाहल विधि बहु भांती कोमठ नक्र कच्छ ब्याल सो माती
मज्जन करहिं देव तहं आई॥ मुनगति सिद्ध रहे सब छाई ॥

सोरठा नरपन कर मन लाय हर्ष हृदय नहि जात कहि
दरसन ते अघ जाय तरे सकल मुनिजन कहें ॥
मज्जन कर हरखाय सुर अजादि सनकादि ऋषि
पान करत अघ जाय अस मन सब कोऊ कहहि

जेहि जो मज्जन जग मन लाई तिनको महिमा कहि न सिराई

रथ पर जात सो है नृप कैसे ॥ तेजवंत रवि दे रिवय जैसे ॥
लांघित शैल सुहावन देशा ॥ पाछे सुरसरि आगे नरेशा ॥
हरिद्वार समीप तब आये ॥ ॥ तीर्थ देख सुरसरि मन लाये ॥
तीर्थ निरखि मन भयो सुखभारी आय प्रयाग पहुंचि अघ हारी ॥
तहां मज्जन कीन्हे दुख जाई ॥ बहुरि देव सरि काशी आई ॥
सो शिवपुरी सहज सुख दाई बरनिन जाइ मनोहर ताई ॥
अवसे तीर्थ विविधि विधि जानी गई तहां किमि कहौ बखानी ॥
मग लोगन कहं करत सनाथा जाइ चली इहि विधि रघुनाथा

भगीरथ करके रथारूढ श्री गंगा जीका मृत्युलोक में आगमन और हरद्वार काशी आदि तीर्थों में होकर सागर में प्रवेश होना



दोहा मिलीआइ पुनि उदधि महु उदधि हृदय सुख मान
लगे कहन भागीरथहि तुम सम धन्य न आन ॥१॥

कीन्हो अस जो करहि न कोई ॥ तप महिमा बल कस नाहि होई
सगर सुतनय तरे तत काला ॥ हर्षवंत तब भयो नृपाला ॥
अब लो रहो है कुल महि कोऊ तिनके संग तरे सब सोऊ ॥
तुम समान नृप और न भयेऊ ॥ जग विख्यात अचल जस लयेऊ
सकल सुरन तहां संग विधाता नृप सन आय कही सब बाता
धन्य भगीरथ जस जग जयेऊ तुम समान नृप और न भयेऊ ॥
अपनी सत्य प्रतिज्ञा कियेऊ ॥ सम्मत वेद जनन सुख दयऊ ॥
गंगा सागर सब कोउ कहहीं ॥ अघ उलूक देखत रवि डरहीं ॥
भागीरथी नाम अरु कहहीं ॥ मुन सुर सिद्ध नाग जल लहहीं
अस विधि कह निज लोकहि आये जहां भगीरथ अनि सुख पाये ॥

छन्द पायो अमित सुख बहुरि पूजा सुरसरिहि मन लाइके
तन दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप भवन सुख पाइके
इहि भांति सुन गंगा कथा तब राम रुचि चरनन नये
कह दास तुलसी राम लषणहि महा मुनि आशिष दये

दोहा कौशिक आशिष अमिय सम पाप हरष रघुराज ॥
प्रभु शशाय सब इम गई लवा निरषि जिमि बाज
आशिष सुधा समान सुनि हरषे श्री रघुनाथ ॥
प्रभु सुख पाय कहेउ पुनि वेगि चलिये मुनिनाथ

राम नाम ते संशय जाई ॥ ॥ देह धरे कर यह फल भाई ॥ ॥

इति

गाधि सुवन सब कथा सुनाई ॥ जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥
तब प्रभु ऋषिन समेत अन्हाये विविध दान महि देवन पाये ॥
हर्षि चले मुनि वृन्द सहाया वेगि विदेह नगर नियराया ॥

पुररम्यता राम जब देखी ॥ हरषे अनुज समेत विशेषी ॥
वापी कूप सरित सर नाना ॥ सलिल सुधा सम मणि सोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा ॥ कूजत कल बहु बरण विहंगा ॥
बरण बरण विकसे जलजाता ॥ त्रिविध समीर सदा सुखदाता ॥

दोहा — सुमन बाटिका बाग बन विपुल विहंग निवास
फूलत फलत सुपल्लवित सोहत पुर चहुंपास ॥ २२४

बने न बरणत नगर निकाई ॥ जहां जाइ मन तहां लुभाई ॥
चारु बजार विचित्र अटारी ॥ मणिमय विधि जनु स्वकर संवारी ॥
धनिक वणिक वर धनद समाना ॥ बैठे सकल वस्तु लै नाना ॥
चौहट सुंदर गली सुहाई ॥ संतत रहै सुगन्ध सिंचाई ॥
मंगलमय मंदिर सब केरे ॥ चित्रित जनु रति नाथ चितेरे ॥
पुर नर नारि सुभग शुचि संता ॥ धर्मशील ज्ञानी गुणवंता ॥
अति अनूप जहं जनक निवासू ॥ विथकहिं विबुध विलोकि विलासू ॥
होत चकित चित कोटि विलोकी ॥ सकल भुवन शोभा जनु रोकी ॥

दोहा — धवल धाम मणि पुरपट सुघटित नाना भांति ॥ २२५
सिय निवास सुन्दर सदन शोभा किमि कहि जात

सुभग द्वार सब कुलिश कपाटा ॥ भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी विशाल बाजि गजशाला ॥ हय गय रथ संकुल सब काला ॥
सूर सचिव सेनप बहुतेरे ॥ न्टप गृह सरिस सदन सब केरे ॥
पुर बाहिर सर सरित समीपा ॥ उतरे जहं तहं विपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अंवराई ॥ सब सुपास सब भांति सुहाई ॥
कौशिक कहेउ मोर मन माना ॥ इहां रहिय रघुवीर सुजाना ॥
भलेहि नाथ कहि कृपा निकेता ॥ उतरे तहं मुनि वृन्द समेता ॥
विश्वामित्र महामुनि आये ॥ समाचार मिथिला पति पाये ॥

दोहा — संग सचिव शुचि भूरि भट भूसुर वर गुरु ज्ञाति ॥

चले मिलन मुनि नायकहि मुदित राउ इहि भाँति ॥ २२६

कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा । दीन्ह अशीश मुदित मन नाथा ॥
विप्रवृन्द सब सादर बन्दे । जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥
कुशल प्रश्न कहि बारहि बारा । विश्वामित्र नृपहि बैठारा ॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई । गये रहे देखन फुलवाई ॥
श्याम गौर मृदु वैश किशोरा । लोचन सुखद विश्व चित चोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आये । विश्वामित्र निकट बैठाये ॥
भय सब सुखी देखि दोउ भ्राता । वारि बिलोचन पुलकित गाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी । भयो विदेह विदेह विसेखी ॥

दोहा — प्रेम मगन मन जानि न्यप करि विवेक धरि धीर ।
बोलेउ मुनिपद नाय शिर गद्गद गिरा गंभीर ॥ २२७

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक । मुनिकुल तिलक कि न्यप कुलपालक ॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय वेष धरि सोइ कि आवा ॥
सहज विराग रूप मन मोरा । थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥
ताते प्रभु पूछों सद भाऊ । कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इनहिं विलोकत अति अनुरागा । वरबस ब्रह्म सुखहि मन त्यागा ॥
कह मुनि विहँसि कहेहु न्यप नीका । वचन तुम्हार न होहि अलीका ॥
ये प्रिय सबहिं जहाँ लगि प्राणी । मन मुसकाहिं राम सुनि बानी ॥
रघुकुल मणि दशरथ के जाये । मम हित लागि नरेश पठाये ॥

राम लषण दोउ बंधु वर रूप शील बल धाम ॥
मख राखेउ सब साखि जग जीत असुर संग्राम ॥ २२८

मुनि तव चरण देखि कह राऊ । कहि न सकों निज पुण्य प्रभाऊ ॥
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता । आनन्द हू के आनँद दाता ॥
इनकी प्रीति परस्पर पावनि । कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू । पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥
मुनिहि प्रशंसि नाइ पद शीशा । चले लिवाइ नगर अवनीशा ॥
सुन्दर सदन सुखद सब काला । तहां वास लै दीन्ह भुआला ॥
करि पूजा सब विधि सेवकाई ॥ गयेउ राउ गृह विदा कराई ॥

दोहा — ऋषय संग रघुवंश मणि करि भोजन विश्राम ॥
वैठे प्रभु भ्रातासहित दिवस रहा भरि याम ॥ २२८

लषण हृदय लालसा विशेषी । जाइ जनक पुर आइय देखी ॥
प्रभु भय बहुरि मुनिहिं सकुचाहीं । प्रकट न कहहिं मनहिं मुसकाहीं ॥
राम अनुज मनकी गति जानी । भक्ति बछलता हिय हुलसानी ॥
परम विनीत सकुचि मुसुकाहीं । बोले गुरुअनुसासन पाई ॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं । प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥
जो राउर अनुसासन पाऊं ॥ नगर देखाइ तुरत लै आऊं ॥
सुनि मुनीश कह वचन सप्रीती । कस न राम राखहु तुम नीती ॥
धर्म सेतु पालक तुम ताता ॥ प्रेम विवश सेवक सुखदाता ॥

दोहा — जाइ देखि आवहु नगर सुख निधान दोउ भाइ ॥
करहु सुफल सबके नयन सुन्दर वदन दिखाइ

मुनिपद कमल वन्दि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता ॥
वालकवृन्द देखि अतिशोभा । लगे संग लोचन मन लोभा ॥
पीत वसन परिकर कटि भाथा । चारु चाप शर सोहत हाथा ॥
तनु अनुहरत सुचंदन खोरी । श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरि कंदर वाहु विशाला ॥ उर अति रुचिर नागमणिमाला ॥
सुभग श्रवण सरसीरुह लोचन । वदन मयंक तापत्रय मोचन ॥
कानन कनक फूल छवि देही । चितवत चितहि चोरि जनु लेही ॥
चितवनि चारु भृकुटि वर वांकी । तिलक रेख शोभा जनु चांकी ॥

दोहा — रुचिर चौतनी शुभग शिर मेचक कुंचित केश ॥

नख शिख सुन्दर बन्धु दोउ शोभा सकल सुदेश ॥ २३१

देखन नगर भूप सुत आये ॥ समाचार पुरवासिन पाये ॥
धाय धाम काम सब त्यागे ॥ मनहु रंक निधि लूटन लागे ॥
निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई ॥ होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥
युवती भवन झरोखन लागी ॥ निरखहिं राम रूप अनुरागी ॥
कहहिं परस्पर बचन सप्रीती ॥ सखि इन कोटि काम छवि जीती ॥
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं ॥ शोभा अस कहुँ सुनियत नाहीं ॥
विष्णु चारि भुज बिधि मुख चारी ॥ बिकट भेष मुख पञ्च पुरारी ॥
अपर देव अस को जग आही ॥ यहि सखि छवि पटतरिये जाही ॥

दोहा ॥ बय किशोर सुखमा सदन श्याम गौर सुखधाम ॥
अंग अंग पर वारिये कोटि कोटि शत काम ॥ २३२

कहहु सखी अस को तनुधारी ॥ जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी ॥ जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥
ये दोउ न्रप दशरथ के ढोटा ॥ बाल मरालन के कल जोटा ॥
मुनि कौशिक मख के रखवारे ॥ जिन रण अजय निशाचर मारे ॥
श्याम गात कल कंज बिलोचन ॥ जो मारीच सुभुज मद मोचन ॥
कौशिल्या सुत सो सुखखानी ॥ नाम राम धनु सायक पानी ॥
गौर किशोर भेष बर काछे ॥ कर शर चाप राम के पाछे ॥ ५ ॥
लछिमण नाम राम लघु भ्राता ॥ सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दोहा ॥ विप्र काज करि बन्धु दोउ मग मुनि बधू उधारि ॥
आये देखन चाप मख सुनि हरषीं सब नारि ॥ २३३

देखि राम छवि कोउ इक कहई ॥ योग्य जानकी यह बर अहई ॥
जो सखि इनहि देख नरनाहू ॥ प्रण परिहरि हठि करै विवाहू ॥
कोउ कह इन भूपति पहिचाने ॥ मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परन्तु प्रण राउ न तजई ॥ विधि बश हठि अविवेकहि भजई ॥

कोउ कह जौ भल अहै बिधाता । सब कहँ सुनिय उचित फलदाता ॥
तौ जानकिहि मिलिहि बर एहू । नाहिन आली यह संदेहू ॥
जौ बिधि बस अस बनै संयोगू । तौ कृत कृत्य होहिं सब लोगू ॥
सखि हमरे आरति अति ताते । कबहुँक ये आवहिं एहि नाते ॥

दोहा । नाहित हम कहँ सुनहु सखि इन्ह कर दर्शन दूरि ।
यह संघट तब होइ जब पुण्य पुराकृत भूरि ॥ २३५ ॥

बोली अपर कहेउ सखि नीका । यह बिवाह अति हित सब ही का ॥
कोउ कहै शंकर चाप कठोरा ॥ ये श्यामल मृदु गात किशोरा ॥
सब असमंजस अहै सयानी ॥ यह सुनि अपर कहै मृदु बानी ॥
सखि इन कहँ कोउ कोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं ॥
परसि जासु पद पंकज धूरी ॥ तरी अहिल्या कृत अघ भूरी ॥
सो कि रहै बिन शिव धनु तोरे ॥ यह प्रतीति परिहरिय न भोरे ॥
जेहि बिरंचि रचि सीय सँवारी । तेइ श्यामल बर रचेउ बिचारी ॥
तासु बचन सुनि सब हरषानी । ऐसोइ होउ कहहिं मृदु बानी ॥

दोहा । हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृन्द ।
जाहिं जहाँ जहँ बन्धु दोउ तहँ तहँ परमानन्द ॥ २३६ ॥

पुर पूरब दिशि गे दोउ भाई ॥ जहँ धनुमख हित भूमि बनाई ॥
अति बिस्तार चारु गच ढारी ॥ बिमल बेदिका रुचिर सँवारी ॥
चहुँ दिशि कञ्चन मञ्च बिशाला । रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा ॥ अपर मञ्च मण्डली बिलासा ॥
कछुक ऊँच सब भाँति सुहाई । बैठहिं नगर लोग सब आई ॥
तिनके निकट बिशाल सुहाये । धवल धाम बहु बरण बनाये ॥
जहँ बैठी देखैं पुर नारी ॥ यथा जोग निज कुल अनुहारी ॥
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना । सादर प्रभुहिं दिखावहिं रचना ॥

दोहा । सब शिशु एहि मिसु प्रेम बस परसि मनोहर गात ॥

तनु पुलकहि अति हर्ष हिय देखि २ दोउ भ्रात ॥ २३६

शिशु सब राम प्रेम बस जाने ॥ प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
निज निज रुचि सब लेहि बुलाई ॥ सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥
राम दिखावहिं अनुजहिं रचना ॥ कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥
लवन मेष महँ भुवन निकाया ॥ रचै जासु अनुशासन माया ॥
भक्ति हेत सोइ दीन दयाला ॥ चितवत चकित धनुष मख शाला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं ॥ जानि विलम्ब त्रास मन माहीं ॥
जासु त्रास डर कहँ डर होई ॥ भजन प्रभाव देखावत सोई ॥
कहि बातें मृदु मधुर सुहाई ॥ किये बिदा बालक बरि आई ॥

दोहा — सभय सप्रेम विनीत अति सकुचि सहित दोउ भाइ ।
गुरु पद पंकज नाइ शिर बैठे आयसु पाइ ॥ ९ ॥ २३७

निशि प्रवेश मुनि आयसु दीन्हा ॥ सबहीं सन्ध्या वन्दन कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी ॥ रुचिर रजनी युग याम सिरानी ॥
मुनि वर शयन कीन्ह तब जाई ॥ लगे चरण चापन दोउ भाई ॥
जिनके चरण सरोरुह लागी ॥ करत विविध जप योग विरागी ॥
ते दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते ॥ गुरु पद कमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा ॥ रघुवर जाय शयन तब कीन्हा ॥
चापत चरण लषण उर लाये ॥ सभय सप्रेम परम सुख पाये ॥
पुनि २ प्रभु कह सोवहु ताता ॥ पौढ़े धरि उर पद जलजाता ॥

दोहा — उठे लषण निशि विगत सुनि अरुन शिखा धुनि कान ।
गुरु ते पहिले जगत पति जागे राम सुजान ॥ २३८

सकल शौच करि जाइ नहाये ॥ नित्य निवाह गुरुहि सिर नाये ॥
समय जानि गुरु आयसु पाई ॥ लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूप बाग वर देखेउ जाई ॥ जहँ बसंतु ऋतु रही लुभाई ॥
लागे विटप मनोहर नाना ॥ बरण बरण वर बेलि विताना ॥

नव पल्लव दल सुमन सुहाये। निज संपति सुरतरुहि लजाये॥
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहग नचत कल मोरा॥
मध्य बाग सर सोह सुहावा। मणि सोपान विचित्र बनावा॥
अमल सलिल सरसिज बहुरंगा। जल खग कूजन गुञ्जन भृंगा॥

दोहा — बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हर्षे बन्धु समेत॥
परमरम्य आराम यह जो रामहि सुख देत॥

चहुंदिशि चितै पूंछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन॥
तेहि अवसर सीता तहं आई। गिरजा पूजन जननि पठाई॥
संग सखी सब सुभग सयानी। गावहि गीत मनोहर बानी॥
सर समीप गिरजा गृह सोहा। बरणि न जाय देखि मन मोहा॥
मज्जन करि सर सखी समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता॥

श्रीरामचन्द्र अरु लक्ष्मण जी का पुष्प वाटिका में जाना और जानकी जी का गिरजा पूजनार्थ आना



पुजा कीन्ह अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग बर मागा ।
एक सखी सिय संग बिहाई॥ गई रही देखन फुलवाई॥
तेइ दोउ बन्धु बिलोकेउ जाई॥ प्रेम बिबस सीता पहं आई॥

दोहा — तासु दशा देखी सखिन पुलक गात जल नयन
कहु कारण निज हरख कर पूछहि सब मृदु बयन २५०

२ श्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ।
१ देखन बाग कुंवर दोउ आये॥ बय किशोर सब भांति सुहाये॥
सुनि हरषीं सब सखी सयानी । सिय हिय अति उतकंठा जानी॥
एक कहहिं नृप सुत ते आली । सुने जे मुनि संग आये काली ।
जिन निजरूप मोहनी डारी॥ कीन्हे स्ववस नगर नर नारी॥
बरणत छवि जहं तहं सब लोगू । अवसि देखिये देखन योगू॥
तासु वचन अति सियहि सुहाने । दरश लागि लोचन अकुलाने ।
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । प्रीति पुरातन लखै न कोई॥

दोहा — सुमिर सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत॥
चकित बिलोकत सकल दिशि जनु शिशु मृगी सभीत २५१

कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि । कहत लषण सन राम हृदय गुनि ।
मानहु मदन दुंदुभी दीन्ही॥ मनसा विश्व विजय कहं कीन्ही ।
अस कहि फिरि चितये तेहि ओरा । सिय मुख शशि भये नयन चकोरा ।
भये बिलोचन चारु अचंचल॥ मनहु सकुचि निमि तजेउ दृगंचल ।
देखि सीय शोभा सुख पावा॥ हृदय सराहत वचन न आवा॥
जनु विरंचि सब निज निपुणाई । विरचि विश्व कहं प्रगट दिखाई ।
सुन्दरता कहं सुन्दर करई॥ छवि गृह दीप शिखा जनु बरई॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी॥ केहि पटतरिये विदेह कुमारी॥

दोहा — सिय शोभा हिय बरणि प्रभु आपनि दशा विचारि
बोले शुचि मन अनुज सन वचन समय अनुहारि २५२

तात जनक तनया यह सोई॥ धनुष यज्ञ जाहि कारण होई॥
पूजन गौर सखी ले आई॥ करत प्रकाश फिरत फुलवाई
जासु बिलोकि अलोकिक शोभा सहज पुनीत मोर मन छोभा॥
सो सब कारण जान विधाता फरकहि शुभग अंग सुनु भ्राता॥
रघुबंशिन कर सहज सुभाऊ मन कुपन्थ पग धरै न काऊ
मोहि अतिशय प्रतीति जियकेरी जेहि सपनेहु पर नारि न हेरी॥
जिनके लहहिं न रिपुरणपीठी नहिं लावहि पर तिय मन डीठी
मंगत लहहिं न जिनके नाहीं ते नर बर थोरे जग माहीं॥

दोहा करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लुभान
मुख सरोज मकरन्द छवि करत मधुप इव पान २५७

चितवत चकित चहूं दिशि सीता कहं गये नृप किशोर मन चीता
जहं बिलोकि मृग शावक नयनी जनु तहं बरष कमल सित श्रयनी
लता ओट तब सखिन लषाये श्यामल गौर किशोर सुहाये॥
देखि रूप लोचन ललचाने हरषे जनु निज निधि पहिचाने
थके नयन रघुपति छवि देखी पलकन हू परिहरी निमेषी॥
अधिक सनेह देह भई भोरी शरद शशिहि जनु चितव चकोरी
लोचन मगु रामहि उर आनी दीन्हे पलक कपाट सयानी॥
जब सिय सखिन प्रेम बस जानी कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी

दोहा लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ
निकसे जनु युग विमल विधु जलद पटल बिलगाइ

शोभा सींव सुभग दोउ बीरा नील पीत जलजात शरीरा
काक पक्ष सिर सोहत नीके॥ गुच्छा बिच २ कुसुम कली के॥
भाल तिलक श्रम विन्दु सुहाये श्रवण सुभग भूषण छबि छाये
विकट भृकुटि कच घुघरवारे नव सरोज लोचन रतनारे॥
चारु चिबुक नासिका कपोला हास बिलास लेत मन मोला

मुख छवि कहि न जाय मोहि पाहीं — जो बिलोकि बहु काम लजाहीं
उर मणि माल कंबु कल ग्रीवा — काम कलभ कर भुज बल सींवा
सुमन समेत बाम कर दोना॥ — सांवर कुंवर सखी सुठि लोना

दोहा केहरि कटि पट पीत धर सुखमा शील निधान
देखि भानु कुल भूषणहि बिसरा सखिन्ह अपान २४५

चौ० धीरज इक सखी सयानी — सीता सन बोली गहि पानी॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू — भूप किशोर देखि किन लेहू॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे — सन्मुख दोउ रघुबंश निहारे
नख सिख देखि राम की शोभा — सुमिरि पिता प्रण मन अति क्षोभा
पर बस सखिन लखी जब सीता — भये गहरु सब कहहिं सभीता
पुनि आउब इहि बिरियां काली — अस कहि मन बिहसी इक आली
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी — भयउ बिलम्ब मातु भय मानी
धरि बड़ि धीर राम उर आनी॥ — फिरि अपन प्रण पितु बस जानी

दोहा देखन मिस मृग बिहंग तरु फिरै बहोरि बहोरि
निरखि २ रघुबीर छवि बाढ़ी प्रीति न थोरि॥ २४६

जानि कठिन शिव चाप बिसूरति — चली राखि उर श्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी — सुख सनेह शोभा गुण खानी
परम प्रेम मय मृदु मसि कीन्ही — चारु चित्त भीतर लिखि लीन्ही
गई भवानी भवन बहोरी॥ — बंदि चरण बोली कर जोरी॥
जय जय जय गिरिराज किशोरी — जय महेश मुख चन्द चकोरी
जय गज बदन षडानन माता — जगत जननि दामिनि द्युति गाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना — अमित प्रभाव वेद नहिं जाना
भव भौ विभव पराभव कारिणि — विश्व बिमोहनि स्वबस बिहारिणि

दोहा पति देवता सुतीय महं मातु प्रथम तव रेख
महिमा अमित न कहि सकहि सहस शारदा शेष

सेवत तोहि सुलभ फलचारी॥ बरदायनि त्रिपुरारि पियारी॥
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे॥ सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥
मोर मनोरथ जानहु नीके॥ बसहु सदा उर पुर सब हीके॥
कीन्हेउ प्रगट न कारण तेही॥ अस कहि चरण गहे बैदेही॥
विनय प्रेम वस भई भवानी॥ खसी माल मूरति मुसकानी॥
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ॥ बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ॥
सुनु सिय सत्य अशीश हमारी॥ पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥
नारद वचन सदा शुचि साचा॥ सो वर मिलिहि जाहि मन राचा॥

छन्द — मन जाहि राचेउ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो॥
यहि भांति गौरि अशीश सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि २ मुदित मन मंदिर चली॥ ३२

सो० — जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाय कहि॥
मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे॥॥ २४

हृदय सराहत सीय लुनाई॥ गुरु समीप गवने दोउ भाई॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं॥ सरल सुभाव छुआ छल नाहीं॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही॥ पुनि अशीश दोउ भाइन्ह दीन्ही॥
सुफल मनोरथ होइ तुम्हारे॥ राम लषन सुनि भये सुखारे॥
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी॥ लगे कहन कछु कथा पुरानी॥
विगत दिवस मुनि आयसु पाई॥ सन्ध्या करण चले दोउ भाई॥
प्राची दिशि शशि उयउ सुहावा॥ सिय मुख सरिस देखि सुख पावा॥
बहुरि विचार कीन्ह मन माहीं॥ सीय वदन सम हिमकर नाहीं॥

जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चन्द वापुरो रंक॥ २४८

घटै बढ़ै विरहिन दुखदाई॥ ग्रसै राहु निज सन्धिहि पाई॥

कोक शोक प्रद पंकज द्रोही। अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही
वैदेही मुख पट तर दीन्हे ॥ होय दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सिय मुख छवि विधु व्याज बखानी गुरु पहं चले निशा बड़ जानी
करि मुनि चरण सरोज प्रणामा आयसु पाय कीन्ह विश्रामा ॥
विगत निशा रघुनायक जागे बन्धु विलोकि कहन अस लागे
उयेउ अरुण अवलोकहु ताता पंकज कोक लोक सुखदाता
बोले लषण जोरि जुग पानी प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बानी

दोहा अरुणोदय सकुचे कुमुद उडगण ज्योति मलीन
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन

नृप सब नखत करहिं उजियारी टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर खग नाना हरषे सकल निशा अवसाना
ऐसेहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे होइहहिं टूटे धनुष सुखारे
उदय भानु बिनु श्रम तम नासा दुरे नखत जग तेज प्रकासा
रवि निज उदय व्याज रघुराया प्रभु प्रताप सब नृपन दिखाया
तव भुज बल महिमा उदघाटी प्रगट धनु बिघटन परिपाटी
बन्धु बचन सुनि प्रभु मुसकाने होइ सुचि सहज पुनीत नहाने
नित्य क्रिया करि गुरु पहं आये चरण सरोज सुभग शिर नाये
सतानन्द तब जनक बुलाये ॥ कौशिक मुनि पहं तुरत पठाये
जनक विनय तिन आय सुनाई हरषे बोलि लिये दोउ भाई

दोहा सतानन्द पद वन्दि प्रभु बैठे गुरु पहं जाय ॥
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बुलाय

सीय स्वयंवर देखिय जाई ॥ ईश काहि धौं देय बड़ाई ॥
लषण कहा यश भाजन सोई नाथ कृपा तव जापर होई
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी दीन्ह असीस सबहिं सुख मानी
पुनि मुनि वृन्द समेत कृपाला देखन चले धनुष मख शाला

रंगभूमि आये दोउ भाई॥ असि सुधि सब पुरवासिन पाई॥
चले सकल गृह काज बिसारी॥ बालक युवा जरठ नर नारी॥
देखी जनक भीर भई भारी॥ शुचि सेवक सब लिये हँकारी॥
तुरत सकल लोगन पहँ जाऊ। आसन उचित देहु सब काहू॥

दो० कहि मृदु वचन विनीत तिन बैठारे नर नारि॥
उत्तम मध्यम नीच लघु निज २ थल अनुहारि॥ २५१

राज कुंवर तेहि अवसर आये॥ मनो मनोहरता छवि छाये॥
गुणसागर नागर वर बीरा॥ सुन्दर श्यामल गौर शरीरा॥
राज समाज विराजत रूरे॥ उडुगण महँ जनु युग विधु पूरे
जिनके रही भावना जैसी॥ प्रभु मूरति देखी तिन तैसी
देखहिं भूप महा रणधीरा। मनहु वीर रस धरे शरीरा॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहु भयानक मूरति भारी
रहे असुर छल जो नृप वेषा॥ तिन प्रभु प्रगट काल सम देखा
पुरवासिन देखे दोउ भाई॥॥ नर भूषण लोचन सुखदाई॥

दो० नारि विलोकहिं हरषि हिय निज २ रुचि अनुरूप
जनु सोहत शृंगार धरि मूरति परम अनूप॥॥ २५२

विदुषन प्रभु विराट मय दीशा। बहु मुख कर पग लोचन शीशा
जनक जाति अवलोकहिं कैसे। सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे
सहित विदेह विलोकहिं रानी॥ शिशु सम प्रीति न जाय बखानी॥
योगिन परम तत्व मैं भासा॥ सन्त शुद्ध मन सहज प्रकाशा
हरि भक्तन देखउ दोउ भ्राता। इष्ट देव इव सब सुखदाता॥
रामहिं चितव भाव जेहि सीया। सो सनेह सुख नहिं कथनीया॥
उर अनुभवति न कहि सक कोऊ। कवन प्रकार कहै कवि कोऊ
एहि विधि रहा जाहि जस भाऊ। तेहि तस देखेउ कौशल राऊ॥

दो० राजत राज समाज महँ कोशल राज किशोर

चार॥ २५३

सुन्दर श्यामल गौर तनु विश्व विलोचन चोर॥ २५३

कोटि काम उपमा लघु सोऊ। सहज मनोहर मूरति दोऊ॥
नीरज नयन भावते जीके। शरद चन्द निन्दक मुख नीके॥
चितवनि चारु मारु मद हरणी। भावत हृदय जाय नहिं वरणी॥
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला। विवुक अधर सुन्दर मृदु बोला॥
कुमुद बन्धु कर निन्दक हासा। भृकुटी विकट मनोहर नासा॥
भाल विशाल तिलक झलकाही। कच विलोकि अलि अवलि लजाही॥
पीत चौतनी शिरन सुहाई। कुसुम कली विच बीच बनाई॥
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवा। जनु त्रिभुवन सुखमा की सीवा॥

दो॰ कुंजर मणि कण्ठा ललित उर तुलसी की माल।
वृषभ कन्ध केहरि ठवनि बल निधि बाहु विशाल॥ २५४

कटि तूणीर पीत पट बांधे। कर शर धनुष वाम कर कांधे॥
पीत यज्ञ उपवीत सुहाई। नख शिख मंजु महा छबि छाई॥
देखि लोग सब भये सुखारे। इकटक लोचन टरहिं न टारे॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई॥
करि विनती निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि दिखाई॥
जहं जहं जाहिं कुंवर वर दोऊ। तहं तहं चकित चितव सब कोऊ॥
निज निज रुचि रामहि सब देखा। कोउ न जान कछु मर्म विशेषा॥
भलि रचना नृप सन मुनि कहेऊ। राजा मुदित परम सुख लेऊ॥

दो॰ सब मञ्चन ते मञ्च इक सुन्दर विशद विशाल।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहं बैठारे महिपाल॥ २५५

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे। जनु राकेश उदय भये तारे॥
अस प्रतीति तिनके मन माहीं। राम चाप तोरब शक नाहीं॥
बिनु भंजेहु भव धनुष विशाला। मेलहि सीय राम उर माला॥
अस कहि हसे अपर भूप सुनि बानी। जे अविवेकी अन्ध अभिमानी॥
अस विचारि गवने उघर आई। जे प्रताप बल तेज गवाई॥

तोरेउ धनुष ब्याह अवगाहा बिनु तोरे को कुंवरि बिवाहा॥
एकबार कालहु किन होई॥ सिय हित समर जितब हम सोई
यह सुनि अपर भूप मुसकाने॥ धर्मशील हरि भक्त सयाने॥

सो॰ सीय बिवाहब राम गर्व दूरि करि न्रपन कर॥
जीत को सक संग्राम दसरथ के रण बांकुरे॥ २५६

वृथा मरहु जनि गाल बजाई मन मोदक नहि भूख बुझाई॥
शिव हमार सुनु परम पुनीता जग दम्बा जानहु जिय सीता॥
जगत पिता रघुपतिहि विचारी भरि लोचन छबि लेहु निहारी
सुन्दर सुखद सकल गुण राशी ये दोउ बन्धु शम्भु उर बासी॥
सुधा समुद्र समीप बिहाई॥ मृग जल निरखि मरहु कत जाई
करहु जाइ जाकहं जोइ भावा॥ हम तो आजु जन्म फल पावा॥
असकहि भले भूप अनुरागे॥ रूप अनूप बिलोकन लागे॥
देखहिं सुर नभ चढे बिमाना॥ बरषहिं सुमन करहिं कल गाना॥

दो॰ जानि सु अवसर सीय तब पठवा जनक बुलाइ
चतुर सखी सुन्दरि सकल सादर चली लिवाइ॥ २५७

सिय शोभा नहि जाइ बखानी जगदम्बिका रूप गुण खानी
उपमा सकल मोहि लघु लागी प्राकृत नारि अंग अनुरागी॥
सीय बरनि तेहि उपमा देई॥ को कवि कहै अयश को लेई॥
जो पटतरिय तीय सम सीया॥ जग अस युवति कहां कमनीया॥
गिरा मुखर तनु अर्ध भवानी रति अति दुखित अतनु पति जानी
बिष बारुणी बन्धु प्रिय जेही॥ कहिय रमा सम किमि बैदेही॥
जो छबि सुधा पयोनिधि होई परम रूप मय कच्छप सोई॥
शोभा रजु मंदर शृंगारू॥ मथै पाणि पंकज निज मारू॥

दो॰ एहि बिधि उपजै लक्षि जब सुन्दरता सुख मूल
तदपि सकोच समेत कवि कहहि सीय सम तूल २५८

चलीं संग लै सखी सयानी॥	गावत गीत मनोहर बानी॥
सोह नवल तन सुन्दर सारी	जगति जननि अतुलित छवि भारी
भूषण सकल सुदेश सुहावे॥	अंग अंग रचि सखिन बनाये॥
रंग भूमि जब सिय पगु धारी॥	देखि रूप मोहे नर नारी॥
हर्षि सुरन दुंदुभी बजाई॥	बर्षि प्रसून अप्सरा गाई॥
सीय चकित चित रामहि चाहा	भये मोह बस सब नर नाहा॥
पाणि सरोज सोह जयमाला	औचक चितै सकल महिपाला
मुनि समीप बैठे दोउ भाई॥	लगे ललकि लोचननिधि पाई

दो॰ गुरुजन लाज समाज बड़ देखि सीय सकुचानि
लगी विलोकन सखिन तन रघुबीरहि उर आनि २५८

राम रूप अरु सिय छवि देखी	नर नारिन परिहरी निमेषी॥
सोचहि सकल कहत सकुचाहीं	विधि सन विनय करहिं मन माहीं
हरु विधि वेगि जनक जड़ताई	मति हमारि अस देउ सुहाई॥
बिन विचार प्रण तजि नर नाहू	सीय राम कर करै विवाहू॥
जग भल कहहि भाव सबकाहू	हठ कीन्हेउ अंतर दाहू॥
यह लालसा मगन सब लोगू	बर सांवरो जानकी योगू॥
तब बन्दीजन जनक बुलाये॥	बिरदावली कहत चलि आये॥
कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा	चले भाट हिय हर्ष न थोरा॥

दोहा बोले बन्दी बचन बर सुनहु सकल महिपाल॥
प्रण विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाय विशाल २५९

नृप भुजबल विधु शिवधनु राहू	गरुअ कठोर विदित सब काहू
रावण वाण महा भट भारे॥	देखि सरासन गवहि सिधारे॥
सोइ पुरारि को दण्ड कठोरा।	राज समाज आजु जेहि तोरा॥
त्रिभुवन जय समेत वैदेही॥	विनहि विचार वरै हठि तेही॥
सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे	भटमानी अति शय मन माखे।

परि कर बांधि उठे अकुलाई ॥	चले इष्ट देवन शिर नाई ॥
तमकि ताकि तकि शिवधनु धरहीं	उठे न कोटि भांति बल करहीं
जिनके कछु विचार मन माहीं ॥	चाप समीप महीप न जाहीं ॥

दोहा तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ
मनहु पाइ भट बाहु बल अधिक अधिक गरुआइ

भूप सहस दस एकहि बारा ॥	लगे उठावन टरहि न टारा ॥
डगै न शम्भु शरासन कैसे ॥	कामी बचन सती मन जैसे ॥
सब नृप भये योग उपहासी ॥	जैसे बिनु बिराग सन्यासी ॥
कीरति विजय वीरता भारी ॥	चले चापकर सरबस हारी ॥
श्री हत भये हारि हिय राजा ॥	बैठे निज निज जाइ समाजा ॥
नृपन बिलोकि जनक अकुलाने	बोले बचन रोष जनु साने ॥
दीप दीप के भूपति नाना ॥	आये सुनि हम जो प्रण ठाना
देव दनुज धरि मनुज शरीरा	बिपुल देव आये रण धीरा

धनुष भंजन के निमित्त सम्पूर्ण राजा लोगों का जाना और धनुष का न उठना



दोहा। कुंवरि मनोहर विजय बड़ि कीरति अति कमनीय
पावन हार विरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥ २६१

कहहु काहि यह लाभ न भावा। काहु न शंकर चाप चढ़ावा ॥
रहा चढ़ाउब तोरब भाई ॥ तिल भरि भूमि न सकेउ छुड़ाई ॥
अब जनि कोउ माखै भटमानी। वीर विहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आस निज २ गृह जाहू। लिखा न विधि बैदेहि बिबाहू ॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊं। कुंवरि कुवारि रहे का करऊं ॥
जौ जनत्यो बिनु भट भुइ भाई। तौ प्रण करि हो त्यों न हसाई ॥
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकी भये दुखारी ॥
माखे लषण कुटिल भै भौंहैं। रद पट फरकत नयन रिसौंहैं ॥

दोहा। कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बाण
नाइ राम पद कमल शिर बोले गिरा प्रमाण ॥ २६२

रघुबंसिन महं जहं कोउ होई। तेहि समाज अस कहै न कोई ॥
कही जनक जस अनुचित बानी। विद्यमान रघुकुल मणि जानी ॥
सुनहु भानु कुल पंकज भानू ॥ कहौं सुभाव न कछु अभिमानू ॥
जौ राउर अनुशासन पाऊं ॥ कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं ॥
कांचे घट जिमि डारौं फोरी ॥ सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। का बापुरो पिनाक पुराना ॥ * ॥
नाथ जानि अस आयसु होई। कौतुक करौं विलोकिय सोऊ ॥
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं। शत जोजन प्रमाण लै धावौं ॥

दोहा। तोरौं छत्रक दण्ड इव तव प्रताप बल नाथ ॥
जौं न करौं प्रभु पद सपथ पुनि न धरौं धनु हाथ ॥ २६३

लषण सकोप बचन जब बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डराने ॥ सिय हिय हरषि जनक सकुचाने।
गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भये पुनि २ पुलकाहीं ॥

सैनहिं रघुपति लषण निवारे॥ प्रेम समेत निकट बैठारे॥
विश्वामित्र समय प्रभु जानी॥ बोले अति सनेह मृदु बानी॥
उठहु राम भंजहु भव चापू॥ मेटहु तात जनक परितापू॥
सुनि गुरुवचन चरण सिरनावा। हर्ष विषाद न कछु उर आवा।
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये॥ ठवनि युवा मृगराज लजाये॥

दोहा— उदित उदय गिरि मञ्चपर रघुवर बाल पतंग॥
विकसे सन्त सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥ २६४

नृपन केरि आशा निशि नासी। वचन नखत अवली न प्रकाशी।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने॥
भये विशोक कोक मुनि देवा॥ वर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा॥
गुरु पद वन्दि सहित अनुरागा॥ राम मुनिन सन आयसु मांगा॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु कुञ्जर वर गामी॥
चलत राम सब पुर नर नारी॥ पुलकि पूरि तन भये सुखारी॥
वंदि पितर सुर सुकृत संभारे॥ जो कछु पुन्य प्रभाव हमारे॥
तौ शिव धनुष मृणाल की नाईं तोरहिं राम गणेश गुसांईं॥

दोहा— रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन समीप बुलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहै बिलखाइ॥ २६५

सखि सब कौतुक देखन हारे॥ जेउ कहावत हितू हमारे॥
कोउ न बुझाय कहै नृप पाहीं॥ ये बालक अस हठ भल नाहीं॥
रावण बाण छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा॥
सो धनु राजकुंवर कर देहीं॥ बाल मराल कि मन्दर लेहीं॥
भूप सयानप सकल सिरानी॥ सखि विधि गति कछु जाय न जानी
बोली चतुर सखी मृदु बानी॥ तेजवंत लघु गनिय न रानी॥
कहँ कुम्भज कहँ सिन्धु अपारा। सोषेउ सुयश सकल संसारा।
रवि मण्डल देखत लघु लागा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा।

दोहा - मंत्र परम लघु जासु बस विधि हरि हर सुर सर्व
महा मत्त गजराज कह बस कर अंकुश खर्व॥ २६६

काम कुसुम धनु शायक लीन्हे सकल भुवन अपने बश कीन्हे
देवि तजिय शंशय अस जानी भंजब धनुष राम सुनु रानी
सखी बचन सुनि भइ परतीती मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती॥
तब रामहि बिलोकि बैदेही॥ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही
मनही मन मनाय अकुलानी होहु प्रसन्न महेश भवानी।
करहु सुफल आपनि सेवकाई हरि हित हरहु चाप गरुआई॥
गरा नायक बर दायक देवा आजु लगे कीन्हो तव सेवा
बार बार बिनती सुनि मोरी॥ करहु चाप गुरुता अति थोरी॥

दोहा - देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली शरीर॥ २६७

नीके निरखि नयन भरि शोभा पितु प्रण सुमिरि बहुरि मन क्षोभा
अहह तात दारुन हठ ठानी॥ समुझत नहिं कछु लाभ न हानी
सचिव सभय सिख देइ न कोई बुध समाज बड़ अनुचित होई
कहँ धनु कुलिशहु चाहि कठोरा कहँ श्यामल मृदु गात किशोरा
बिधि केहि भांति धरों उर धीरा सिरस सुमन किमि बेधहि हीरा
सकल सभा की मति भइ भोरी अब मोहिं शम्भु चाप गति तोरी
निज जड़ता लोगन पर डारी॥ होहु हरुअ रघुपतिहि निहारी
अति प्रताप सीय मन माही लव निमेष युग सम चलि जाही

दोहा - प्रभुहि चितै पुनि चितै महि राजत लोचन लोल
खेलत मनसिज मीन युग जनु विधि मण्डल डोल २६८

गिरा अलिन मुख पंकज रोकी प्रगट न लाज निशा अवलोकी
लोचन जल रह लोचन कोना जैसे परम कृपण कर सोना॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी धर धीरज प्रतीति उर आनी

तन मन वचन मोर प्रन सांचा । रघुपति पद सरोज मन रांचा ॥
तो भगवान सकल उर बासी । करिहहिं मोहिं रघुपति की दासी ॥
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलत न कुछ संदेहू ॥
प्रभु तन चिते प्रेम प्रन ठाना । कृपा निधान राम सब जाना ॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे । चितव गरुड लघु व्यालहिं जैसे ॥

दोहा। लखण लखेउ रघुवंश मणि ताकेउ हर को दण्ड। पुलकि गात बोले वचन चरण चापि ब्रह्मण्ड ॥ २६९ ॥

दिशि कुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरणि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं शंकर धनु तोरा । होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप समीप राम जब आये । नर नारिन सुर सुकृत मनाये ॥
सब कर संशय अरु अज्ञानू । मन्द महीपन कर अभिमानू ॥
भृगुपति केरि गर्व गरुआई । सुर मुनि वरन केरि कदराई ॥
सिय कर सोच जनक पछितावा । रानिन कर दारुण दुख दावा ॥
शम्भु चाप बड बोहित पाई । चढे जाइ सब संग बनाई ॥
रामबाहु बल सिंधु अपारा । चहत पार नहि कोउ कनहारा ॥

दोहा। राम विलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि। चितई सीय कृपाल तन जानी विकल विशेषि ॥ २७० ॥

देखी विपुल विकल वैदेही । निमिष बिहात कल्प सम तेही ॥
तृषित बारि बिन जो तन त्यागा । मुये करे का सुधा तडागा ॥
का वर्षा जब कृषी सुखाने । समय चूकि पुनि का पछिताने ॥
अस सिय जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति विशेखी ॥
गुरुहिं प्रनाम मनहि मन कीना । अति लाघव उठाय धनु लीन्हा ॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयेऊ । पुनि धनु नभ मंडल सम भयेऊ ॥
लेत चढावत खैंचत गाढे । काहु न लखा देखि सब ठाढे ॥
तेहि क्षण मध्य राम धनु तोरा । भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छन्द॰ भरे भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारहीं।
कोदण्ड भञ्जेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं॥ २३

सो॰ शंकर चाप जहाज सागर रघुवर बाहुबल॥
बूड़े सकल समाज चढ़े जे प्रथमहि मोहबस॥ २६

प्रभु दोउ चापखण्ड महि डारे॥ देखि लोग सब भये सुखारे॥
कौशिक रूप पयोनिधि पावन। प्रेम बारि अवगाह सुहावन॥
रामरूप राकेश निहारी॥ बढ़ी बीचि पुलकावलि भारी॥
बाजे नभ गहगहे निशाना। देववधू नाचहिं करि गाना॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा। प्रभुहि प्रशंसहिं देहिं असीसा॥
बरषहिं सुमन रंग बहु माला॥ गावहिं किन्नर गीत रसाला॥

॥१५८॥ ...जीका धनुष तोड़ना और सम्पूर्ण देवताओंका ...



रही भुवन भरि जय जय बानी॥ धनुष भंग धुनि जात न जानी॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नरनारी। भंजेउ राम शम्भु धनु भारी॥

दो० बन्दी मागध सूत गण बिरद बदहिं मति धीर।
करहिं निछावरि लोग सब हय गज धन मणि चीर॥ २७१

झांझ मृदंग शंख सहनाई॥ भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये॥ जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये॥
सखिन सहित हर्षित अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी॥
जनक लहेउ सुख सोच विहाई। पैरत थके थाह जनु पाई॥
श्री हत भये भूप धनु टूटे॥ जैसे दिवस दीप छवि छूटे॥
सिय हिय सुख बरनिय किहि भांती। जनु चातक पाये जल स्वाती॥
रामहिं लषण विलोकत कैसे। शशिहि चकोर किशोरक जैसे॥
शतानंद तब आयसु दीन्हा॥ सीता गमन राम पहँ कीन्हा॥

दोहा संग सखी सुन्दरि चतुर गावहिं मंगल चार॥
गवनी बाल मराल गति सुखमा अंग अपार॥ २७२

सखिन मध्य सिय सोहत कैसी॥ छवि गण मध्य महाछवि जैसी॥
कर सरोज जयमाल सुहाई॥ विश्व विजय शोभा जनु छाई॥
तन सकोच मन परम उछाहू॥ गूढ़ प्रेम लखि परे न काहू॥
जाइ समीप राम छवि देखी। रहि जनु कुंवरि चित्र अवरेखी॥
चतुर सखी लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई॥
सुनत युगल कर माल उठाई॥ प्रेम विवश पहिराइ न जाई॥
सोहत जनु युग जलज सनाला॥ शशिहि सभीत देत जयमाला॥
गावहिं छवि अवलोकि सहेली॥ सिय जयमाल राम उर मेली॥

दोहा रघुबर उर जयमाल देखि देव बर्षहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु विलोकि रवि कुमुदगण॥ २७३

पुर अरु व्योम बाजने बाजे॥ खल भये मलिन साधु सब राजे॥

सुर किन्नर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा॥
नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटी॥ बार बार कुसुमावलि छूटी॥
जहं तहं विप्र वेद धुनि करहीं। बन्दी बिरदावलि उच्चरहीं॥
महि पाताल नाक यश व्यापा। राम बरी सिय भंजउ चापा॥
करहिं आरती पुर नर नारी॥ देहिं निछावरि वित्त बिसारी॥
सोहत सीय राम की जोरी॥ छवि श्रृंगार मनहु एक ठौरी॥
सखी कहहिं प्रभु पद गहु सीता। करति न चरण परस अति भीता॥

दोहा—गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पद पानि।
मन बिहसे रघुवंश मणि प्रीति अलौकिक जानि॥ २७३॥

तब सिय देखि भूप अभिलाखे। कूर कपूत मूढ़ मन माखे॥
उठि २ पहिरि सनाह अभागे॥ जहं तहं गाल बजावन लागे॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई॥ जीवत हमहिं कुंवरि को बरई॥
लेहु छुड़ाय सीय कह कोऊ॥ धरि बांधहु नृप बालक दोऊ॥
जो बिदेह कछु करै सहाई॥ जीतहु समर सहित दोउ भाई॥
साधु भूप बोले सुनि बानी॥ राज समाजहि लाज लजानी॥
बल प्रताप बीरता बड़ाई॥ नाक पिनाकहि संग सिधाई॥
सोइ सूरता कि अब कहं पाई। असबुधि तो बिधि मुंह मसि लाई॥

दो०—देखहु रामहिं नयन भरि तजि इर्षा मद मोह॥
लषण रोष पावक प्रबल जानि शलभ जनि होहु॥ २७४॥

वैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमि शश चहहि नाग अरि भागू॥
जिमि चह कुशल अकारण कोही। सब सम्पदा चहहि शिव द्रोही॥
लोभी लोलुप कीरति चहई॥ अकलंकता कि कामी लहई॥
हरि पद विमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालच नरनाहा॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी। सखी लिवाइ गईं जहं रानी॥
राम सुभाय चले गुरु पाहीं॥ सीय सनेह बरनत मन माहीं॥

रानिन सहित सोच बस सीया॥ अब धौं विधि हि कहा करनीया॥
भूपवचन सुनि इतउत तकही। लषन राम डर बोल न सकहीं॥

दोहा अरुण नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन सकोप।
मनहुं मत्त गजगण निरखि सिंह किशोरहि चोप॥ २७५

खरभर देखि बिकल नरनारी। सब मिलि देहिं महीपन गारी॥
तेहि अवसर सुनि शिव धनुभंगा। आये भृगुकुल कमल पतंगा॥
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने॥
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा। भाल विशाल त्रिपुंड विराजा॥
शीश जटा शशि वदन सुहावा। रिस वस कछुक अरुण ह्वै आवा॥
भृकुटी कुटिल नैन रिस राते॥ सहजहिं चितवत मनहु रिसाते॥
वृषभ कंध उर बाहु विशाला। चारु जनेउ माल मृगछाला॥
कटि मुनि बसन तून दुइ बांधे। धनुसर कर कुठार कल कांधे॥

दो० शांत भेष करणी कठिन वरणि न जाइ सरूप॥
धरे मुनि तनु जनु वीर रस आये जहं सब भूप॥ २७६

देखत भृगुपति भेष कराला। उठे सकल भय विकल भुआला॥
पितु समेत कहि २ निज नामा। लगे करण सब दंड प्रणामा॥
जेहि सुभाय चितवहिं हितजानी। सो जाने जनु आयु खुटानी॥
जनक बहोरि आय शिरनावा॥ सीय बुलाय प्रणाम करावा॥
आशिष दीन्ह सखी हरषानी। निज समाज लै गई सयानी॥
विश्वामित्र मिले पुनि आई। पदसरोज मेले दोउ भाई॥
राम लषण दशरथ के ढोटा। दीन्ह अशीष जानि भल जोटा॥
रामहि चितय रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन॥

दो० बहुरि बिलोकि विदेह सन कहहु कहा अति भीर।
पूछत जान अजान जिमि व्यापेउ कोप शरीर॥ २७७

समाचार कहि जनक सुनाये। जेहि कारन महीप सब आये॥

सुनत वचन फिर अनत निहारे ॥ देखे चाप खण्ड महि डारे ॥
अति रिस बोले वचन कठोरा ॥ कहु जड़ जनक धनुक केहि तोरा
वेगि दिखाउ मूढ़ नत आजू ॥ उलटो महि जहं लाग तव राजू
अति डर उतर देत नृप नाही ॥ कुटिल भूप हरषे मन माही ॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी ॥ सोचहि सकल त्रास उर भारी ॥
मन पछताति सीय महतारी ॥ बिधि सवारि सब बात बिगारी
भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता ॥ अर्द्ध निमेष कल्प सम बीता ॥

दो॰ सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीर ॥
हृदय न हरष बिषाद कछु बोले श्री रघुबीर ॥

नाथ शम्भु धनु भञ्जन हारा ॥ होइहि कोइ एक दास तुम्हारा
आयसु कहा कहिय किन मोही ॥ सुनि रिसाय बोले मुनि कोही
सेवक सोई जो करे सेवकाई ॥ अरि करणी करि करिय लड़ाई
सुनहु राम जेहि शिव धनु तोरा ॥ सहस बाहु सम सो रिपु मोरा
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा ॥ न तु मारे जैहे सब राजा ॥
सुनि मुनि वचन लषण मुसकाने ॥ बोले परसु धरहि अपमाने ॥
बहु धनुही तोरेउ लरिकाई ॥ कबहु न अस रिस कीन्ह गुसाई
एहि धनु पर ममता केहि हेत ॥ सुनि रिसाय कह भृगु कुल केतु ॥

दोहा रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न संभार
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार २७८

लषण कहा हंसि हमरे जाना ॥ सुनहु देव सब धनुष समाना
का छति लाभ जीरण धनु तोरे ॥ देखा राम नये के भोरे ॥
छुवत टूट रघुपतिहि न दोषू ॥ मुनि बिनु काज करिय कत रोषू
बोले चितय परसु की ओरा ॥ रे शठ सुनि सुभाव न मोरा
बालक बोलि बधों नहि तोही ॥ केवल मुनि जड़ जानेसि मोही
बाल ब्रह्मचारी अति कोही ॥ बिश्व बिदित क्षत्रिय कुल द्रोही

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हे । बिपुल बार महि देवन दीन्हे ॥
सहसबाहु भुज छेदन हारा ॥ परसु बिलोकि महीप कुमारा ॥

दो० मातु पितहि जनि शोच वस करसि महीप किशोर ।
गर्भन के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥ २००

बिहँसि लषण बोले मृदु बानी । अहो मुनीश महा भट मानी ॥
पुनि २ मोहि देखाव कुठारा ॥ चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥
इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं । जो तर्जनि देखत मरि जाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना ॥ मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी । जो कछु कहो सहों रिसि रोकी ॥
सुर महिसुर हरि जन अरु गाई । हमरे कुल इनपर न सुराई ॥
बधे पाप अपकीरति हारे ॥ मारत हू पा परिय तुम्हारे ॥
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा । वृथा धरहु धनु बान कुठारा ॥

दो० जो बिलोकि अनुचित कहेउ क्षमहु महा मुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुवंशमणि बोले गिरा गंभीर ॥ २०१

कौशिक सुनहु मन्द यह बालक । कुटिल काल वश निज कुल घालक ।
भानुवंश राकेश कलंकू ॥ निपट निरंकुश अबुध अशंकू ॥
काल कवर होइहि क्षण माहीं । कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं ॥
तुम हटकहु जो चहहु उबारा । कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
लषण कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा । तुमहि अछत को बरणै पारा ॥
अपने मुख तुम आपनि करणी । बार अनेक भांति बहु बरणी ॥
नहिं संतोष तो पुनि कछु कहहू । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥
बीर ब्रती तुम धीर अछोभा । गारी देत न पावहु शोभा ॥

दो० शूर समर करणी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।
विद्यमान रण पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥ २०२

तुम तो काल हांकि जनु लावा । बार बार मोहि लागि बुलावा ॥

सुनत लषण के बचन कठोरा । परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
अब जनि देइ दोष मोहिं लोगू । कटु बादी बालक बध जोगू ॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बांचा । अब यह मरन हार भा सांचा ॥
कौशिक कहा छमिय अपराधू । बाल दोष गुण गिनहिं न साधू ॥
कर कुठार मैं अकरुन कोही । आगे अपराधी गुरु द्रोही ॥
उतर देत छांड़ों बिनु मारे । केवल कौशिक शील तुम्हारे ॥
नत एहि काटि कुठार कठोरे । गुरहि उऋण होतेउं श्रम थोरे ॥

दो० ॥ गाधिसुवन कह हृदय हँसि मुनिहि हरियरे सूझ ।
अज गव खण्डेउ ऊख जिमि अजहुं न बूझ अबूझ ॥ २७३ ॥

कहेउ लषण मुनि शील तुम्हारा । को नहिं जान बिदित संसारा ॥
मातहि पितहि उऋण भय नीके । गुरु ऋण रहा सोच बड़ जी के ॥
सो जनु हमरे माथे काढ़ा । दिन चलि गयेउ ब्याज बड़ बाढ़ा ॥

यह तस्वीर उस वक्त की है जब परशुराम सभा में लक्ष्मण से वार्तालाप करते हैं



सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाहा कहि सब लोग पुकारा ।।
भृगुबर परसु देखावहु मोही । विप्र विचार बचौ नृप द्रोही ।।
मिलन न कबहुं सुभट रण गाढ़े । द्विज देवता घरहि के बाढ़े ।।
अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सैनहि लषण निवारे

दो० लषण उतर आहुति सरिस भृगुबर कोप कृशानु
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु २८४

नाथ करहु बालक पर छोहू । सूध दूध मुख करिय न कोहू ।।
जौपै प्रभु प्रभाव कछु जाना । तौ कि बराबर करत अयाना ।।
जो लरिका कछु अनुचित करहीं । गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं
करिय कृपा शिशु सेवक जानी । तुम सम शील धीर मुनि ज्ञानी ।।
रामवचन सुनि कछुक जुड़ाने । कहि कछु लषण बहुरि मुसुकाने
हसत देखि नख सिख रिस व्यापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ।।
गौर शरीर श्याम मन माहीं । कालकूट मुख पय मुख नाहीं
सहज टेढ़ अनुहरै न तोही । नीच मीचु सम लखै न मोही ।।

दो० लषण कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोध पाप कर मूल
जेहि बस जन अनुचित करहिं चलहिं विश्व प्रतिकूल २८

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोप करिय अब दाया ।।
टूट चाप नहिं जुड़हि रिसाने ।। बैठिये होइहहिं पांय पिराने ।।
जो अति प्रिय तौ करिय उपाई । जोरिय कोउ बड़ गुणी बुलाई ।।
बोलत लषणहिं जनक डेराहीं । मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं
थर २ कांपहिं पुर नर नारी ।। छोट कुमार खोट अति भारी ।।
भृगुपति सुनि २ निर्भय बानी । रिस तनु जरै होइ बल हानी ।।
बोले रामहिं देइ निहोरा ।। बचौ विचार बन्धु लघु तोरा
मन मलीन तन सुन्दर कैसे । विषरस भरा कनक घट जैसे ।।

दो० सुनि लक्ष्मण विहंसे बहुरि नयन तरेरे राम

गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बाणीबाम

अति विनीत मृदु शीतल बाणी । बोले राम जोरि युग पाणी ॥
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालक बचन करिय नहि काना ॥
बररै बालक एक सुभाऊ ॥ इनहि न संत विदूषहिं काऊ ॥
तिन नाही कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप बध बन्धु गुसाईं ॥ मोपर करिय दास की नाईं ॥
कहिये बेगि जेहि विधि रिस जाई । मुनि नायक सोइ करिय उपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे । अजहुं बन्धु तव चितव अनैसे ॥
इहिके कंठ कुठार न दीन्हा ॥ तौ मैं कहा कोप करि कीन्हा ॥

दो० गर्भ स्रवहि अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर ।
परशु अछत देखौं जियत बैरी भूप किशोर ॥ २८७

बहै न हाथ दहै रिसि छाती । भा कुठार कुंठित नृप घाती ॥
भयेउ बाम विधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदय कृपा कस काऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा ॥ सुनि सौमित्र विहंसि सिर नावा ॥
बाउ कृपा मूरति अनुकूला ॥ बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
जो पै कृपा जरे मुनि गाता ॥ क्रोध भये तनु राखु विधाता ॥
देखि जनक हठि बालक येहू ॥ कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू ॥
बेगि करहु किन आंखिन ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥
बिहंसे लषण कहा मुनि पाहीं । मूंदिय आंखि कतहुं कोउ नाहीं ॥

दो० परसुराम तब राम प्रति बोले वचन सक्रोध ।
शम्भु शरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध ॥ २८८

बन्धु कहै कटु सम्मत तोरे ॥ तू छल विनय करसि कर जोरे ॥
करु परितोष मोर संग्रामा ॥ नाहित छाडु कहाउब रामा ॥
छल तजि करहु समर शिव द्रोही । बन्धु सहित नतु मारौं तोही ॥
भृगुपति तमकि कुठार उठाये ॥ मन मुसुकाहिं राम शिर नाये ॥

गुणहु लषण कर हम पर रोषू । कतहु सुधाइहु ते बड़ दोषू ॥
टेढ़ जानि शंका सब काहू ॥ वक्र चंद्रमा ग्रसै न राहू ॥
रामु कहेउ रिस तजिय मुनीशा । कर कुठार आगे यह शीशा ॥
जेहि रिसि जाय करिय सोइ स्वामी । मोहि जान आपन अनुगामी ॥

दो० प्रभुहि सेवकहि समर कस तजहु विप्र बर रोष ।
भेष विलोकि कहेसि कछु बालकहु नहिं दोष ॥ २८८

देखि कुठार बाण धनु धारी ॥ भै लरिकहि रिसि वीर विचारी ॥
नाम जान पै तुमहि न चीन्हा । वंश सुभाव उतर तेहि दीन्हा ॥
जो तुम अवतेउ मुनि की नाईं । पद रज शिर शिशु धरत गुसाईं ॥
क्षमहु चूक अनजानत केरी ॥ चहिय विप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहि तुमहि कस सरि वर नाथा । कहहु तो कहां चरण कहं माथा ॥
राममात्र लघु नाम हमारा ॥ परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
देव एक गुण धनुष हमारे ॥ नव गुण परम पुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुम सन हारे । क्षमहु विप्र अपराध हमारे ॥

दो० वार वार मुनि विप्रवर कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष ह्वै तुहं बन्धु सम वाम ॥ २८९

निपटहि द्विज करि जानेहु मोही । मैं जस विप्र सुनाऊं तोही ॥
चाप श्रुवा शर आहुति जानू ॥ कोप मोर अति घोर कृशानू ॥
समिधि सेन चतुरंग सुहाई ॥ महा महीप भये पशु आई ॥
मैं एहि परशु काटि बलि दीन्हा । समर यज्ञ जग कोटिन कीन्हा ॥
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे ॥ बोलसि निदरि विप्र के भोरे ॥
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा ॥ अहमिति मनहुं जीति जग ठाढ़ा ॥
राम कहा मुनि कहहु विचारी । रिसि अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
छुअतहि टूट पिनाक पुराना । मैं केहि हेतु करों अभिमाना ॥

दो० जो हम निदरहि विप्र वदि सत्य सुनहु भृगुनाथ

तौ अस को जग सुभट जेहि भयवस नावहि माथ ॥ २८१

देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होउ बलवाना ॥
जो रण हमहि प्रचारै कोऊ ॥ लरहि सुखेन काल किन होऊ ॥
छत्रिय तनु धरि समर सकाना ॥ कुल कलंक तेहि पावँर जाना ॥
कहौं सुभाव न कुलहि प्रशंसी । कालहु डरहिं न रण रघुबंसी ॥
विप्रवंश की अस प्रभुताई ॥ अभय होइ जो तुमहि डेराई ॥
सुनि मृदु गूढ़ वचन रघुपति के । उघरे पटल परशु धर मति के ॥
राम रमापति कर धनु लेहू ॥ खैंचहु चाप मिटै सन्देहू ॥
देत चाप आपुहि चढ़ि गयेऊ ॥ परशुराम मन विस्मय भयेऊ ॥

दो० जाना राम प्रभाव तब पुलक प्रफुल्लित गात ॥
जोरि पाणि बोले वचन प्रेम न हृदय समात ॥ २८२

जय रघुबंश बनज बन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृशानू ॥
जय सुर विप्र धेनु हितकारी ॥ जय मद मोह कोह भ्रम हारी ॥
विनय शील करुणा गुण सागर । जयति वचन रचना अति नागर ॥
सेवक सुखद सुभग सब अंगा । जय शरीर छवि कोटि अनंगा ॥
करौं कहा मुख एक प्रशंसा ॥ जय महेश मन मानस हंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउ अज्ञाता ॥ क्षमहु क्षमा मन्दिर दोउ भ्राता ॥
कहि जय जय जय रघुकुल केतू । भृगुपति गये बनहि तप हेतू ॥
अप भये कुटिल महीप डराने ॥ जहँ तहँ कायर गवहिं पराने ॥

देवन दीन्ही दुंदुभी प्रभु पर बरषहिं फूल ॥
हरषे पुर नर नारि सब मिटा मोह भय शूल ॥ २८३

अति गहगहे बाजने बाजे ॥ सबहि मनोहर मंगल साजे ॥
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी । करहिं गान कल कोकिल बयनी ॥
सुख विदेह कर बरनि न जाई ॥ जन्म दरिद्र मनहु निधि पाई ॥
विगत त्रास भइ सीय सुखारी ॥ जनु विधु उदय चकोर कुमारी ॥

जनक कीन्ह कौशिकहि प्रणामा । प्रभु प्रसाद धनु भञ्जेउ रामा ॥
मोहि कृत कृत्य कीन्ह दोउ भाई । अब जो उचित सो कहिये गुसाई ॥
कह मुनि सुनु नर नाह प्रवीना । रहा विवाह चाप आधीना ॥
टूटत ही धनु भयेउ विवाहू । सुर नर नाग विदित सब काहू ॥

दो॰ तदपि जाइ तुम करहु अब यथा वंश व्यवहार ॥
बूझि विप्र कुल वृद्ध गुरु वेद विदित आचार ॥ २८४

दूत अवध पुर पठवहु जाई । आनहिं नृप दशरथहि बुलाई ॥
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला । पठये दूत अवध तेहि काला ॥
बहुरि महाजन सकल बुलाये । आइ सबन सादर सिर नाये ॥
हाट बाट मंदिर सुर वासा । नगर संवारहु चारिउ पासा ॥
हरषि चले निज २ गृह आये । पुनि परिचारिक बोलि पठाये ॥
रचहु विचित्र वितान बनाई । सिर धरि वचन चले सचु पाई ॥
पठये बोलि गुणी तेहि नाना । जो वितान विधि कुशल सुजाना ॥
विधिहि वन्दि तिन कीन्ह अरंभा । विरचे कनक कदली खंभा ॥

दो॰ हरित मणिन के पत्र फल पद्मराग के फूल ॥
रचना देखि विचित्र अति मन विरंचि के भूल ॥ २८५

वेणु हरित मणिमय सब कीन्हे । सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे ॥
कनक कलित अहि बेलि बनाई । लखि नहिं परै सुवर्ण सुहाई ॥
तेहि के रचि पचि बन्ध बनाये । बिच २ मुकता दाम सुहाये ॥
माणिक मरकत कुलिश पिरोजा । चीर कोर पचि रचे सरोजा ॥
किये भृंग बहु रंग विहंगा । गुंजहि कूजहिं पवन प्रसंगा ॥
सुर प्रतिमा खम्भन गढ़ि काढ़े । मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़े ॥
चौके भांति अनेक पुराई । सिन्धुर मणिमय सहज सुहाई ॥

दो॰ सौरभ पल्लव सुभग सुठि किये नील मणि कोर
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोर ॥ २८६

रचे रुचिर वर वन्दनवारे ॥ मनहु मनोभव फन्द सवारे ॥
मंगल कलश अनेक बनाये ॥ धुज पताक पट चमर सुहाये ॥
दीप मनोहर मणि मय नाना ॥ जाइ न बरणि विचित्र विताना ॥
जेहि मण्डप दुलहिन बैदेही ॥ सो बरणै असु मति कवि केही ॥
दूलह राम रूप गुण सागर ॥ सो वितान तिहु लोक उजागर ॥
जनक भवन की शोभा जैसी ॥ गृह गृह प्रति पुर देखिये तैसी ॥
जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी ॥ तेहि लघु लगै भवन दश चारी ॥
जो सम्पदा नीच गृह सोहा ॥ सो विलोकि सुर नायक मोहा ॥

दो० बसे नगर जेहि लक्षि करि कपट नारि वर भेष ॥
तेहि पुर की शोभा कहत सकुचे शारद शेष ॥ २८७

पहुंचे दूत राम पुर पावन ॥ हरषे नगर विलोकि सुहावन ॥
भूपद्वार तिन खबर जनाई ॥ दसरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्ही ॥ मुदित महीप आप उठि लीन्ही ॥
बारि विलोचन बांचत पाती ॥ पुलक गात आई भरि छाती ॥
राम लषण उर कर वर चीठी ॥ रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची ॥ हरषी सभा बात सुनि सांची ॥
खेलत रहे तहां सुधि पाई ॥ आये भरत सहित दोउ भाई ॥
पूछत अति सनेह सकुचाई ॥ तात कहां तें पाती आई ॥

दो० कुशल प्राणप्रिय बन्धु दोउ अहहिं कहहु केहि देश ॥
सुनि सनेह साने बचन बांची बहुरि नरेश ॥ २८८

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता ॥ अधिक सनेह समात न गाता ॥
प्रीति पुनीत भरत की देखी ॥ सकल सभा सुख लहेउ विशेषी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे ॥ मधुर मनोहर बचन उचारे ॥
भैया कुशल कहहु दोउ बारे ॥ तुम नीके निज नयन निहारे ॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा ॥ बय किशोर कौशिक मुनि साथा ॥

पहिचानेउ तो कहहु सुभाऊ॥ प्रेम विवस पुनि पुनि कह राऊ
जा दिन ते मुनि गये लिवाई॥ तब ते आजु साँचि सुधि पाई॥
कहहु विदेह कवन विधि जाने। सुन प्रिय वचन दूत मुसकाने

दो॰ सुनहु महीपति मुकुट मणि तुम सम धन्य न कोउ
राम लषण जिनके तनय विश्व विभूषण दोउ २९९

पूछन योग न तनय तुम्हारे॥ पुरुष सिंह तिहु पुर उजियारे॥
जिनके यश प्रताप के आगे॥ शशि मलीन रवि शीतल लागे
तिनकह कहिय नाथ किमि चीन्हे॥ देखिय रविहि कि दीपक लीन्हे
सीय स्वयंवर भूप अनेका॥ सिमिटे सुभट एक ते एका॥
शम्भु सरासन काहु न टारा॥ हारे सकल भूप वरियारा॥
तीन लोक में जे भट मानी॥ सब की शक्ति शंभु धनु भानी
सकै उठाय सुरासुर मेरू॥ सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू
जेहि कौतुक शिव शैल उठावा। सोउ तेहि सभा पराभव पावा॥

दोहा तहां राम रघुवंश मणि सुनिय महा महिपाल
भंजेउ चाप प्रयास विनु जिमि गज पंकज नाल ३००

सुनि सरोष भृगु नायक आये॥ बहुत भांति तिन आंखि देखाये
देखि राम बल निज धनु दीन्हा। करि बहु विनय गवन वन कीन्हा
राजन राम अतुल बल जैसे॥ तेज निधान लषण पुनि तैसे
कम्पहि भूप विलोकत जाके। जिमि गज हरि किशोर के ताके
देव देखि तव बालक दोऊ॥ अब न आंखि तर आवत कोऊ
दूत वचन रचना प्रिय लागी॥ प्रेम प्रताप वीर रस पागी॥
सभा समेत राउ अनुरागे॥ दूतहि देन निछावर लागे॥
कहि अनीति तेहि मूंदेउ काना। धर्म विचारि सबहि सुख माना

दो॰ तब उठि भूप वसिष्ठ कह दीन्ह पत्रिका जाइ॥
कथा सुनाई गुरुहि सब सादर दूत बुलाइ॥ ३०१

मुनि बोले मुनि अति सुख पाई । पुण्य पुरुष कहँ महि सुख छाई ॥
जिमि सरिता सागर महँ जाई । यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख संपति बिनहिं बुलाये । धर्म शील पहँ जाहिं सुभाये ॥
तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी ॥ तस पुनीत कौशिल्या देवी ॥
सुकृती तुम समान जग माहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥
तुमते अधिक पुण्य बड़ काके । राजन राम सरिस सुत जाके ॥
वीर पुनीत धर्म व्रत धारी ॥ गुण सागर बालक वर चारी ॥
तुम कहँ सर्व काल कल्याना । सजहु बरात बजाय निशाना ॥

दो० चलेउ वेगि सुनि गुरुवचन भलहि नाथ सिरनाइ ।
भूपति गवने भवन तब दूतहि बास दिवाइ ॥ ३०२

राजा सब रनिवास बुलाई ॥ जनक पत्रिका बाँचि सुनाई ॥
सुनि संदेस सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी ॥
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी ॥ मनहु सिखिन सुनि बारिद बानी
मुदित अशीश देहि गुरु नारी ॥ अति आनंद मगन महतारी ॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहि छाती ॥
राम लषण की कीरति करणी । बारहि बार भूप वर बरनी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये ॥ रानिन तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनंद समेता ॥ चले विप्रवर आसिष देता ॥

सो० याचक लिये हंकारि दिये निछावर कोटि विधि
चिर जीवहु सुत चारि चक्रवर्ति दशरत्थके ॥ २८

कहत चले पहिरे पट नाना ॥ हरषि हने गह गहे निशाना ॥
समाचार सब लोगन पाये ॥ लागे घर घर होन बधाये ॥
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू ॥ जनकसुता रघुवीर विवाहू ॥
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गली संवारन लागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । रामपुरी मंगल मय पावनि ॥

तदपि प्रीति की रीति सुहाई॥ | मंगल रचना रची बनाई॥
ध्वज पताक पट चामर चारू॥ | छावा परम विचित्र बजारू॥
कनक कलश तोरण मणिजाला | हरद दूब दधि अक्षत माला॥

दो० मंगल मय निज २ भवन लोगन रचे बनाय
वीथी सींची चतुर सब चौके चारु पुराय॥ २०३

जहँ तहँ यूथ २ मिलि भामिनि | सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि
विधु वदनी मृग शावक लोचनि | निज स्वरूप रति मान विमोचनि
गावहिं मंगल मंजुल बानी॥ | सुनि कल रव कलकंठ लजानी॥
भूपभवन किमि जाइ बषाना | विश्व विमोहन रचेउ विताना
मंगल द्रव्य मनोहर नाना॥ | राजत बाजत विपुल निशाना
कतहुं विरद बन्दी उच्चरहीं॥ | कतहुं वेद धुनि भूसुर करहीं
गावहिं सुन्दरि मंगल गीता॥ | लै नाम राम अरु सीता॥
बहुत उछाह भवन अति थोरा॥ | मानहु उमगि चला चहुं ओरा

दो० शोभा दशरथ भवन की को कवि वरणै पार॥
जहां सकल सुर शीश मणि राम लीन्ह अवतार २०४

भूप भरत पुनि लये बुलाई॥ | हय गज स्यंदन साजहु जाई॥
चलहु वेगि रघुवीर बराता॥ | सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता॥
भरत सकल साहनी बुलाये | आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये
रुचि रुचि तुरँग साज तिन सजे | वर्ण वर्ण वर वाजि बिराजे॥
सुभग सकल सुठि चंचल करणी | अय जिमि जरत धरत पग धरणी
नाना भांति नजाइ बखाने॥ | निदरि पवन जनु चहत उड़ाने॥
तिन सब छयल भये असवारा॥ | भरत सरिस सब राज कुमारा॥
सब सुन्दर सब भूषण धारी॥ | कर शर चाप तूण कटि भारी॥

दो० छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नवीन॥॥
युग पद चर असवार प्रति जो असि कला प्रवीन॥ २०५

बांधे बिरद बीर रण गाढ़े। निकसि भये पुर बाहेर ठाढ़े॥
फेरहि चतुर तुरंगिनि नाना॥ हरषहि धुनि सुनि पवन निशाना
रथ सारथिन विचित्र बनाये॥ धुज पताक मणि भूषण लाये
चवर चारु किंकिणि धुनि करहीं भानु यान शोभा अप हरहीं॥
श्याम करण अगणित हय होते ते तिन्ह रथन्ह सारथिन जोते॥
सुन्दर सकल अलंकृत सोहे॥ जिनहि बिलोकि त मुनि मन मोहे
जे जल चलहिं थलहि की नाईं टाप न बूड़ वेग अधिकाई॥
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई। रथी सारथिन लिये बुलाई॥

दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर लागी जुरन बरात॥
होत सगुण सुन्दर सबहि जो जेहि कारज जात ३०६

कलित करिवरन परी अंबारी॥ कहि न जाइ जेहि भांति सवारी
चले मत्त गज घण्ट बिराजे॥ मनहु सुभग सावन घन गाजे
बाहन अपर अनेक विधाना॥ सिबिका सुभग सुखासन याना॥
तिन चढ़ि चले विप्र वर वृन्दा॥ जनु तनु धरे सकल श्रुति छन्दा
मागध सूत वन्दि गुण गायक चले यान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊंट वृषभ बहु जाती॥ चले वस्तु भरि अगणित भांती
कोटिन कांवरि चले कहारा॥ बिबिध वस्तु को बरणै पारा॥
चले सकल सेवक समुदाई॥ निज २ साज समाज बनाई॥

दो० सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर॥
कबहि देखिबो नयन भरि राम लषण दोउ वीर॥ ३०७

गरजहि गज घण्टा धुनि घोरा॥ रथ रव बाजि हींस चहु ओरा॥
निदरि घनहि घुर्म्मरहि निशाना निज पराव कछु सुनिय न काना
महाभीर भूपति के द्वारे॥ ॥ रज होइ जाइ पषान पवारे॥॥
चढ़ी अटारिन देखहि नारी॥ लये आरती मंगल थारी॥
गावहि गीत मनोहर नाना॥ अति आनन्द नहि जाइ बखाना

तब सुमन्त दुइ स्यंदन साजी । जोते हय रवि निन्दक बाजी॥
दोउ रथ रुचिर भूप पहँ आने । नहि शारद प्रति जाहि बखाने
राज समाज एक रथ साजा॥ दूसर तेज पुञ्ज अति राजा॥

दोहा तेहि रथ रुचिर वसिष्ठ कह हरषि चढ़ाइ नरेश
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गणेश ३०८

सहित वसिष्ठ सोह न्टप कैसे॥ सुर गुरु संग पुरंदर जैसे॥
करि कुल रीति वेद विधि राऊ॥ देखि सबहि सब भांति बनाऊ
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई॥ चले महीपति शंख बजाई॥
हरषे विबुध विलोकि बराता॥ बरषहि सुमन सुमंगल दाता
भयउ कोलाहल हय गज गाजे । व्योम बरात बाजने बाजे॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई॥ सरस राग बाजहिं सहनाई॥
घण्ट घण्टि धुनि बरणि न जाई । सरौ करैं पायक फहराई॥
करहि विदूषक कौतुक नाना॥ हास कुशल कल गान सुजाना

दो० तुरग नचावहि कुंअर बर अकनि म्टदंग निशान
नागर नट चितवहिं चकित डिगहि न ताल विधान ३०८

बने न बरणत बनी बराता॥ होइ सगुण सुन्दर शुभ दाता
चारा चाष बाम दिशि लेई॥ मनहुं सकल मंगल कहि देइ
दाहिन काग सुखेत सुहावा॥ नकुल दरश सब काहुन पावा
सानुकूल बह त्रिविधि बयारी॥ सघट सबाल वारि बर नारी॥
लोवा फिर २ दरश दिखावा॥ सुरभी सन्मुख शिशुहि पिआव
मृगमाला दाहिन दिशि आई । मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई
क्षेमकरी कह क्षेम विशेषी॥ श्यामा बाम सुतरु पर देखी॥
सन्मुख आयेउ दधि अरु मीना । कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना॥

दो० मंगल मय कल्याण मय अभिमत फल दातार॥
जनु सब सांचे होन हित भये सगुण एक बार॥

मंगल शकुन सुगम सब ताके । सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके
राम सरिस बर दुलहिन सीता । समधी दशरथ जनक पुनीता
सुनि अस व्याह सगुन सब नाचे । अब कीन्हे विरंचि हम सांचे॥
यह विधि कीन्ह बरात पयाना । हय गज गाजहिं हनहिं निशाना
आवत जानि भानु कुल केतू॥ सरितन जनक बंधाये सेतू॥
बीच बीच बर बास बनाये॥ सुर पुर सरिस संपदा छाये॥
अशन शयन बर बसन सुहाये । पावहिं सब निज २ मन भाये॥
नित नूतन लखि सुख अनुकूला । सकल बरातिन मंदिर भूला

आवत जानि बरात बर सुनि गह गहे निशान
सजि गज रथ पद चर तुरग लेन चले अगवान ३११

कनक कलश कल को पर थारा । भोजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधा सम सब पकवाना । भांति भांति नहिं जाय बखाना
फल अनेक बर वस्तु सुहाई॥ हरषि भेंट हित भूप पठाई॥
भूषण बसन महामणि नाना । खग मृग हय गज बहु विधि याना
मंगल सगुण सुगन्ध सुहाये । बहुत भांति महिपाल पठाये॥
दधि चिउरा उपहार अपारा॥ भरि भरि कांवरि चले कहारा॥
अगवानन जब दीख बराता । उर आनंद पुलक भर गाता
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन हने निशाना

दो० हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बगमेल
जनु आनन्द समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल ३१२

बरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहिं । मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं
वस्तु सकल राखी नृप आगे । विनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागे
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा॥ भे बकशीश याचकन दीन्हा
करि पूजा बहु मान बड़ाई । जनवासे कहं चले लिवाई
बसन विचित्र पावड़े परहीं॥ नृप दसरथ तापर पग धरहीं॥

देखि धनद धन मद पर हरहीं । बरष सुमन सुर जेजे करहीं ॥
अति सुन्दर दीनेउ जनवासा । जहं सब कहं सब भांति सुपासा ॥
जानी सिय बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगट जनाई ॥
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई । भूप पहुनई करन पठाई ॥

दो॰ सिय आयसु शिर सिद्ध धरि गई जहां जनवास ।
लये संपदा सकल सुख सुर पुर भोग बिलास ॥ ३१३ ॥

निज २ बास बिलोकि बराती । सुरसुख सकल सुलभ सब भांती ॥
बिभव भेद कछु काहु न जाना । सकल जनक कर करहिं बषाना ॥
सिय महिमा रघुनायक जानी । हरष हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमन सुनत दोउ भाई । हृदय न अति आनंद समाई ॥
सकुचत कहि न सकत गुरु पाहीं । पितु दरसन लालच मन माहीं ॥
विश्वामित्र विनय बड़ि देखी । उपजा उर संतोष विशेषी ॥
हर्षि बन्धु दोउ हृदय लगाये । पुलक अंग लोचन जल छाये ॥
चले जहां दसरथ जनवासे । मनो सरोवर तके पियासे ॥

दो॰ भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत ॥
उठे हरषि सुख सिन्धु मह चले थाह सी लेत ॥ ३१४

मुनिहिं दंडवत कीन्ह महीशा । बार २ पद रज धरि शीशा ॥
कौशिक राउ लिये उर लाई । कहि अशीश पूछी कुशलाई ॥
पुनि दण्डवत करत दोउ भाई । देखि न्यपति उर सुख न समाई ॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे ॥
पुनि वसिष्ठ पद शिर तिन नाये । प्रेम मुदित मुनि वर उर लाये ॥
विप्र वृन्द बन्दे दुहु भाई । मन भावत अशीश तिन पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा । लिये उठाय लाइ उर रामा ॥
हरष लषण देष दोउ भ्राता । मिले प्रेम परि पूरन गाता ॥

दो॰ पुरजन परिजन जाति जन याचक मंत्री मीत ॥
मिले यथा विधि सबहिं प्रभु परम कृपालु विनीत ३१५

प्रीति की रीति न जाइ बखानी। रामहि देखि बरात जुड़ानी॥
जनु धनु धर्मादिक तनु धारी। नृप समीप सोहहिं सुत चारो॥
मुदित नगर नरनारि विशेषी। सुतन्ह सहित दशरथ कहं देषी॥
नाकनदी नाचहिं करि गाना। सुमन बरषि सुर हनहि निशाना॥
मागध सूत विदुष बन्दीजन। सतानन्द अरु विप्र सचिव तन॥
आयसु मांगि चले अगवाना। सहित बरात राउ सन्माना॥
ताते पुर प्रमोद अधिकाई। प्रथम बरात लगन ते आई॥
बढ़हि दिवस निशि विधि सन कहहीं। ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं॥

दो० राम सीय शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।
जहं तहं पुरजन कहहि अस मिलि नर नारि समाज॥ ३१६

जनक सुकृति मूरति वैदेही। दशरथ सुकृत राम धरे देही॥
इन सम काउन शिव अवराधे। काउन इन समान फल साधे॥
इन सम कोउ न भयउ जगमाहीं। है नहिं कतहूं होनेउ नाहीं॥
हम सब सकल सुकृत की रासी। भये जग जन्मि जनकपुरवासी॥
जिन जानकी राम छवि देखी। को सुकृती हम सरिस विशेषी॥
पुनि देखव रघुवीर विवाहू। लेव भली विधि लोचन लाहू॥
कहहिं परस्पर कोकिल वयनी। यह विवाह बड़ लाहु सुनयनी॥
बड़े भाग विधि बात बनाई। नैयन अतिथि होइहैं दोउ भाई॥

दो० बारहि बार सनेह बस जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहि बन्धु दोउ कोटि काम कमनीय॥ ३१७

विविध भांति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर माई॥
तब तब राम लषणहि निहारी। होइहहि सब पुर लोग सुखारी॥
सखि जस राम लषण कर जोटा। तैसेहि भूप संग दुइ ढोटा॥
श्याम गौर सब अंग सुहाये। ते सब कहहि देखि जे आये॥
कहा एक मैं आजु निहारे। जनु विरंचि निज हाथ सवांरे॥

भरत राम एकहि अनुहारी ॥ सहसा लखि न सकहिं नरनारी
लषण शत्रुसूदन इक रूपा ॥ नख सिख ते सब अंग अनूपा
मन भावहिं मुख बरणि न जाहीं उपमा कहं त्रिभुवन कोउ नाहीं

छं० उपमा न कोउ कह दास तुलसी कवि कोविद कहैं।
बल विनय विद्या शील शोभा सिन्धु इन सम येइ हैं
पुर नारि सकल पसारि अंचल विधिहिं वचन सुनावहीं
व्याहिय सुचारिउ भाइ इहि पुर हम सुमंगल गावहीं

सो० कहहिं परस्पर नारि बारि विलोचन पुलक तन
सखि सब करब पुरारि पुण्य पयोनिधि भूप दोउ २८

इहि विधि सकल मनोरथ करहीं आनन्द उमगि २ उर भरहीं ॥
जे नृप सीय स्वयम्बर आये ॥ देखि बन्धु सब तिन सुख पाये
कहत राम यश विशद विशाला निज २ भवन गये महिपाला
गये बीति कछु दिन इहि भांती प्रमुदित पुरजन सकल बराती
मंगल मूल लगन दिन आवा हिम रितु अगहन मास सुहावा
ग्रह तिथि नखत योग बर बारू लगन सोधि विधि कीन्ह विचारू
पठै दीन्ह नारद सन सोई ॥ ॥ गुणी जनक के गणकन जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता कहहिं ज्योतिषी अहहिं विधाता

दो० धेनु धूलि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल ॥
विप्रन कहेउ विदेह सन जानि समय अनुकूल ॥ ३१८

उपरोहितहि कहेउ नर नाहा अब बिलम्ब के कारण काहा
सतानंद तब सचिव बुलाये ॥ मंगल कलश साजि सब लाये
शंख निशान पणव बहु साजे मंगल कलश सगुन सब साजे
सुभग सुआसिन गावहिं गीता करहिं वेद धुनि विप्र पुनीता
लेन चले सादर इहि भांती ॥ गये जहां जनवास बराती ॥
कोशल पति कर देख समाजू अति लघु लागे तिनहिं सुरराजू

भयेउ समय अब धारिय पाउ । यह सुनि परा निशानन घाउ
गुरहि पूछि करि कुल विधि राजा । चले संग मुनि साधु समाजा॥

दो० भाग्य विभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि॥
लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज वादि। २१८

सुरन सुमंगल अवसर जाना । वरषहि सुमन बजाइ निशाना
शिव ब्रह्मादिक विबुध वरूथा । चढ़े विमानन नाना यूथा॥
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू॥ चले विलोकन राम विवाहू॥
देखि जनक पुर सुर अनुरागे । निज २ लोक सबहि लघु लागे
चितवहिं चकित विलोकि विताना । रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना । सुघुर सुधर्म सुशील सुजाना
तिनहि देखि सब सुर सुर नारी॥ भये नखत जनु विधु उजियारी
विधिहि भयउ आश्चर्य विशेषी । निज करणी कछु कतहु न देखी

दो० शिव समुझाये देव सब जनि आश्चर्य भुलाहु॥
हृदय विचारहु धीर धरि सिय रघुबीर विवाहु २२०

जिन कर नाम लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नशाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी॥ ते सिय राम कहेउ कामारी॥
इहिविधि शम्भु सुरन समुझावा । पुनि आगे बर बसह चलावा॥
देवन देखे दशरथ जाता॥ महा मोद मन पुलकित गाता
साधु समाज संग महि देवा॥ जनु तन धरे करहि सुख सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपवर्ग सकल तनु धारी
मरकत कनक वरन वर जोरी । देखि सुरन भै प्रीति न थोरी
पुनि रामहि विलोकि हिय हरषे । नृपहि सराहि सुमन तिन बरषे

दो० राम रूप नख सिख सुभग बारहि बार निहारि
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि २२१

केकि कण्ठ दुति श्यामल अंगा। तड़ित विनिन्दक वसन सुरंगा।

ब्याह बिभूषण विविधि बनाये मंगलमय सब भांति सुहाये ॥
शरद बिमल विधु वदन सुहावन नयन नवल राजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुन्दरताई कहि न जाय मनही मन भाई ॥
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा ॥ जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राजकुंवर वर बाज नचावहिं वंशप्रशंसक विरद सुनावहिं
जेहि तुरंगपर राम विराजे गतिविलोकि खगनायक लाजे
कहि न जाइ सब भांति सुहावा बाज भेष जनु काम बनावा ॥

छन्द जनु बाजि भेष बनाइ मनसिज रामहित अतिसोहही

श्री रामचन्द्र जी की बरात में राजा दसरथ भरत शत्रुहन आदि अयोध्यावासियों को जनकपुर में जाना और अगवानी लेना ॥



अपने वय बल रूप गुण गति सकल भुवन विमोहही ।
जराव गति जीन जड़ाऊ जोति सुमोति मानिक नेहि लगे ।
किंकिणि ललाम लगाम ललित विलोकि सुरनर मुनि ठगे ॥ ३५

दो० प्रभु मनसहि लयलीन मन चलत वाजि छवि पाव ।
भूषण उडगण तडित घन जनु वर वरहि नचाव ॥ ३२२

जेहि वर वाजि राम असवारा ॥ तेहि शारदहु न वरणी पारा ॥
शंकर राम रूप अनुरागे ॥ नयन पंच दश अति प्रिय लागे ॥
हरि हित सहित राम जब जोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि राम छवि विधि हरषाने । आठे नयन जानि पछिताने ॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू ॥ विधि ते डेवढ़ लोचन लाहू ॥
रामहिं चितव सुरेश सुजाना ॥ गौतम श्राप परम हित माना ॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाही । आजु पुरंदर सम कोउ नाही ॥
मुदित देव गण रामहि देखी । नृप समाज दुहं हरष विशेषी ।

छं० ॥ अति हर्ष राज समाज दुहु दिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी ।
वरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुल मनी ।
इहि भांति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ॥
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥ ३६

दो० सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल संवारि ।
चली मुदित परिछन करन गज गामिनि वर नारि ॥ ३२३

विधु वदनी मृग शावक लोचनि । सब निज तनु छवि रति मद मोचनि ।
पहिरे वरण वरण वर चीरा ॥ सकल विभूषण सजे शरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये ॥ करहिं गान कल कण्ठ लजाये ।
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं । चाल विलोकि काम गज लाजहिं ।
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगल चारा ।
शची शारदा रमा भवानी ॥ ॥ जे सुर तिय शुचि सहज सयानी

कपट नारि वर भेष बनाई ॥ मिलीं सकल रनिवासहि आई
करहिं गान कल मंगल बानी हरष बिवस बस काहु न जानी

छं० को जानि केहि आनंद बश सब ब्रह्म वर परिछन चली
कल गान मधुर निशान बरखहि सुमन सुर शोभा भली
आनंद कन्द विलोकि दूलह सकल हिय हर्षित भई
अम्भोज अम्बुक अम्बु उमंगि सुअंग पुलकावलि छई ३७

दो० जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम बर भेष॥
सो न सकहिं कहि कल्प शत सहस सारदा शेष ३२४

नयन नीर हठि मंगल जानी॥ परिछन करहिं मुदित मन रानी
वेद विहित अरु कुल व्यवहारू कीन्ह भली विधि सब परिचारू
पञ्च शब्द धुनि मंगल गाना पट पावडे परहि विधि नाना॥
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा॥ राम गवन मण्डप तब कीन्हा
दसरथ सहित समाज बिराजे॥ बिभव विलोकि लोक पति लाजे
समय २ सुर बर्षहिं फूला॥॥ शांति पढ़हिं महि सुर अनुकूला
नभ अरु नगर कोलाहल होई आपन पर कछु सुनै न कोई॥॥
इहि विधि राम मंडपहि आये॥ अर्घ देइ आसन बैठाये॥॥

छं० बैठारि आसन आरती करि निरखि वर सुख पावहीं
मणि बसन भूषण भूरि वारहि नारि मंगल गावहीं॥
ब्रह्मादि सुर वर विप्र भेष बनाइ कौतुक देखहीं॥ ३८
अवलोकि रवि कुल कमल रवि छवि सुफल जीवन लेखहीं

दो० नाऊ वारी भाट नट राम निछावरि पाइ॥
मुदित अशीशहिं नाइ शिर हर्ष न हृदय समाइ॥ ३२५

मिले जनक दशरथ अति प्रीती करि वैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज बिराजे उपमा खोजि २ कवि लाजे
लही न कतहुं हारि हिय मानी इन समये उपमा उर आनी॥

समधी देखि देव अनुरागे ॥ सुमन बरषि यश गावन लागे ॥
जग विरंचि उपजावा जब ते ॥ देखे सुने व्याह बहु तब ते ॥
सकल भांति सम साज समाजू ॥ सम समधी देखे हम आजू ॥
देव गिरा सुनि सुन्दर सांची ॥ प्रीति अलौकिक दुहु दिशि माची ॥
देत पांवडे अर्घ सुहाये ॥ सादर जनक मण्डपहि ल्याये ॥

छं० मंडप विलोकि विचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे
निज पाणि जनक सुजान सब कहं आनि सिंहासन धरे
कुल इष्ट सरिस वसिष्ठ पूजे विनय करि आशिष लही
कौशिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौन परै कही ॥ ३९

दो० वामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीश ॥
दिये दिव्य आसन सबहि सब सन लही अशीश ॥ ३२६

बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा ॥ जानि ईश सम भाव न दूजा ॥
कीन्ह जोरि कर विनय बड़ाई ॥ कहि निज भाग्य विभव बहुताई ॥
पूजे भूपति सकल बराती ॥ समधी सम सादर सब भांती ॥
आसन उचित दये सब काहू ॥ कहो कहा सुख एक उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी ॥ दान मान विनती वर बानी ॥
विधि हरि हर दिशिपति दिनराऊ ॥ जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ ॥
कपट विप्र वर भेष बनाये ॥ कौतुक देखहिं अति सचु पाये ॥
पूजे जनक देव सम जाने ॥ दिये सुआसन बिन पहिचाने ॥

छं० पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई
आनन्द कन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनदमई
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दिये
अवलोकि सरल सुभाव प्रभु को विबुध मन प्रमुदित भये ४०

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र छवि लोचन चारु चकोर ॥
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर ॥ ३२७

समय विलोकि वसिष्ठ बुलाये । सादर सतानंद मुनि आये ।।
वेगि कुंअरि अब आनहु जाई । चले मुदित मन आयसु पाई ।।
रानी सुनि उपरोहित बानी ।। प्रमुदित सखिन समेत सयानी ।।
विप्र वधू कुल वृद्ध बुलाई ।। करि कुलरीति सुमंगल गाई ।।
नारि वेष जे सुर वर वामा ।। सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा ।।
तिनहि देखि सुख पावहिं नारी । विन पहिचान प्राण ते प्यारी ।।
वार वार सनमानहिं रानी ।। उमा रमा शारद सम जानी ।।
सीय संवारि समाज बनाई ।। मुदित मण्डपहि चली लिवाई ।।

छं॰ चलि लाइ सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुंजर गामिनी ।।
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहि काम कोकिल लाजहीं
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति वर वाजहीं ४१

दो॰ सोहत वनिता वृंद महं सहज सुहावनि सीय ।।
छवि ललना गण मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय ३२

सिय सुन्दरता वरणि न जाई । लघु मति बहुत मनोहरताई ।।
आवत देखि वरातिन सीता ।। रूप राशि सब भांति पुनीता ।।
सबहि मनहि मन कीन्ह प्रणामा । देखि राम भये पूरण कामा ।।
हरषे दशरथ सुतन समेता ।। कहि न जाइ उर आनन्द जेता ।।
सुर प्रणाम करि वर्षहि फूला ।। सुनि अशीश धुनि मंगल मूला ।।
गान निशान कुलाहल भारी ।। प्रेम प्रमोद मगन नर नारी ।।
इहि विधि सीय मंडपहि आई । प्रमुदित शान्ति पढहि मुनिराई ।।
तेहि अवसर करि विधि व्यवहारू । दुहु कुल गुरु सब कीन्ह अचारू ।।

छं॰ आचार करि गुरु गौरि गणपति मुदित विप्र पुजावहीं
सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं अशीश अति सुख पावहीं
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन में चहैं

भरे कनक कोपर कलस सो सब कर लिये परचारक रहे ॥
कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये ॥
इहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दिये ॥
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ॥
सियराम अवलोकन परस्पर प्रेम काहु न लखि परै ॥

दो॰ होमसमय तनु धरि अनल अतिहित आहुति लेहि ।
विप्रभेष धरि वेदसब कहि विवाह विधि देह ॥

जनक पाट महिषी जग जानी । सिया मातु किमि जाय बखानी ॥
सुयश सुकृत सुख सुन्दरताई । सब समेटि विधि रची बनाई ॥
समय जानि मुनि वरन बुलाई । सुनत सुआसिनि सादर ल्याई ॥
जनक बाम दिशि सोह सुनयना । हिमगिरि संग बनी जनु मयना ॥
कनक कलश मणि कोपर रूरे । शुचि सुगन्ध मंगल जल पूरे ।


जनकपुर में श्रीरामचन्द्रजी का श्रीजानकीजी के साथ विवाह

निज कर मुदित राउ औ रानी। धरे राम के आगे आनी॥
पढ़हि बेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी॥
बर विलोकि दम्पति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे॥

छं० लगे पखारन पाय पंकज प्रेम तनु पुलकावली॥
नभ नगर गान निशान जय धुनि उमगि जनु चहुँदिशि चली
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहीं॥ ४४
जे सुकृति सुमिरत विमलता मन सकल कलि मल भाजहीं
जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातक मई
मकरंद जिनको शम्भु सिर शुचिता अवधि सुरवरनई
करि मधुप मुनि मन योगि जन जे सेइ अभिमत गति लहैं
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं ४५
बर कुँवर करतल जोरि शाखो चार दोउ कुल गुरु करें
भयो पाणिग्रहण विलोकि विधि सुर मनुज मुनि आनँद भरें
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलकि तनु हुलसे हिये
करि लोक बेद विधान कन्या दान न्रप भूषण दिये
हिमवंत जिमि गिरिजा महेशहि हरिहि श्रीसागर दई
तिमि जनक रामहि सिय समर्पी विश्व कल कीरति नई
इक ठौर करि जोरी सुभग पुनि गौरि मूरति सांवरी
करि होम विधिवत गांठि जोरी होन लागी भांवरी॥ ४७

दो० जय धुनि बन्दी बेद धुनि मंगल गान निशान॥
सुनि हरषहि बरषहि सुमन सुर तरु सुमन सुजान ३३०

कुँवरि कुँवरि कल भांवर देहीं॥ नयन लाभ सब सादर लेहीं॥
जाइ न वरनि मनोहर जोरी॥ जो उपिमा कछु कहियसो थोरी॥
रामसीय सुन्दर परिछाहीं॥ जगमगाहि मणि खंभन माहीं॥
मनहु मदन रति धरि बहु रूपा॥ देखहि राम विवाहु अनूपा॥

दरश लालसा सकुच न थोरी	प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भये मगन सब देखन हारे ॥	जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी ॥	नेग सहित सब रीति निबेरी ॥
राम सीय सिर सिंदुर देही ॥	शोभा कहि न जात बिधि हीके
अरुण पराग जलज भरि नीके	शशिहि भूष अहि लोभ अमीके
बहुरि वसिष्ठ दीन्ह अनुसासन	वर दुलहिन बैठे यक आसन ॥

छं० बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ॥
तन पुलकि पुनि २ देखि अपने सुकृत सुर तरु फल नये
भरि भुवन रहा उछाह राम बिवाह भा सबही कहा ॥
केहि भांति बरणि सिरात रसना एक सुख मंगल महा ४८
तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साजि संवारि के ॥
मांडवी श्रुतिकीर्ति उर्म्मिला कुंवरि लई हंकारि के ॥
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभा मई
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याह नृप भरतहि दई ॥ ४९
जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानिके
सो जनक दीन्ही ब्याहि लषणहि सकल विधि सनमानिके
जेहि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुण आगरी
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ॥ ॥ ५०
अनुरूप वर दुलहिन परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुर गण बर्षहीं ॥
सुन्दरी सुन्दर बरण सब एक मंडप राजहीं ॥ ॥
जनु जीउ उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं ५१

दो० मुदित अवधि पति सकल सुत बधुन समेत निहारि
जनु पाये महिपाल मणि क्रियन सहित फल चारि ३३१

जस रघुबीर ब्याह विधि बरणी	सकल कुंवर ब्याहे तेहि करणी ॥

कहि न जाइ कछु दायज भूरी ॥	रहा कनक मणि मंडप पूरी ॥
कम्बल बसन विचित्र पटोरे ॥	भांति २ बहु मोलन थोरे ॥
गजरज तुरंग दास अरु दासी ॥	धेनु अलंकृत कामदुहासी ॥
वस्तु अनेक करिये किमि लेखा ॥	कहि न जाइ जानहि जिन देखा ॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने ॥	लीन्ह अवधपति सब सुख माने ॥
दीन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा ॥	उवरा जो जनवासहि आवा ॥
तव कर जोरि जनक मृदु वानी ॥	बोले सब बरात सनमानी ॥

छं० सनमान सकल बरात सादर दान विनय बड़ाय कै ॥
पर मुदित महा मुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ाय कै ॥
सिर नाइ देव मनाय सब सन कहत कर सम्पुट किये ॥
सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजुलि दिये ५२
कर जोरि जनक बहोरि बन्धु समेत कोशल राय सों ॥
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभाय सों ॥
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सब विधि भये ॥
यह राज साज समेत सेवक जानिबो बिनु गथ लये ॥ ५३
यह दारिका परचारिका करि पालिबो करुणा मयी ॥
अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठो दयी ॥
पुनि भानुकुल भूषण सकल सनमान विधि समधी किये
कहि जात नहिं विनती परस्पर प्रेम परि पूरण हिये ॥ ५४
वृंदारिका गण सुमन बरषहिं राउ जनवासहि चले ॥
दुंदुभी धुनि वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥ ॥
तब सखिन मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइ कै
दुलह दुलहिन सहित सुन्दरि चली कुहबर ल्याइ कै ५५

दो० पुनि २ रामहि चितव सिय सकुचत मन सकुचै न
हरित मनोहर मीन छवि प्रेम पियासे नैन ॥ ॥ ॥ ३२६

श्याम शरीर सुभाय सुहावन।। शोभा कोटि मनोज लजावन
पावक जुत पद कमल सुहाये।। मुनि मन मधुप रहत जहं छाये।।
प्रीति पुनीत मनोहर धोती।। हरत बाल रवि दामिन जोती।।
कल किंकिणि कटि सूत्र मनोहर बाहु विशाल विभूषण सोहर।।
पीत जनेउ महा छवि देई।।। कर मुद्रिका चोरि चित लेई।।
सोहत ब्याह साज सब साजे।। उर आयत सब भूषण राजे।।
पीत उपरना कांखा सोती।। दुहु आचरन लगे मणि मोती
नैयन कमल कल कुंडल काना बदन सकल सौंदर्य निधाना
सुन्दर भ्रकुटि मनोहर नासा।। भाल तिलक रुचि रुचिर निवास
सोहत मौर मनोहर माथे।।। मंगल मय मुकता मणि गाथे

छं० गाथे महा मणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं
पुनि नारि सुन्दर वर विलोकहिं निरखि छवि तृण तोरही
मणि वसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं
सुर सुमन वर्षहिं सूत मागध वन्दि सुयश सुनावहीं ५६
कुहबरहिं आने कुंवर कुंवरि सुआसिनिन्ह सुख पाइके
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन मंगल गाइके।।
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सादर कहै
रनिवास हास विलास सरवस जन्म को फल सब लहै ५७
निज पाणि मणि महं देखि प्रति मूरति स्वरूप निधान की
चालति न भुजवल्ली विलोकनि विरहवस भइ जानकी
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली।
वर कुंवरि सुन्दर सकल सखिन लिवाइ जनवासहिं चली ५८
तेहि समय सुनिय अशीश जहं तहं नचार नभ आनंद महा
चिरजीवहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा।।
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव विलोकि प्रभु दुन्दुभी हनी।।

चले हरषि बरष प्रसून निज २ लोक जय २ भनी ॥ ५६

सहित बधूटिन कुंवर सब तब आये पितु पास ॥
शोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास ॥ ३३३

पुनि जेवनार भयेउ बहु भांती ॥ पठये जनक बुलाय बराती ॥
परत पावड़े बसन अनूपा ॥ सुतन समेत गवन कियु भूपा ॥
सादर सबके पांव पखारे ॥ यथा योग पीढ़न बैठारे
धोये जनक अवधि पति चरणा ॥ शील सनेह जाय नहिं बरणा ॥
बहुरि राम पद पंकज धोये ॥ जे हर हृदय कमल महं गोये ॥
तीनो भाइ राम सम जानी ॥ धोये चरण जनक निज पानी ॥
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हे ॥ बोलि सूप कारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे ॥ कनक कील मणि पान सँवारे

दो० सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर स्वादु पुनीत ॥
छन महं सबके परसि गे चतुर सुआर बिनीत ॥ ३३४

पंच कौर करि जेवन लागे ॥ गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भांति अनेक परे पकवाना ॥ सुधा सरस नहिं जाय बखाना
परसन लगे सुआर सुजाना ॥ व्यंजन बिबिध नाम को जाना ॥
चारि भांति भोजन बिधि गाई ॥ एक एक बिधि बरणि न जाई ॥
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती ॥ एक २ रस अगणित भांती ॥
जेवत देहिं मधुर धुनि गारी ॥ लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावन गारि बिराजा ॥ हंसत राउ सुनि सहित समाजा ॥
नित नूतन मंगल पुर माहीं ॥ निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं ॥

दो० देइ पान पूजे जनक दशरथ सहित समाज ॥
जनवासे गवने मुदित सकल भूप सिरताज ॥

एहि बिधि सबही भोजन कीन्हा ॥ आदर सहित आचमन लीन्हा ॥
बड़े भोर भूपति मणि जागे ॥ जाचक गुनि गण गावन लागे ॥
देखि कुंवर बर बधुन समेता ॥ किमि कहि जात मोद मन जेता ॥
प्रात क्रिया करि गे गुरु पाहीं ॥ महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥

तुम्हरी कृपा सुनिये मुनि राजा । भयेउ आजु मम पूरण काजा
अब सब विप्र बुलाइ गुसाईं । देहु धेनु सब भाँति बनाई ॥ ॥
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनि वृन्द बुलाई ॥

दो० वामदेव अरु देव ऋषि बालमीक जाबालि ॥
आये मुनि बर निकर तब कौशिकादि तपसालि ३३६

दंड प्रणाम सबहिं नृप कीन्हा । पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा ॥
चारि लक्ष वर धेनु मँगाई ॥ काम सुरभि सम शील सुहाई
सब विधि सकल अलंकृत कीन्ही । मुदित महीप ऋषिन कहँ दीन्ही
करत विनय बहु विधि नरनाहू । लहेउ आजु जग जीवन लाहू ॥
पाइ अशीश महीश अनन्दा । लिये बोलि पुनि याचक वृन्दा ॥
कनक बसन मणि हय गज स्यंदन । दिये बूझि रुचि रवि कुल नंदन
चले पढ़त गावत गुणगाथा । जय जय दिन कर कुल नाथा ॥
इहि विधि राम विवाह उछाहू । सकै न बरणि सहस मुख जाहू

दो० बार बार कौशिक चरण शीश नाइ कह राउ ॥
यह सब सुख मुनि राज तव कृपा कटाक्ष प्रभाउ ३३७

जनक सनेह शील करतूती ॥ नृप सब भाँति सराह विभूती ॥
दिन उठि बिदा अवधिपति माँगा । राखहिं जनक सहित अनुरागा
नित नूतन आदर अधिकाई । दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई
नित नव नगर अनंद उछाहू । दसरथ गवन सोहाय न काहू
बहुत दिवस बीते यहि भाँती ॥ जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥
कौशिक सतानंद सब जाई ॥ कहो विदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दसरथ कहँ आयसु देहू । यदपि छाड़ि न सकहु सनेहू ॥
भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये । कहि जय जीव शीश तिन नाये ॥

दो० अवध नाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव ॥
भये प्रेम बस सचिव सुनि विप्र सभासद राव ॥ ॥ ३३८

पुरवासी सुनि चली बराता॥ पूछत विकल परस्पर बाता॥
सत्य गवन सुनि सब बिलखाने मनहु साँझ सरसिज सकुचाने
जहं जहं आवत बसे बराती॥ तहं तहं सीध चलावहु भांती
विविधि भांति सेवा पकवाना॥ भोजन साज न जाय बखाना॥
भरि भरि वसन अपार कहारा पठये जनक अनेक सुआरा॥
तुरंग लाख रथ सहस पचीसा सकल संवारे नख अरु शीशा
मत्त सहस दश सिंधुर साजे॥ जिनहि देखि दिशि कुंजर लाजे
कनक वसन मणि भरि २ याना महिषी धेनु वस्तु विधि नाना

दो॰ दायज अमित न सकिय कहि दीन विदेह बहोरि
जो अवलोकत लोक पति लोक सम्पदा थोरि॥ ३३८

सब समाज यहि भांति बनाई जनक अवध पुर दीन पठाई॥
चलिहिं बरात सुनहि सब रानी विकल मीन गण जनु लघु पानी
पुनि २ सीय गोद कर लेई॥ देइ अशीश सिखावन देही॥
होइहहु संतत पियहि पियारी चिर अहिवात अशीश हमारी॥
सासु ससुर गुरु सेवा करहू॥ पति रुख लखि आयसु अनुसरहू
अति सनेह वस सखी सयानी नारि धर्म सिखवहि मृदु बानी
सादर सकल कुंवर समझाई रानिन बार २ उर लाई॥ ॥ ग॥
बहुरि बहुरि भेटहि महतारी कहहिं विरंचि रची कत नारी॥

दो॰ तेहि अवसर भाइन सहित राम भानु कुलकेतु
चले जनक मंदिर मुदित विदा करावन हेतु॥

चारिउ भाइ सुभाय सुहाये॥ नगर नारि नर देखन धाये॥
कोउ कह चलन चहत हहिं आजू कीन्ह विदेह विदा कर साजू॥
लेहु नयन भरि रूप निहारी॥ प्रिय पाहुन भूप सुत चारी॥ ॥
को जाने केहि सुकृत सयानी नयन अतिथि कीन्हे विधि आनी
मरण शील जिमि पाव पियूषा सुर तरु लहै जन्म कर भूखा॥

पाव नारकी हरि पद जैसे ॥ इनकर दरशन हम कहं तैसे ॥
निरखि राम सोभा उर धरहू ॥ निज मन फणि मूरति मणि करहू ॥
यहविधि सवहिं नयन फल देता ॥ गये कुंवर सव राज निकेता ॥

दो० रूप सिंधु सव बन्धु लखि हरषि उठी रनिवासु
करहिं निछावर आरती महा मुदित मन सासु ॥ ३४१

देखि राम छवि अति अनुरागी ॥ प्रेम विवस पुनि पुनि पद लागी ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई ॥ सहज सनेह वरणि किमि जाई ॥
भाइन सहित उवटि अन्हवाये ॥ छरस असन अति हेतु जिवाये ॥
वोले राम सुअवसर जानी ॥ शील सनेह सकुच मय वानी ॥
राउ अवध पुर चहत सिधारे ॥ विदा होन हित हमहिं पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू ॥ वालक जानि करव नित नेहू ॥
सुनत वचन विलखेउ रनिवासू ॥ वोलि न सकहिं प्रेम वस सासू ॥
हृदय लगाय कुंवरि सव लीन्ही ॥ पतिन सहित विनती अति कीन्ही ॥

छं० करि विनय सिय रामहिं समर्पी जोर कर पुनि २ कहै
वलिजाउं तात सुजान तुमकहं विदित गति सवकी अहै
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्राण प्रिय सिय जानिवी
तुलसी सुशील सनेह लखि निज किंकरी करि मानिवी ६०
तुम परि पूरण काम ज्ञान शिरोमणि भाय प्रिय
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुणाय तन ३०

अस कहि रही चरण गहि रानी ॥ प्रेम पंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेह सानी वर वानी ॥ बहु विधि राम सासु सनमानी ॥
राम विदा मांगत करजोरी ॥ कीन्ह प्रणाम वहोरि वहोरी ॥
पाइ अशीश वहुरि शिरनाई ॥ भाइन सहित चले रघुराई ॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी ॥ भई सनेह सिथिल सव रानी ॥
पुनि धीरज धरि कुवरि हंकारी ॥ वार वार भेटहिं महतारी ॥

पहुंचावहि फिरि मिलहि बहोरी	बढी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनि २ मिलति सखिन बिलगाई	बाल वत्स जनु धेनु लवाई ॥

दो० प्रेम बिवस नर नारि सब सखिन सहित रनिवास
मानहु कीन्ह बिदेह पुर करुणा बिरह निवास ३४२

शुक सारिका जानकी जिआये	कनक पिञ्जरन राखि पढाये ॥
व्याकुल कहहि कहां बैदेही	सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये बिकल खग मृग इहि भांती	मनुज दशा कैसे कहि जाती
बन्धु समेत जनक तब आये	प्रेम उमगि लोचन जल छाये
सीय बिलोकि धीरता भागी	रहे कहावत परम बिरागी
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी	मिटी महा मर्य्याद ज्ञान की
समुझावत सब सचिव सयाने	कीन्ह सुभाव न अवसर जाने
बारहि बार सुता उर लाई ॥	सजि सुन्दरि पालकी मगाई

दो० प्रेम बिवस परिवार सब जानि सु लगन नरेश
कुंअरि चढाइ पालकी सुमिरे सिद्धि गणेश ॥ ३४३

बहु बिधि भूप सुता समुझाई	नारि धर्म कुल रीति सिखाई
दासी दास दिये बहु तेरे ॥	शुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत व्याकुल पुर वासी	होइ सगुण शुभ मंगल राशी
भूसुर सचिव समेत समाजा	संग चले पहुंचावन राजा ॥
गज रथ बाज बरातिन साजे ॥	सुनि गह गहे बाजने बाजे ॥
दसरथ विप्र बोलि सब लीन्हे	दान मान परिपूरण कीन्हे ॥
चरण सरोज धूरि धरि शीशा	मुदित महीपति पाइ असीशा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना	मंगल मूल सगुण भे नाना

दो० सुर प्रसून बरषहि हरषि करहि अप्सरा गान
चले अवध पति अवधपुर मुदित बजाइ निशान ३४४

न्प करी विनय महाजन फेरे	सादर सकल मागने टेरे ॥

भूषण वसन वाजि गज दीन्हे
प्रेम पोषि ठाढे सब कीन्हे ॥
बार बार विरदावलि भाषी ॥
फिरे सकल रामहिं उर राखी
बहुरि कोशल पति कहहीं ॥
जनक प्रेम वस फिरन चहहीं
पुनि कह भूपति वचन सुहाये
फिरिय महीप दूरि बड़ि आये ॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढे ॥
प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढे ॥
तब विदेह बोले कर जोरी ॥
वचन सनेह सुधा जनु बोरी ॥
करो कवन विधि विनय सुहाई
महाराज मोहि दीन्ह बड़ाई ॥

दो० कोशलपति समधी सजन सनमाने सब भांति
मिलन परस्पर विनय करि प्रीति न हृदय समाति ३४५

मुनि मण्डली जनक शिर नावा
आशिर वाद सबहि सन पावा ॥
सादर पुनि भेटे जामाता ॥
रूप शील गुण निधि सब भ्राता
जोरि पंकरुह पाणि सोहाये
बोले वचन प्रेम जनु जाये ॥
राम करौं केहि भांति प्रशंसा ॥
मुनि महेश मन मानस हंसा ॥
करहिं योग योगी जेहि लागी ॥
कोह मोह ममता मद त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलख अविनासी
चिदानंद निर्गुण गुण राशी ॥
मन समेत जेहि जान न बानी
तरकि न सकहिं सकल अनुमानी
महिमा निगम नेति करि कहहीं
जो तिहु काल एक रस रहहीं ॥

दो० नयन विषय मोकहु भयउ सो समस्त सुखमूल
सबहिं सुलभ जग जीव कहु भये ईश अनुकूल ३४६

सबहि भांत मोहि दीन्ह बड़ाई
निज जन जानि लीन्ह अपनाई
होहि सहस दश शारद शेषा
करहिं कल्प कोटिक भरि लेखा
मोर भाग्य राउर गुण गाथा
कहि न सिराहि सुनिय रघुनाथ
मैं कछु कहौं एक बल मोरे ॥
तुमरीझउ सनेह सुठि थोरे ॥
बार बार मांगौ कर जोरे ॥ ॥
मन परि हरेउ चरण जनि भोरे ॥
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे
पूरण काम राम परितोषे ॥

करि वर विनय ससुर सनमाने । पितु कौशिक वसिष्ठ सम जाने

विनती वहुरि भरत सन कीन्ही । मिलि सुप्रेम पुनि आसिष दीन्ही

दो० मिले लषण रिपु सूदनहि दीन्ह अशीश महीश ।
भये परस्पर प्रेम बस फिरि फिरि नावहिं शीश ॥ ३५७

वार वार करि विनय बड़ाई ॥ रघुपति चले संग सब भाई

जनक गहे कौशिक पद जाई । चरण रेनु शिर नयनन लाई

जो सुख सुयश लोकपति चहहीं । करत मनोरथ सकुचत अहहीं

सुन मुनीश सब दरशन तोरे ॥ अगम न कछु प्रतीति मन मोरे

सो सुख सुयश सुलभ मोहिं स्वामी । सब सिधि तव दर्शन अनुगामी

कीन्ह विनय पुनि पुनि शिर नाई ॥ फिरे महीपति आशिष पाई ॥

चली वरात निशान बजाई ॥ मुदित छोट बड़ सब समुदाई

रामहिं निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयन फल होहिं सुखारी

दो० बीच २ बर वास करि मग लोगन सुख देत ॥ ॥
अवधि समीप पुनीत दिन पहुंची आइ जनेत ॥ ३५८

हने निशान पणव बहु बाजे ॥ भेरि शंख धुनि हय गय गाजे

झांझ मृदंग डिमि डिमी सुहाई । सरस राग बाजे सहनाई ॥

पुरजन आवत अकनि वराता । मुदित सकल पुलकावलि गाता

निज २ सुन्दर सदन संवारे ॥ हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥ ॥

गली सकल अरगजा सिंचाई । जहँ तहँ चौके चारु पुराई ॥ ॥

बना बजारन जात बखाना ॥ तोरण केतु पताक विताना ॥

सुफल पुंग फल कदलि रसाला । रोपे वकुल कदम्ब तमाला ॥

लगे सुभग तरु परसत धरणी । मणि मय आलवाल कीकरणी

दो० विविधि भांति मंगल सकल गृह २ रचे संवारि ॥
सुर ब्रह्मादि सिहाहि सब रघुवर पुरी निहारि ॥ ॥ ३५०

भूप भवन तेहि अवसर सोहा । रचना देखि मदन मन मोहा

मंगल शकुल मनोहर ताई। रिद्धि सिद्धि सुख संपदा सुहाई॥
जनु उछाह सब सहज सुहाये। तनु धरि २ दशरथ गृह आये॥
देखन हेत राम बैदेही॥ कहहु लालसा होइ न केही॥
यूथ २ मिलि चली सुआसिन। निज छवि निदरहि मदन विलासिनि॥
सकल सुमंगल सजी आरती। गावहि जनु बहु भेष भारती॥
भूपति भवन कुलाहल होई। जाइ न बरणि समय सुख सोई॥
कौशल्यादि राम महतारी॥ प्रेम विवश तनु दशा विसारी॥

दो॰ दिये दान विप्रन विपुल पूजि गणेश पुरारि॥
प्रमुदित परम दलिद्र जनु पाइ पदारथ चारि॥ ३५०

प्रेम प्रमोद विवश सब माता। चलहि न चरण शिथिल सब गाता॥
राम दरश हित अति अनुरागी। परिछन साज सजन सब लागी॥
विविध विधान बाजने बाजे। मंगल मुदित सुमित्रा साजे॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला॥ पान पुंग फल मंगल मूला॥
अक्षत अंकुर रोचन लाजा। मंजुल मंजरि तुलसि विराजा॥
छुहे पुरट घट सहज सुहाये॥ मदन शकुनि जनु नीड़ बनाये॥
शकुन सुगंध न जाहि बखानी। मंगल सकल सजहि सब रानी॥
रची आरती विविध विधाना॥ मुदित करहि कल मंगल गाना॥

दो॰ कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन लिये मात॥
चली मुदित परिछन करन पुलक पल्लवित गात॥ ३५१

धूप धूम नभ मेचक भयऊ। सावन घन घुमंड जनु ठयेऊ॥
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं। मनहु बलाकि अवलि मनु करषहिं॥
मंजुल मणिमय बंदनवारा॥ मनहु पाक रिपु चाप सवारा॥
प्रगटहि दुरहि अटन पर भामिन। चारु चपल जनु दमकहि दामिनि॥
दुंदभी धुनि घन गरजहि घोरा॥ याचक चातक दादुर मोरा॥
सुचि सुगंध वहु बरषहि वारी॥ सुखी सकल शशि पुरनर नारी॥

समय जानि गुरु आयसु दीन्हा	पुर प्रवेश रघुकुल मणि कीन्हा
सुमिरि शम्भु गिरजा गण राजा॥	मुदित महीपति सहित समाजा

दो० होहि शकुन बरषहि सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ॥॥
विबिधि वधू नाचहि मुदित मंजुल मंगल गाइ॥ ३५२

मागध सूत वन्दि नट नागर॥	गावहि यश तिहु लोक उजागर
जे धुनि विमल वेद वर वानी	दशदिशि सुनिये सुमंगल सानी
विपुल बाजने बाजन लागे	नभ सुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती बरणि न जाही॥	महा मुदित मन सुख न समाही
पुर वासिन तव राउ जुहारे॥॥	देखत रामहि भये सुखारे॥॥
करहि निछावरि मणि गण चीरा	वारि बिलोचन पुलक शरीरा॥
आरति करहिं मुदित नर नारी	हरषहि निरखि कुंवर वर चारी
शिविका सुभग ओहार उघारी	देखि दुलहिनिन्ह होहि सुखारी

दो० एहि विधि सबही देत सुख आये राज दुआर॥॥
मुदित मातु परछन करहि वधुन समेत कुमार ३५३

करहि आरती वारहि वारा॥॥	प्रेम प्रमोद कहै को पारा॥
भूषण मणि पट नाना जाती॥	करहिं निछावरि अगणित भांती
वधुन समेत देखि सुत चारी॥	परमानन्द मगन महतारी॥॥
पुनि २ सीय राम छवि देखी॥	मुदित सुफल जगजीवन लेखी
सखी सीय मुख पुनि २ चाही॥	गान करहिं निज सुकृत सराही
बरषहिं सुमन क्षणहि क्षण देवा	नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा
देखि मनोहर चारि उ जोरी॥	शारद उपमा सकल ढढोरी
देत न बनहि निपट लघु लागी	इक टक रही रूप अनुरागी॥

दो० निगम नीत कुल रीति करि अरघ पावडे देत॥
वधुन सहित सुत परिछि सब चलीं लिवाइ निकेत ३५४

चारि सिंहासन सहज सुहाये॥	जनु मनोज निज हाथ बनाये॥

तिन पर कुंवरि कुंवर बैठारे ॥ सादर पांय पुनीत परवारे ॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि ॥ पूजे वर दुलहिन मंगल निधि ॥
वारहिं वार आरती करहीं ॥ व्यंजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥
वस्तु अनेक निछावरि होहीं ॥ भरी प्रमोद मातु सब सोहीं ॥
पावा परम तत्तु जनु योगी ॥ अमृत लह्यउ जनु संतत रोगी ॥
जन्म रंक जनु पारस पावा ॥ अंधहि लोचन लाभ सुहावा ॥
मूक वदन जनु शारद छाई ॥ मानहु समर सूर जय पाई ॥

दो० इह सुख ते शत कोटि गुण पावहिं मातु अनंद ।
भाइन सहित विवाह घर आये रघु कुल चन्द ॥ ३५५ ॥
लोक रीति जननी करहिं वर दुलहिनि सकुचाहिं ।
मोद विनोद विलोकि वड राम मनहिं मुसकाहिं ॥ ३५६ ॥

देव पितर पूजे विधि नीकी ॥ पूजी सकल वासना जीकी ॥
सवहिं वन्दि मांगहिं वर दाना ॥ भाइन सहित राम कल्याना ॥
अंतर हित सुर आशिष देहीं ॥ मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥
भूपति वोलि वराति लीन्हे ॥ यान वसन मणि भूषण दीन्हे ॥
आयसु पाइ राखि उर रामहिं ॥ मुदित गये सब निज २ धामहिं ॥
पुर नर नारि सकल पहिराये ॥ घर घर वाजहिं अनंद वधाये ॥
याचक जन याचहिं जोइ जोई ॥ प्रमुदित राउ देइ सोइ सोई ॥
सेवक सकल वजनिया नाना ॥ पूरण किये दान सनमाना ॥

दो० देहिं अशीश जुहारि सब गावहिं गुण गण गाथ ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह गवन कीन्ह नरनाथ ॥ ३५७ ॥

जो वसिष्ठ अनुशासन दीन्हा ॥ लोक वेद विधि सादर कीन्हा ॥
भूसुर भीर देखि सब रानी ॥ सादर उठी भाग्य वड जानी ॥
पाय पखारि सकल अन्हवाये ॥ पूजि भली विधि भूप जिवाये ॥
आदर दान प्रेम परि तोषे ॥ देत अशीश चले मन तोषे ॥

बहुविधि कीन्ह गाधिसुत पूजा	नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी ॥	रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी
भीतर भवन दीन्ह बर बासू ॥	मन जुगवत रह नृपति रणवासू
पूजे गुरु पद कमल बहोरी ॥	कीन्ह विनय मन प्रीति न थोरी

दो० बन्धुन समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीश ।
पुनि पुनि बन्दत गुरु चरण देत अशीश मुनीश ॥ ३५८

विनय कीन्ह उर अति अनुरागे	सुत सम्पदा राखि सब आगे ॥
नेग मांगि मुनि नायक लीन्हा	आशिर वाद बहुत विधि दीन्हा
उर धरि रामहिं सीय समेता ॥	हरषि कीन्ह गुरु गमन निकेता
विप्र वधू कुल वृद्ध बुलाई ॥	चीर चारु भूषण पहिराई ॥
बहुरि बुलाइ सुआसनि लीन्ही	रुचि बिचारि पहिरावन दीन्ही
नेगी नेग योग सब लेही ॥	रुचि अनुरूप भूप मणि देही ॥
प्रिया पाहुने पूज्य जे जाने ॥	भूपति भली भांति सनमाने ॥
देव देखि रघुबीर विवाहू ॥	बरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥

दो० चले निशान बजाइ सुर निज २ पुर सुख पाइ ॥
कहत परस्पर रामयश हर्ष न हृदय समाइ ॥ ३५९

सब बिधि सबहिं मुदित नरनाहू	रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहं रनिवास तहां पगु धारे	सहित बधूटिन कुंवर निहारे
लिये गोद करि मोद समेता ॥	को कहि सकै भयउ सुख जेता
वधू सप्रेम गोद बैठारी ॥ ॥	बार बार हिय हर्ष दुलारी ।
देखि समाज मुदित रनिवासू ॥	सब के उर आनंद विलासू
कहेउ भूप जिमि भयउ बिवाहू	सुनि सुनि हर्ष होत सब काहू
जनक राज गुण शील बड़ाई	प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥
बहु विधि भूप भाट जिमि बरणी	रानी सब प्रमुदित सुनि करणी

दो० सुतन समेत नहाइ नृप बोलि लिये गुरु ज्ञाति

भोजन किये अनेक विधि धरी पांच गइ राति ३६०

मंगल गान करहिं बर भामिनि । भई सुख मूल मनोहर यामिनि
अंचै पान सब काहल पाये ।। स्रग सुगन्ध भूषित छवि छाये
रामहिं देखि रजायसु पाई ।। निज २ भवन चले शिर नाई ।।
प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई ।। समय समाज मनोहरताई ।।
कहि न सकहिं श्रुति शारद शेषू । वेद विरंच महेस गणेशू ।।
सो मैं कहौं कवन विधि बरणी । भूमि नाग शिर धरै कि धरणी ।।
नृप सब भांति सबहिं सनमानी । कहि मृदु बचन बुलाईं रानी ।।
बधू लरिकिनी पर घर आईं ।। राखहु नयन पलक की नाईं

दो० लरिका श्रमित उनींद बस शयन करावहु जाइ
अस कहि गये विश्राम गृह रामचरण चितलाइ ३६१

भूप बचन सुनि सहज सुहाये । जरित कनक मणि पलंग डसाये
सुभग सुरभि पय फेनु समाना । कोमल कलित सुपेती नाना
उप बरहन बर बरणि न जाहीं । स्रग सुगंध मणि मंदिर माहीं
रतन दीप सुठि चारु चंदोवा ।। कहत न बनै जान जेहि जोवा ।।
सेज रुचिर रचि राम उठाये ।। प्रेम समेत पलंग पौढ़ाये ।।
आज्ञा पुनि २ भाइन दीन्ही ।। निज २ सेज शयन तिन कीन्ही
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम बचन सब माता
मारग जात भयावनि भारी ।। केहि विधि तात ताड़का मारी

दो० घोर निशाचर विकट भट समर गनै नहिं काहु
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु ३६२

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारे । ईश अनेक करवरे टारे ।।
मख रखवारी करि दुहुं भाईं । गुरु प्रसाद सब विद्या पाई
मुनि तिय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ।।
कमठ पीठ पवि कूट कठोरा ।। नृप समाज महं शिव धनु तोरा

विश्व विजय यश जानकि पाई । आये भवन ब्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे ॥ केवल कौशिक कृपा सुधारे ॥
आजु सुफल जग जन्म हमारे । देखि तात विधु वदन तुम्हारे ॥
जे दिन गये तुमहिं बिनु देखे । ते बिरंचि जनि पारहि लेखे ॥

दो० राम प्रतोषी मातु सब कहि विनीत वर बयन ।
सुमिरि शंभु गुरु विप्र पद किये नींद बस नयन ॥ ३६३

नींदहु वदन सोहि सुठि लोना । मनहु सांझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहिं जागरण नारी । देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरी विराजित राजत रजनी ॥ रानी कहहिं विलोकहु सजनी ॥
सुन्दरि वधु सासु लै सोई ॥ फणिपति जनु शिर मणि उर गोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ॥ अरुण चूड़ बर बोलन लागे ॥
वन्दी मागध गुण गण गाये । पुरजन द्वार जुहारन आये ॥
वन्दी विप्र सुर गुर पितु माता । पाइ अशीश मुदित सब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर वदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दो० कीन्ह शौच सब सहज शुचि सरित पुनीत नहाइ ।
प्रात क्रिया करि तात पहँ आये चारिउ भाइ ॥ ३६४

भूप विलोकि लिये उर लाई ॥ बैठे हरषि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी ॥ लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये । सुभग सुआसन मुनि बैठाये ॥
सुतन समेत पूजि पद लागे ॥ निरखि राम दोउ उर अनुरागे ॥
कहहिं वसिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनहि महीप सहित रनिवासा ॥
मुनि मन अगम गाधि सुत करणी । मुदित वशिष्ठ विपुल विधि वरणी ॥
बोले वाम देव सब साची ॥ कीरति कलित लोक तिहु माची ॥
सुनि आनंद भये सब काहू ॥ राम लषण उर अधिक उछाहू ॥

दो० मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस इहि भांति ।

उमगी अवध अनंद भरि अधिक २ अधिकात ३६५

सुदिन साधि कर कंकण छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे॥
नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं। अवध जन्म याचहि विधि पाहीं॥
विश्वामित्र चलन नित चहहीं। राम सप्रेम विनय वस रहहीं॥
दिन २ सद्गुण भूपति भाऊ। देखि सराह महा मुनि राऊ॥
मांगत विदा राउ अनुरागे॥ सुतन समेत ठाढ भये आगे॥
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी॥ मैं सेवक समेत सुत चारी॥
करब सदा लरिकन पर छोहू। दरशन देत रहव मुनि मोहू॥
अस कहि राउ सहित सुत रानी। परेउ चरण मुख आव न बानी॥
दीन्ह अशीश विप्र बहु भांती। चले न प्रीति रीति कहि जाती॥
राम सप्रेम संग सब भाई॥ आयसु पाइ फिरे पहुंचाई॥

दो॰ राम रूप भूपति भगति व्याह उछाह अनंद॥
जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचन्द ३६६

वामदेव रघुकुल गुरु ग्यानी। बहुरि गाधि सुत कथा बखानी॥
सुनि मुनि सुयश मनहिं मन राऊ। वरणत आपन पुण्य प्रभाऊ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ॥ सुतन समेत नृपति गृह गयऊ॥
जहं तहं राम व्याह यश गावा। सुयश पुनीत लोक तिहुं छावा॥
आये व्याहि राम घर जबते॥ बसै अनंद अवध सब तब ते॥
प्रभु विवाह यश भयउ उछाहू। सकहिं न वरणि गिरा अहि नाहू॥
कवि कुल जीवन पावन जानी। राम सीय यश मंगल खानी॥
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करण पुनीत हेतु निज बानी॥

छं॰ निज गिरा पावन करण कारण राम यश तुलसी कह्यो।
रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कवने लह्यो॥
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं।
वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं॥ ६१

मुनि गाय कह्यौ गिरीश कन्या धन्य अधिकारी सही
नित प्रीति नूतन सुनत हरि गुण भक्ति अनुपम ते लही
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई
यह जानि तुलसी दास मन क्रम वचन हरि गुण गावई

दो॰ कठिन काल मल ग्रसित तनु साधन कछुक न होइ
यह विचारि विश्वास करि हरि सुमिरै बुधि सोइ॥

सो॰ मन हरि पद अनुराग करहु त्यागि नाना कपट॥
महा मोह निशि जाग सोवत वीते काल बहु॥॥
सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम सादर सुनहिं॥
तिन कहँ सदा उछाह मंगलाय तन रामयश

इति श्री राम चरित मानि से कल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य विज्ञान सन्तोष संपादनो नाम प्रथम सोपानः